17.2

भोजपुरी के सपूत

[पचीस गो भोजपुरी प्रेमी आ भोजपुरी साहित्यकार लोगन से संबंधित रचना के संग्रह]

रचनाकार

अक्षयवर दीक्षित

प्रकाशक

भोजपुरी विकास मण्डल

सीवान (बिहार)

पिन : 841226

भोजपुरी विकास मण्डल के चउथका फूल

लेखक : अक्षयवर दीक्षित

प्रस्तावना लेखक : श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

सगुन विचार लेखक : डा० शुकदेव सिंह

प्रकाशक : भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान (बिहार)

संस्करण : पहिलका १९९२

मूल्य : रु० ४१/- (एकतालीस)

मुद्रक : श्री शंकर मुद्रणालय, हाथीगली, वाराणसी

BHOJPURI KE SAPUT

Literatures related to 'Bhojpuri ke Saput'

Price Rs. 41/- (Forty-one)

समर्पण

गोस्वामी सदानन्दजी महाराज

पण्डित कृष्णाचार्य जी मिश्र

आचार्य महेन्द्र शास्त्री

हे त्रिदेव ! रउरा सभनी से बचपन में वरदान मिलल,
यथाशक्ति हम अपनवनी त जीवन में ई फूल खिलल,
एह आखिरी चरन में राउर फूल समर्पित रउरे के,
सूँघेवाला पाठक बोली गन्धहीन कि गन्ध भरल।

—अक्षयवर

प्रकाशक का ओर से

सुप्रसिद्ध भोजपुरी साहित्यकार श्री अक्षयवर दीक्षित के 'ई भोजपुरी के सपूत' भोजपुरी विकास मंडल के चउथका फूल पाठक का हाथ में देत हमरा बड़ा खुशी के अनुभव होता।

करीब चार दशक से सांगठनिक आ रचनात्मक दूनू तरह से भोजपुरी के सेवा में दीक्षितजी सक्रिय बानी। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्रवर समिति के सदस्य, अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन के उपाध्यक्ष आ भोजपुरी विकास-मण्डल के संस्थापक सचिव के रूप इहाँ के सांगठनिक सेवा के आ आधा दर्जन भोजपुरी के पुस्तक (लेखन आ सम्पादन) इहाँ के रचनात्मक सेवा के प्रमाण बा। एह पुस्तकन में इहाँ के कवि, कहानीकार आ निवन्धकार रूप के दर्शन होला।

अइसे त दीक्षितजी हिन्दी आ संस्कृतो में रचना करत रहीले। ई सब रचना पुस्तक रूप में आ पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित बा। बाकिर इहाँ के ढेर झुकाव भोजपुरी का ओर बा। अपना एह सेवा का बदौलत कई बेर स्थानीय सम्मान त पवलही बानी, शारदा संगीतालय गोरखपुर का ओर से आ अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन (चउथका देवघर अधिवेशन) का ओर से राहुल सांकृत्यायन सम्मान से सम्मानित हो चुकल बानी।

आशा बा कि दीक्षितजी के ई 'भोजपुरी के सपूत' पाठक लोग खातिर रुचिकर आ उपयोगी होई।

एह पुस्तक लेखन खातिर हम दीक्षितजी के बहुत-बहुत धन्यवाद दे तानी।

राजमंगल मिश्र, एम. एल. सी.
आ पूर्व सांसद
अध्यक्ष
भोजपुरी विकास मण्डल
सीवान

गंगा दशहरा
सम्वत् २०४९ वि०



लेखक

साथ में—

सहधर्मिणी श्रीमती फूलपती देवी

हमार हितैषी



स्व० बाबू राम प्रसाद अग्रवाल

आ



धर्मपत्नी श्रीमती गोकुल देवी
(स्वर्गीया)

हमार शुभचिन्तक



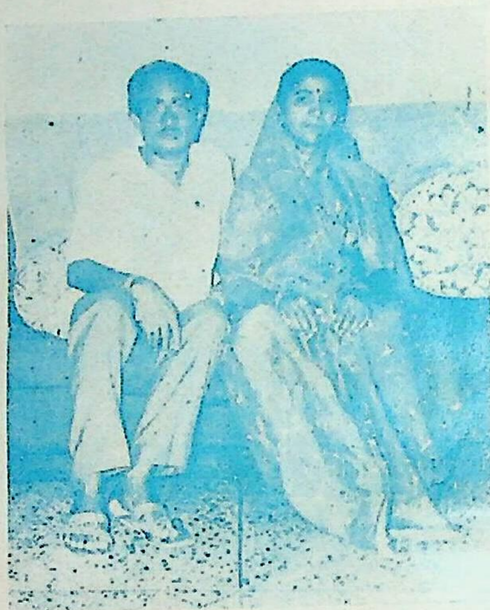
श्री सरोज कुमार अग्रवाल

बी. ए., बी. एल.

आ

धर्मपत्नी श्रीमती कामिनी अग्रवाल, बी. ए.

हमार हितचिन्तक



श्री निर्मल कुमार अग्रवाल

आ

धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला अग्रवाल

संक्षिप्त परिचय

स्व० बाबू रामाप्रसाद अग्रवाल आ उहाँ के परिवार

सीवान (बिहार) के प्रसिद्ध कपड़ा व्यापारी श्री रामाप्रसाद अग्रवाल धार्मिक, दानी आ शिक्षाप्रेमी व्यक्ति रहनीं। उहाँ के दानशीलता के कथा आजुओ वाराणसी के मारवाड़ी धर्मशाला, अयोध्या आ हरिद्वार के धर्मशाला कहतारे सन। उहाँ के धार्मिकता के कथा सीवान कचहरी के दुर्गा मंदिर आ गोपाल मंदिर से सुनीं। शिक्षाप्रेमी त अइसन जे डी० ए० वी० महाविद्यालय सीवान में एकमुस्त दस हजार एक रुपया देके पहिलका आ आखिरी एतना नगद दानी रहनीं। सीवान के निकट-वर्ती बड़का गाँव इहाँ के जमीन्दारी में परत रहे, ओह गाँव में कुछ जिरात रहे। ओह जमीन में मध्य विद्यालय आ बाद में उच्च विद्यालय खोल के इहाँ का बहुत दिन तक दूनू के जन्मदाता सचिव रहनीं। अब ऊ विद्यालय राजकीयकृत हो गइल बाड़े सन।

इहाँ के त्यागशीलता के एगो उदाहरण काफी बा। रामा बाबू आ बाँके बाबू दू भाई लोग में एगो बहिन रहली। उनकर बियाह उत्तर प्रदेश में भइल रहे। उनका कवनो संतान ना रहे, केंहू नजदीकी गोतियो ना रहे। उनका लगे चल-अचल करोड़ो के सम्पत्ति रहे। ऊ अधिकतर भाइये का लगे रहसु आ अन्त में भाइये का लगे परलोक सिधरली। ऊ अपना जिनगी ? कई बेर जोर दे दे के रामा बाबू से कहलीं कि हमार सब धन तूं ही ले ल आ अचल सम्पत्ति तूं लिखा ल। बाकी हर बेर रामा बाबू इहे जवाब देस कि बहिन के धन ना लेबे के आ अन्त ले नाहिए लेहले। उनकर सब धन दूर के गोतिया देआद लोग बाँट लिहल।

अइसन रामा बाबू के दानशीलता, त्याग आ शिक्षाप्रेम के अउरी बढ़ावेवाली उनकर धर्मपत्नी श्रीमती गोकुल देवी रहली। एह दम्पति के सदाचार अनमोल रहे।

एह दम्पति के तीन बेटा—श्री विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल, श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल आ श्री सरोज कुमार अग्रवाल। तीनूं बेटा योग्य आ व्यापार में पूरा साथ देवेवाला।

रामा बाबू का जीवन में दू गो दुर्घटना असह्य रहे। छोट भाई बाँके बाबू आ अपना बुढ़ापा में जेठ बेटा विश्वनाथ बाबू के स्वर्गवास। कहल जाला जे विपत्ति में सज्जन का धैर्य के परीक्षा होला। रामा बाबू दूनू कुअवसर पर धैर्य धारण कइनीं आ अइसन लमहर शोक बर्दाश्त क गइनीं।

रामा बाबू के दोसरका बेटा श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल बचपने से अपना व्यापार में लागल बाड़े। इनका दू गो बेटा आ दू गो बेटी बा लोग। बेटी सौभाग्यवती पूनम आ सौभाग्यवती गुड्डन अपना-अपना घरे बाल-बच्चा के साथ सुखमय जीवन जी रहल बा लोग। बेटा श्री अनिल कुमार अग्रवाल आ श्री अजय कुमार अग्रवाल व्यापार में लागल बा लोग। जेठकू के बियाह गाजीपुर के एगो संभ्रान्त अग्रवाल परिवार के श्रीमती वन्दना से भइल बा। इनका छोट-छोट बेटा-बेटी बाड़े सँ। पूरा परिवार आनन्द से जीवन बितावता।

रामा बाबू के तिसरका बेटा श्री सरोज अग्रवाल बी० ए०, बी० एल० पास कइला का बादो अपना व्यापारे में लागल बाड़े। संगीत इनकर मुख्य व्यसन बा। प्रतिदिन सुबह संगीत के अभ्यास करेले आ संगीत के जिज्ञासु छात्र लोग के सेवा-भाव से सिखावत रहेले। साहित्यिक, सांस्कृतिक काम में दिल खोल के हाथ बँटावेले, ई इनकर खास विशेषता बा। इनकर बियाह मुजफ्फरपुर का एगो सुखी सम्पन्न परिवार के बेटी श्रीमती कामिनी अग्रवाल बी० ए० से भइल बा। इनका तीन सन्तान में दू गो बेटी आ एगो बेटा बाड़े। दूनू बेटी सौभाग्यवती भारती आ सौभाग्यवती शबनम अपना-अपना परिवार के साथे सुखमय जीवन जी रहल बा लोग. प्रिय बेटा श्री संदीप कुमार अग्रवाल अबहीं चार्टर एकाउण्टेंसी के तइयारी कर रहल बाड़े आ साथे साथ पिताजी का व्यापारो में सहायता देत रहेले। एह होनहार बेटा से बहुत आशा कइल जाता।

स्वर्गीय विश्वनाथ बाबू का तीन बेटा एगो बेटी। बेटा लोग में श्री निर्मल कुमार अग्रवाल, श्री सुनील कुमार अग्रवाल आ श्री राजकुमार अग्रवाल बाड़े। बेटी

श्रीमती मुन्नी के बियाह दरभंगा का एगो सुखी सम्पन्न परिवार में भइल। ऊ आनन्द से बाड़ी।

श्री निर्मल बाबू सामान्य शिक्षा पा के बचपने से व्यापार में लाग गइले। समय पा के रामा बाबू इनकर बियाह बलिया (उत्तर प्रदेश) निवासी स्व० सीतारामजी के सुपुत्र स्व० बद्रीप्रसाद कपड़ा के दुकान (अग्रवाल बन्धु, चौक) का शीलवती, गुणवती बेटी श्रीमती सुशीला का साथे कइनीं। इनका पाँच सन्तानन में तीन बेटा दू बेटी बा लोग। बेटन में श्री मनोज अग्रवाल, श्री मयन्द कुमार अग्रवाल आ श्री मधुप कुमार अग्रवाल बा लोग। बेटियन में सौभाग्यवती मीनू अग्रवाल आ सौभाग्यवती मनीषा अग्रवाल बा लोग। दूनू बेटियन के बियाह क्रमशः बेगूसराय आ इलाहाबाद के सुखी सम्पन्न परिवार में क के माता-पिता बड़ा संतुष्ट बा लोग। बेटन में श्री मनोज कुमार अग्रवाल के बियाह शाहगढ़ (आजमगढ़) निवासी श्री भरत प्रसादजी अग्रवाल के दुलारी बेटी सौभाग्यवती प्रीति का साथे भइल बाटे। ई पतोह रूप, गुण आ अपना मीठ स्वभाव से घर भर के प्यारी बन गइल बाड़ी।

श्री निर्मल बाबू के मन समाज सेवा में बचपने से लागेला। तबे नूँ सन् १९८५ ई० में वार्ड नं० २८ के लोग इनका के नगरपालिका आयुक्त (म्यूनिसिपल मेम्बर) बनावल। तबे से अउरी जोर-शोर से समाज सेवा में जुटल बाड़े। मधुर-भाषी निर्मल बाबू अपना बेटन के व्यापारिक दक्षता से बड़ा संतुष्ट बाड़े। एह होनहार तीनू बेटन से बड़ा उमेद बा।

श्री सुनील कुमार अग्रवाल साधारण शिक्षा पा के अपना व्यापार में लाग गइले। इनकर बियाह गाजीपुर के एगो अग्रवाल परिवार के एगो रूपवती, गुणवती बेटी श्रीमती कनक अग्रवाल से भइल बा। इनका दूगो बेटा आ दूगो बेटी (चारू नाबालिक) बा लोग। श्री राजकुमार अग्रवाल काम-धन्धा में खूब चतुर बाड़े आ मँझला भाई के मन से साथ दे तारे।

कहल जाला कि 'बाढ़े पूत पिता का धरमे'; स्वर्गीय रामा बाबू का एह परिवार में ई कहावत पूरा तरह से चरितार्थ बा। हम एह पूरा परिवार के मंगलकामना चाहतानी।

—अक्षयवर दीक्षित

अनुक्रम



प्रस्तावना

भोजपुरी के सपूत निवन्ध संग्रह में भोजपुरी क्षेत्र के कई नामी-गरामी मनीषियन, विभूतियन आउर साहित्यकारन के पहिचान बड़ी सहृदयता आ साव-धानी से उजागर कइल गइल बा तबो एकर कतार पूरा नइखे भइल एगो ना एगो नांव छूटिये गइल बा। एकर आपन सीमा बनि गइल बा। बाकिर एकरा पाछा लेखक के जवन भावना आ चेतना बा ऊ अनुभव पर टिकल असीम आ व्यापक बा। एह कारन से लेखक पाठक के मन में आउर अधिक जाने के कुतूहल जगावे में बड़ा सफल बा आ अधिक से अधिक जाने के उत्सुकता बढ़ावे में बेजोड़ कहल जा सकेला।

साच बात ई बा कि लेखक जवन कुछु आ जइसन लिखले बा ओकरा पाछा कवनो बनावट आ दिखावट नइखे खांटी सचाई आ अनुभव पर आधारित बा। लेखक का शैली में विविधता के मिलावट बा। एह से एकरा के ना त शुद्ध जीवनी कहल जा सकेला ना ही संस्मरण आ रेखाचित्र। एकरा अनुभाव से अधिक अनुभव आ अध्ययन के योगा-योग बा। सहृदय लेखक के संवेदनशीलता के पुट बा। एकर सबसे बड़ कारन ई बा कि लेखक खुदे ओह जीवन के भागीदार बा। सुनला से अधिक ओकर देखल आ भोगल बा। एह से सोचला समुझला से अधिक अनुभव के बरनन बनि गइल बा। जवना से खाली बुद्धिये के छेड़ि के नइखे रहि जात ओकरा संगे-संगे हृदयो के छुइ जाता, एकर नतीजा ई होता कि पाठक जाने-अनजाने ओकरा प्रभाव से अछूता नइखे रहि जात आ कुछु न कुछु कइगुजरे खातिर उधेड़-बुन में लागि जाता खाली सुगबुगाइये के नइखे रहि जात।

एह संग्रह के निबन्धन के समय-समय पर लिखल गइल बा। जब जवना चरितनायकन के सुधि जोर मरले बा तब तवना के सुर बाजे लागल बा। बाकिर एह चरितनायकन में सभे समकालीने नइखे। कबीर अइसन पुरनियो के अमिट छाप लेखक के संस्कार में घर बनवले बा। ऊ भोजपुरी चरित आ चरित्र दूनो के

अमिट निसानी बाड़ । शास्त्र के संगे-संगे स्वतन्त्र चिन्तन आ कथनी के साथे-साथे करनी भा रहनीयो के स्मारक बाड़े । इहे कारन बा कि उन्हकरा बानी के गूंज आज भी लोककंठ में निवास करत बा । कतहूँ अटकाव-भटकाव के मौका नइखे छोड़त । आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते रहे के ऊ जुग राख में तोपाइल आग उसकावे के काम करत बा ।

बात ई वा कि लेखक खाली बरियार लिखन्ते नइखे ओकर कर्मठ जीवन टॉनिको के काम करत बा । हम उमेदि करत बानीं कि भाई अक्षयवर दीक्षित के ई कृति लोकप्रिय बनी आ उन्हकरा जस के बढ़ावे में सहायता करी । निबन्ध लेखक के रूप में दीक्षितजी बरोबर यादि कइल जइहें आ नवका लेखकन खातिर मशाल के काम करिहें । जइसे 'भोजपुरी निबन्ध' के बाद ई 'भोजपुरी के सपूत' सामने आइल बा तइसहीं एकरा बादो एगो ना एगो कृति एक से एक बढ़ि के आवत रही ई हमरा पूरा भरोसा बा ।

दीक्षितजी के चमकदार भविष्य के हम शुभकामना करत बानीं । उहाँ का तन्दुरूस्त रहत भोजपुरी के सेवा करत रहीं इहे हमार दिली चाहत बा । बधाई ।

नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
अध्यक्ष
अखिल भारतीय भोजपुरी
भाषा सम्मेलन

२३९, चक, इलाहाबाद-३
महाशिवरात्री, संवद २०४८

सगुन-विचार

पं० अक्षयवर दीक्षित सीवान के दीवान हवें। दीवान माने मन्त्री जेकर मन्तर चले, जेकर जादू सिर पर चढ़ के बोले। देखे-सुने में निठाह भोजपुरिया, पढ़ल लिखल लोग के टिटिम्हा, नखरा-नाज ना बोली में सुनाई, ना कपड़ा लता में दिखाई। बिचार आ कर्म से बुढ़ौतियो में तनल शरीर बा, साठा में पाठा। मतलब जइसे-जइसे ज्ञान आ विद्या बुढ़ाइल बा ओइसे-ओइसे सादगी आ स्वाभिमान के संयोग उहाँ के चेहरा मोहरा में मजे में देखल जा सकेला। दोहर देह, दोहर बोल। देख के केहू अन्दाज लगा ली कि इहाँ के बइठ के दिन नइखीं कटले। पढ़-लिख के, कुल्ह पढ़ल-लिखल के सार्थक बनावे खाती लिखीं ले, लगातार लागल रहेवाला प्राणी हवें एही से प्रकाशन सम्बन्धी कुल्ह झंझट आ असुविधा के जानियो के उहाँ के कई गो महत्त्वपूर्ण किताब लिख के छपा ले ले बानीं। जब भोजपुरी साहित्य के इतिहास लिखल जाई त दीक्षितजी एक ठे पोढ़, कबो ना भुलायवाला लेखक के रूप में इतिहास में बइठ जइहें। भोजपुरी के सगरो सभा सोसाइटी से उहाँ के सरोकार रहेला आ बोलवाला प नेवतहरी नीयन आ नाहीं बोलवाला प पण्डा पुरोहित साधु नीयन उहाँ के पहुँच जाइला। भोजपुरी के जे-जे सक्रिय कर्मठ कार्यकर्त्ता बा ओ सब से उनका आपन सरोकार रहेला। पं० गणेश चौबे जइसन भोजपुरी के पितामह उनुकर प्रशंसक हवें आ अर्जुन नीयन कर्मठ वीर भोजपुरी के धनुर्धर डॉ० प्रभुनाथ सिंह उनुकर अनुगत हवें। विद्या आ राजनीति दूनो दुनिया के लोग दीक्षितजी के आपन आदमी, गोतिया-इयार मानेला।

हमरा खातिर आज काल्ह लिखे-पढ़े-छपेवाला भोजपुरी साहित्य बहुत आपन अधीत विषय नइखे। जहाँ-तहाँ से जवन कुछ मिल जाला ओही प आपन पण्डिताई खड़ा बा। आपन सरोकार लोक जीवन में विद्यमान कथा, कहानी, गीत, पूजा, आचार, ऋतु, परब, रीतिरिवाज से जुड़ल मौखिक साहित्य से रहेला। हमरा त अइसन लागेला जे अबहीं भोजपुरी साहित्य मौखिक परम्परा में जीवित बा। शिष्ट

आ विशिष्ट साहित्य के रूप में जवन साहित्य लिखल जा रहल बा ओके बहुत महत्त्वपूर्ण ना कहल जा सके। वर्तमान भोजपुरी साहित्य में लिखे के छटपटाहट बा, सुगबुगी बा। ई कवनो नया बात नइखे। अक्सर अइसने होला। कवनो भाषा चाहे बोली शिष्ट जन चाहे विशिष्ट जन जब सर्जना चाहे अभिव्यक्ति चेतना से जुड़े लागेला त अक्सर साधारणे लोग उत्साही साहित्य लिखे खाती सक्रिय होला। आज काल्ह हाल ई बा जे-जे हिन्दी में लिख सकेला, छपत बा, प्रशंसा प्रतिष्ठा पावत बा उ लोग भोजपुरी में काहे लिखी? जे लोग के हिन्दी साहित्य में बहुत आदर नइखे मिलत ऊ लोग भोजपुरी में अजमावत बा। अक्सर भोजपुरी के आधुनिक लेखक लोग खाती भोजपुरी में सर्जना के काम गौण बा। बाकी हमरा खुशी बा कि दीक्षितजी हिन्दी आ संस्कृत के निठाह पढ़ल-लिखल समर्थ विद्वान भइलो प बड़ा मन से भोजपुरी में लिखे में सक्रिय बाड़े। उनुकर गिनती भोजपुरी के आरम्भिक उन्नायक लोग में होई।

एगो बात कहत बानीं। दीक्षितजी के नीक लागो भा उहाँ के असहमत हो जाईं बाकी इतिहास लेखक लोग के प्रशंसापाठी ना होखे के चाहीं। इतिहास रचना करेवाला आदमी के अपना चयन में निर्मम आ बहरुआ होखे के चाहीं। झरला-बहरला पर जवन बच जाय तवने के इतिहास में बइठावे के चाहीं। पइया-पछोर के फेक देबे के चाहीं आ नीमन निठाह के बटोरे के चाहीं। हमरा खुशी बा कि 'भोजपुरी के सपूत' किताब लिखत खानी दीक्षितजी प्रायः इतिहास विवेकी जइसन आचरण कइले बाड़े। हमरा ना बुझाय कि उहाँ के किताब भोजपुरी के सपूत में राजेन्द्र बाबू, जयप्रकाश बाबू, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं० भगवतशरण उपाध्याय के नाम कइसे आवे देनी। इहाँ सभे भोजपुर के सपूत हईं भोजपुरी के सपूत ना। राजेन्द्र बाबू के कवन किताब भोजपुरी में बा? जयप्रकाश बाबू भोजपुरी में का लिखले बाड़े? हमार गुरु आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के महान लेखक हवें। उहाँ के भोजपुरी में का लिखले बानीं? पं० भगवतशरण उपाध्याय इतिहास के महान मनीषी रहले बाकी उहाँ के भोजपुरी में लिखल साहित्य अगर कुछ होई त ना ऊ प्रामाणिक बा ना प्रासंगिक, ना एतना महत्त्वपूर्ण कि उहाँ के भोजपुरी भाषा के सपूत के रूप में इयाद कइल जाव। राहुल सांकृत्यायन के अधिकांश काम त

हिन्दीए में बा। 'ई जपनिया राछछ' आ अइसहीं एगो दूगो फुटकर किताब उहाँ के भोजपुरी में लिखले होइब, एतने भर से उहाँ के भोजपुरी के सपूत ना हो जाइब। ई तय बा कि ई सब लोग भोजपुरी प्रदेश के भोजपुरी प्रेमी महान लोग हवे बाकी भाषा आ साहित्य खाती इहाँ सब के सपूत मानल इतिहास के पन्ना में ना बइठी। आज नाहीं काल्ह, काल्ह नाहीं परसों आदर प्रेम के ई झण्डा उखिया जाई।

भोजपुरी के सपूत किताब में पहिलका नाम कबीरदास के बा। उहाँ के भोजपुरिया रहीं बाकी जोलहा लोग के व्यवसाय-बोली आ स्पीच हैबिट अवधी से जुड़ल बा। कपड़ा बुने के व्यवसाय बनारस आ मऊ में जरूर रहे बाकी एकर बाजार बस्ती सुल्तानपुर में रहे। एही से जोलहा बोली में भोजपुरी के प्रयोग कम होला! कबीरदास साधु रहले। साधु लोग के आन्दोलन मेरठ, एटा, इटावा से होत पंजाब के ओर तक गइल एही से साधु लोग के भाषा में पछांही प्रयोग खूब मिलेला। ई जरूर बा कि कबीरदासजी के कुछ निर्गुन, कुछ विषादगीत, कुछ उलटवाँसी भोजपुरी जनपद में भोजपुरिया ट्यून में रूपान्तरित हो गइल बा। कबीरदासजी के प्रभाव से लड़े खाती जवन लोकभाषिक लड़ाई भोजपुरी इलाका में शुरू भइल ऊ महत्त्वपूर्ण बा। जइसे कबीरावन, जोगीरा भोजपुरी के जातीय ऊर्जा के आ रचनात्मक प्रज्ञा के प्रतीक बाड़े सँ। ए से कबीर के खुद के रचना ना कबीर-विरोधी साहित्य मतलब झररर कबीर आ जोगीजी सारारारा वाला साहित्य भोजपुरी के जान बा। कबीर के पाँव कबो मजे में भोजपुरी इलाका में ना रोपाइल। संगीतकार, बेसवा, जोगी, भिक्षुक आ जंगम लोग कबीर के जरूर गावेला बाकी कबीरदासजी भोजपुरी भाषा के रचनाकार ना हवें। तब एगो बात जरूर बा कि कबीरदासजी के मन में जवन जनमल ऊ भोजपुरी माटी में तैयार भइल बा। उनका बानी में जवन निखार बा ऊ भोजपुरिया सान प चढ़ल बा। कबीर के भाषा में मुहावरा, सूक्ति, धांसू, मुंह बन्द क के आँख के खोल देबेवाला बेधक उक्ति-चमत्कार यानि जवन कविता के ताकत बा—इनर फोर्स—ऊ भोजपुरी के ह। कबीर के आइडियोलेक्ट भोजपुरी ह बाकी उनुकर एक्सप्रेसन साधु आ जोलहा लोग के अभिव्यक्ति ढाँचा में अन्तिम रूप पवले बा। पोयटिक फिनिशिंग के प्रतिमान प कबीरदासजी साधु कवि के रूप में खड़ा होइहें। एह तत्व के समझे-

समझावे के पड़ी। तबो हमरा अइसन लागत बा कि दीक्षितजी कबीर के इनर-फोर्स के ध्यान में रख के उनुके भोजपुरी के कवि मनले होइहें। हम एइजा ध्यान दिआवल चाहब कि भोजपुरी में काफी संत साहित्य लिखल गइल बा। कबीर अनुवर्ती लोग के साहित्य बा, साथे-साथे कबीर परवर्ती कबीरपंथी लोग के भी साहित्य बा। ओह के खोजे के चाहीं ओ प विचार कइल जरूरी बा।

दीक्षितजी के किताव में भिखारी ठाकुर के नाँव बहुत महत्त्वपूर्ण बा। दर-असल भिखारी के नाँव भोजपुरी के नामांकित साहित्यकारन में सर्वश्रेष्ठ, सर्वप्रथम आ अब्बो सबसे महत्त्वपूर्ण बा। दीक्षितजी बड़ा प्रेम से दुर्गा बाबू, रामविचार पांडेय, मुहुदुब्बरजी आ गणेश चौबे पर लिखले बाड़े। ई लोग आधुनिक भोजपुरी के नक्षत्र ह, ई लोग कला के आकाश में दिखायी पड़ेवाला प्रकाश तत्त्व बा। साहित्यिक दृष्टि से भी ई लोग बहुत महत्त्वपूर्ण बा।

दीक्षितजी के किताब प कुछ लिखल बड़ा कठिन बा। कुछ वोलल छोट मुँह बड़ बात होई। उहाँ के हमरा से जेठ बानीं। जे जेठ होला ऊ श्रेष्ठो होला। इहे वजह बा कि उनुका किताब प हम विद्यार्थी भाव से लिखत बानीं। एह जाँच-परख में कवनो ढिठाई भइल होई त उहाँ के माफ क देव। 'साधु चरित शुभ सरिस कपासू।' हमरा त उहाँ के साधुए दिखायी पड़ी ला। एह किताब के भूमिका लिखे खाती उहाँ के हमरा भीरी अइनीं, सनेस भेजनी ई कुल्ह प्रेम दया भुलवले ना भुलाई। एही से एह किताब के भूमिका लिखत खानी हम कुछ आत्मस्मृति होके लिखनीं हाँ। आत्मविस्मृत होके लिखले रहतीं त ऊ प्रशंसा पाठ भइल रहित। हम सुनले बानी कि दीक्षितजी प्रशंसा पाठ करेवाला लोग के बौड़म समझीले। एही से अपना के बचावे खाती आ कुछ देखावे खाती प्रस्तावना के अविषय-आलोचना में घुसर गइनी हाँ। भूल-चूक कहल-सुनल के माफी देवे के कला में दीक्षितजी निठाह भोजपुरिया हईं।

शुकदेव सिंह
प्रोफेसर, प्राचीन हिन्दी साहित्य
हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

आपन बात

आपन पहिले के बनावल योजना रहे जे शिक्षण कार्य से सेवा-निवृत्ति के बाद प्रतिवर्ष एगो पुस्तक के प्रकाशन होई। एह योजना का अन्तर्गत १९९० में 'श्रद्धांजलि' निकलल, १९९१ में 'भोजपुरी निबन्ध' आ १९९२ में ई 'भोजपुरी के सपूत' अपने सभ के सामने बा। हम पिछला पुस्तकन में बता चुकल बानी जे अन्धापन होखे का पहिले के ई रचना हई सँ। एहू पुस्तक के पच्चीसो रचना के इहे हाल बा। हँ ई बात जरूर बा कि कुछ रचना पूरा रहे आ कुछ अधूरा। जवन रचना पूरा हो चुकल रहे तवन कहीं ना कहीं पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित हो गइल रहे। एह पुस्तक में यथास्थान ई संकेत दे दिहल गइल बा। बाकी अधूरा रचनन के पूरा करे में जे लोग सहयोग देले बा ओकर चर्चा आगे होई।

'भोजपुरी के सपूत' में 'भोजपुरी' शब्द पर विचार करत हमरा मन में एकर दूगो अर्थ आइल बा। एगो अर्थ त सर्वविदित बा जवन भाषा खातिर बा। दुसरका एकर अर्थ बा—भोजपुर क्षेत्र के निवासी। जेतना दूर में भोजपुरी बोलल जाला ऊ भोजपुर क्षेत्र भइल आ ओह क्षेत्र के निवासी भोजपुरी भइले। जइसे मद्रास निवासी लोग खातिर मद्रासी शब्द के प्रयोग कइल जाला, गुजरात के निवासी खातिर गुजराती। साथे-साथे ओइजा के भाषा खातिर गुजराती, ओही तरह से भोजपुरी शब्द भाषा खातिर त बड़ले बा, एइजा के निवासियो खातिर बा। तब भोजपुरी-सपूत के अर्थ भइल—भोजपुरी भाषा के सपूत आ भोजपुरी भाषी लोगन में के सपूत। एह दूनू दृष्टि से हम एह सपूत लोगन के चुनाव कइले बानी।

एह पुस्तक में पच्चीस गो रचना संग्रहित बा। ई पच्चीसो रचना केहू ना केहू अइसन व्यक्ति से सम्बन्धित बा जे या त भोजपुरी प्रेमी बा आ ना त भोजपुरी साहित्यकार। भोजपुरी प्रेमी लोगन में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, पण्डित केदार पाण्डेय, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय आ श्री सन्तकुमार वर्मा के नाँव आइल बा। राजेन्द्र बाबू के भोजपुरी प्रेम राष्ट्रपति भवन में भोजपुरी के गूँज कायम कइले रहे। सोवियत संघ के प्रधानमंत्री ख्रुश्चेव का आगमन पर राजेन्द्र बाबू भोजपुरी में बतियवनीं, यद्यपि उनका के बात

बुझावे खातिर भोजपुरी वाक्यन के अंग्रेजी अनुवादो करत गइनी । लोकनायक का भोजपुरी प्रेम के चर्चा उहाँ से सम्बन्धित लेख का प्रारम्भ में क देले बानी ।

पण्डित केदार पाण्डेय एगो राजनेता रहले । विहार के मुख्यमन्त्री आ केन्द्र में रेल मन्त्री रहले । ऊ भोजपुरी प्रेमे का कारन अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गठन खातिर पहिलका बइठक पटना छज्जूबाग स्थित अपना निवास पर बोलवले आ एहिजा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गठन भइल । ओकरा प्रारम्भिक खर्च खातिर ओही बइठक में कुछ मददो कइले। सन् १९७६ में जब एह सम्मेलन के दुसरका अधिवेशन पटना में भइल त उहे ओकर स्वागताध्यक्ष बनावल गइले । अधिवेशन का बाद एगो गैर सरकारी भोजपुरी अकादमी संस्था ऊ खोलले । एह संस्था के माध्यम से 'भोजपुरी समाचार' नाँव के पहिले मासिक बाद में साप्ताहिक पत्र निकलले । एह सब खर्च के व्यवस्था भोजपुरी प्रेमी पाण्डेयजी कइले रहले । बाद में एही गैर-सरकारी 'भोजपुरी अकादमी' के मान्यता विहार सरकार दे देहलख । अब ऊ एगो सरकारी संस्था बा ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आ डा० भगवतशरण उपाध्याय हिन्दी के मनीषी विद्वान आ विश्वविख्यात साहित्यकार रहे लोग । ई दूनू महापुरुष भोजपुरी में कुछ साहित्य रचना नइखन कइले बाकिर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दुसरका (पटना) अधिवेशन आ तिसरका (सीवान) अधिवेशन के क्रमशः अध्यक्षता करत ई दुनो महापुरुष अपना-अपना अध्यक्षीय भाषण में भोजपुरी प्रेम देखावत एह भाषा आ एकरा साहित्य के जवन बखान कइल लोग तवना से प्रभावित होके गैर भोजपुरी भाषी साहित्यकार लोग भोजपुरी का ओर झुकल । ई ओह दूनो महापुरुष के भोजपुरी खातिर लमहर अवदान बा ।

श्री सन्तकुमार वर्मा साहित्यकार हवें । 'वाबू' नाँव से राजेन्द्र बाबू के जीवनी भोजपुरी में लिखले बाड़े । महान कृषिकवि 'घाघ' पर उनकर प्रामाणिक पुस्तक प्रकाशित बा । बाकिर एह सब से बढ़ि के भोजपुरी प्रेम का कारन सन् १९४७ में ऐतिहासिक भोजपुरी साहित्य सम्मेलन स्व० गदाधर प्रसाद श्रीवास्तव, अधिवक्ता, का साथे करवले । एह सम्मेलन का समूचा श्रेय स्वागताध्यक्ष गदाधर बाबू आ स्वागतमंत्री सन्तकुमार वर्मा के बाटे । इनही का आग्रह से सीवान (बिहार) में

पहिले पहिल भोजपुरी शब्द का साथे 'साहित्य' शब्द आ 'सम्मेलन' शब्द लागल। ई भोजपुरी संसार खातिर गर्व के बात बा।

शेष ऊ सब महापुरुष—जेकरा पर एह पुस्तक में रचना संग्रहित बा—जानल मानल चर्चित प्रशंसित साहित्यकार बा लोग।

एइजा एगो बात कहे से हम अपना के रोक नइखी सकत। एह पुस्तक के पहिलका रचना कबीरदास से सम्बन्धित बा। कबीरदास के भोजपुरी आलोचक लोग भोजपुरी भाषा के आदिकवि के रूप में मनले बा। यद्यपि कबीरदास के पहिले सरहपा सिद्ध सन्त लोग चाहे नाथ सम्प्रदाय के सन्त लोग भोजपुरी शब्दन के व्यवहार अपना पदन में कइले बा। बाकिर ऊ सब रचना क्रमबद्ध नइखी सँ, छिटफुट बाड़ी सँ। इतिहास निर्माण खातिर क्रमबद्धता आवश्यक होला। कबीरदास के मुख्य निवास वाराणसी रहे बाकी इनकर क्षेत्र उत्तर प्रदेशे ले ना, बिहार से पंजाब ले फइलल रहे। क्षेत्र विस्तार का ओजह से सन्त लोग के क्रमबद्ध परम्परा कायम रहल आ निरगुनिया सन्त लोग खातिर भोजपुरी बड़ा अनुकूल भाषा बुझाइल। ज्ञान के बात कहे खातिर आ दू टूक जवाब देवे खातिर भोजपुरी बड़ा अनुकूल भाषा साबित हो चुकल बा। कहे के मतलब जे कबीरदास से प्रारम्भ होके क्रमबद्ध ढंग से सन्त लोग अपना बानी में भोजपुरी के प्रयोग कइले बा। इहे कारन बा कि कबीरदास भोजपुरी के पहिला कवि मानल गइल बाड़े। ऊ खाली भाषा के दृष्टि से ना स्वभावो से खाँटी भोजपुरी बाड़े। तवे नूं भोजपुरी स्वभाव इनका में कूट-कूट के भरल बा। भोजपुरी के छोड़ के दोसर के कही जे—'जो घर जारे आपना चले हमारे साथ।' इनकर अक्खड़ स्वभाव—जवन भोजपुरी के तेवर कहल जा सकेला—हमरा के अपना ओर खींचि लेहलस। कबीर के पूर्ववर्ती चाहे परवर्ती अइसन केहू सन्त नइखे भइल जेकरा में अक्खड़पन, दू टूक बात करे के ढंग अइसन होखे। हम भोजपुरी सन्तन के प्रतिनिधि इनका के मनले बानीं।

एह संग्रह में जन्म तिथि के आधार पर क्रम निर्धारित कइल गइल बा। एहू कारन से कबीरदास पहिलका बाड़े। एकरा बाद हम समकालीन लोगन पर दृष्टि दउड़वले बानीं। एह समकालीन लोगन में दू तरह के महापुरुष आइल बाड़े; एगो त ऊ जेकर निधन हो चुकल बा दोसरका ऊ जे पैंसठ बरिस पार कर चुकल बा।

तवे नूं अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हो चुकला के बादो आ भोजपुरी के सही सपूत भइला के बादो प्राचार्य विश्वनाथ सिंह आ डॉ० विद्यानिवास मिश्र एह पुस्तक का परिधि में ना आ सकल बाड़े।

हम मानतानी जे भोजपुरी के ढेर सपूत छूट गइल बाड़े। एकर दूगो कारन बा, पहिला त ई जे आँख का कमजोरी से दउर-धूप क के एह लोगन पर सामग्री नइखीं जुटा सकत। दुसरका ई जे पुस्तक प्रकाशन के झंझट देखि के अब एह पुस्तक के अउरी मोट करे के हिम्मत ना भइल ह। जे लोग छूट गइल बा ओह भोजपुरी प्रेमी लोगन में डॉ० जार्ज ग्रियर्सन, डॉ० सुनीत कुमार चाटुर्य्या, बाबू जगजीवन राम, डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा (पटना), सन्त साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य परशुराम चतुर्वेदी (बलिया), विख्यात कोशकार भाषा वैज्ञानिक डॉ० भोलानाथ तिवारी (गाजीपुर), डॉ० टी० बी० मुखर्जी (पूर्व कुलपति, बिहार विश्वविद्यालय), आचार्य शिवपूजन सहाय (भोजपुर), पण्डित राजमंगल मिश्र पूर्व सांसद आ सदस्य बिहार विधान परिषद बाड़े।

मृत साहित्यकार लोगन में स्वतन्त्रता आन्दोलन का युग में जन जागरण करे वाला पण्डित छांगुर त्रिपाठी (देवरिया), श्री विश्वनाथ प्रसाद शैदा (डुमरांव) के नांव अविस्मरणांय बा।

भोजपुरी साहित्य के उन्नायक मृत लोगन में पूर्वी के जन्मदाता सर्वश्री महेन्दर मिसिर, बटोहिया के अमर गायक रघुवीर नारायण (सारण), प्राचार्य मनोरंजन सिन्हा (छपरा), श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' (चम्पारण), जगदीश ओझा 'सुन्दर' (बलिया), रघुवंश नारायण सिंह (भोजपुर), 'अँजोर' के सम्पादक पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय (पटना), डॉ० स्वामीनाथ सिंह (वाराणसी), हरेन्द्रदेव नारायण (सारण), कालजयी कुँवर सिंह के कवि डॉ० सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (भोजपुर), शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी (पटना), रामवचन द्विवेदी अरविन्द (पटना), हरिशंकर वर्मा (जमशेदपुर), रामवचन लाल श्रीवास्तव (कलकत्ता), परमेश्वर दूबे शाहाबादी (जमशेदपुर), कुंजबिहारी प्रसाद 'कुंजन' (रोहतास), भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' (भोजपुर), पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह (सारण), नरेन्द्र शास्त्री (बलिया), विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त (चम्पारण), विमल कुमार सिंह 'विमलेश' (सीवान);

भोजपुरी के भुलाइल कवि अंजोर पाण्डे (गोपालगंज), रघुनाथ चौबे (सारण) आदि बाड़े।

जीवित साहित्यकार लोगन में भोजपुरी के सपूत बाड़े—सर्वश्री कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' (बक्सर), पद्मश्री रामेश्वर सिंह काश्यप 'लोहा सिंह' (पटना), अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन के वर्त्तमान अध्यक्ष डा० नर्मदेश्वर चतुर्वेदी (प्रयाग), 'कुँवर सिंह' महाकाव्य 'द्रौपदी' आदि अनेक काव्यन के लेखक चन्द्रशेखर मिश्र (वाराणसी), 'बउधायन' महाकाव्य के लेखक दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती (वाराणसी), डॉ० रामदेव त्रिपाठी (चम्पारण), डॉ० वसन्त कुमार (गोपालगंज); डॉ० जितराम पाठक (भोजपुर), डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी (बलिया); भोजपुरी भाषा के इतिहास लेखक पण्डित रासबिहारी पाण्डेय (भोजपुर), दूधनाथ शर्मा 'श्याम' (देवरिया), भोलानाथ गहमरी (गाजीपुर), भोजपुरी के पहिला उपन्यास-कार 'बिंदिया' आदि अनेक उपन्यासन के लेखक रामनाथ पाण्डेय (छपरा), सतीश्वर सहाय वर्मा सतीश (छपरा), अविनाशचन्द्र विद्यार्थी (पटना), महेश्वराचार्य (भोजपुर), रामनगीना सिंह 'विकल' (गोपालगंज), चन्द्रदीप पाण्डेय (सीवान), चर्चित-प्रशंसित कवि अनिरूद्ध, अर्जुन सिंह अशान्त (सारन), विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव (चम्पारन) रघुनाथ शरण शुक्ल आ रामाधार प्रसाद अशुंमाली (सीवान), हरिशचन्द्र साहित्यालंकार (चम्पारण), शिवमंगल मिश्र मंगल (गोपालगंज)।

धियान रहे हम जेतना नाँव गिनवली ह ओह जीवित लोगन में प्रायः साठ बरिस के ऊपर के लोगन के नाँव बा।

पंडित नर्मदेश्वर चतुर्वेदी एह पुस्तक के प्रस्तावना लिखि के हमरा प्रति जवन प्यार सहित आशीर्वाद देहनी तवन भुलाए लायक नइखे। हम पाण्डुलिपि देहनी आ एक्के-दू सप्ताह में उचित परामर्श का साथे प्रस्तावना सहित पूरा सामग्री आपन पइसा लगा के रजिस्ट्री क दिहनी। हम प्रयागराज जा के ले आवे के सोचत रहनी तबले रजिस्ट्री आ गइल। एकरा खातिर हम बहुत कृतज्ञ बानी।

'सगुन विचार' के लेखक सुविख्यात विद्वान डा० शुकदेव सिंह (प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) के हम बहुत आभारी बानी। कैतना अपनापन भरल ई 'सगुन विचार' बा। ओतना बड़ आदमी जे देश-विदेश में अपना विद्वता के छाप छोड़ले बा हमरा अइसन साधारन आदमी पर एतना कृपा कइल ई अनहोनी

बात बा। सुन्दरपुर (वाराणसी) में पाण्डुलिपि ले के जब गइनी त बड़ा आदर के साथ विनम्रता भरल व्यवहार भइल। व्यस्त कार्यक्रम रहला के बादो दसे दिन के बाद हमरा के बोलवले रहनी। हम अपना गृहस्थी का उलझन में फँस गइला से उचित समय पर ना जा सकनी बाकिर उहाँ के लिख के तइयार रखले रहनी। बाद में एगो पत्रवाहक श्री विद्याभूषण मिश्र के भेज के हम मँगवनी। डा० साहब श्री मिश्र के सामग्री लौटा के चुप ना भइनी, प्राप्ति-सूचना खातिर हमरा लगे अलग से एगो चिट्ठी लिखनी। ई बात त बहुत छोट बा बाकिर दायित्व पालन के प्रति उहाँ के जागरुकता के परिचय देता। अइसन लेखक के हम बहुत-बहुत आभार मानतानी।

एह पुस्तक के अधूरा रचना पूरा करे आ ई रूप देवे में जे आत्मीय जन के सहयोग मिलल बा ओइ में पंडित ब्रजभूषण तिवारी (सेवानिवृत, प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी), अनुजवत् डा० तैयब हुसैन 'पीड़ित' आ प्रिय भाई श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग' (सम्पादक, बिगुल, त्रैमासिक) के हम कृतज्ञता ज्ञापित करतानी। साथे-साथ सक्रिय शुभ कामना देवे वाला लोगन में विशेष रूप से डॉ० प्रभुनाथ सिंह (पूर्व वित्त राज्य मन्त्री, बिहार) के हम कृतज्ञ बानी। उदारतापूर्वक प्रूफ संशोधन करेवाला डॉ० विजय बलियाटिक (रीडर, काशी विद्यापीठ, वाराणसी) आ प्रो० राजेन्द्र सिंह (रीडर, अर्थशास्त्र विभाग, डी० ए० वी० कालेज सिवान) के हम बहुत-बहुत आभार मानत बानी। पुस्तक के पाण्डुलिपि तइयार करे में सौभाग्यवती शिप्रा पाठक (किरण), छात्रा, एम० ए० (संस्कृत), बिहार विश्वविद्यालय, श्री ब्रजेश कुमार पाण्डेय, छात्र, एम० ए० (संस्कृत), दिल्ली विश्वविद्यालय आ श्री जीतेन्द्र वर्मा, छात्र, स्नातक (द्वितीय वर्ष), डी०ए०वी० महाविद्यालय, सीवान के पूरा सहयोग मिलल। एह प्रिय छात्र लोग के हम हृदय से आर्शीर्वाद दे तानी। ई लोग अपना जीवन में उन्नतिशील बनो आ देश-राष्ट्र के सेवा करत रहो।

हम ओहू लोग के धन्यवाद देत आभार मानतानी, जे लोग आर्थिक गुप्तदान दे के एह पुस्तक प्रकाशन में सहयोग कइले बा। साथ ही जेकरा शुभकामना से पुस्तक प्रकाशन संभव भइल ह, ओहू पंच परमेश्वर के आभार मानतानी।

अन्त में श्री शंकर मुद्रणालय, हाथीगली, वाराणसी के मालिक आ मित्र श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्त के हम धन्यवाद दे तानी जे उचित समय से पुस्तक के प्रकाशन कइले हँ।

तिथि : पितृ-विसर्जन
सम्वत् २०४९

अक्षयवर दीक्षित
भोजपुरी भवन, निराला नगर,
सीवान-८४१२२६

भोजपुरी के आदि कवि कबीर दास

देश राष्ट्र का सामने जब कवनो कठिनाई आवेला तब सन्त महात्मा लोग ओह कठिनाई के दूर करे खातिर सामने आ जाला। बुद्धदेव, आद्य शंकराचार्य, कबीरदास, तुलसीदास, विवेकानन्द आदि अइसने सन्त महात्मा रहलें।

भारतवर्ष में सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी सन्त कबीरदास के जनम सं० १४५६ जेष्ठ सुदी पूर्णिमा सोमवार दिन के भइल रहे। 'कबीर कसौटी, में कबीरदास के जनम तिथि का विषय में कहल गइल बा—

"चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाट मरा
जेठ सुदी वरसायन को, पुरनमासी तिथि प्रगट भए"

बाबू श्यामसुन्दर दासजी 'चौदह सौ पचपन साल भए के अर्थ सम्वत् चौदह सौ पचपन बीतला पर अर्थात् सं० १४५६ विक्रम कइले बानी। एही साल जेठ सुदी पूर्णिमा का दिने चन्द्रवार पड़ल रहे। अइसे ई तिथि ज्योतिष गणना का अनुसार ठीक बुझाला आ विश्वास जोग बा।'[1]

कहल जाला जे कबीरदास विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से जनमल रहलन। लोक-लाज से ऊ ब्राह्मणी लहरतारा के तालाब के किनारे एगो पुरइन के पात पर ओह शिशु के सुता के हट गइली।[2]

ससुराल से आवत नीरू जुलाहा अपना मेहरारू नीमा का साथे जब लइका के रोवल सुनले तब बहुत खुश होके ऊ जुलाहा दम्पति नादान लइका के उठा लिहलें आ घरे ले आके पालि-पोसि के सयान कइलें। ब्राह्मणी के गर्भ से जनम भइल आ जुलाहा कीहाँ पालन-पोषण भइल। ई बात कबीर दास स्वयं सकरले बाड़न—

पूरब जनम हम ब्राह्मन होते, ओछे काम तप हीना।
रामदेव की सेवा चुका, पकरि जुलाहा कीवा॥

एह कथन से साफ जाहिर होता जे कबीरदास जुलाहा कीहा पालित भइलीं पर हिन्दू-धर्म के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त पूर्वजनम मानत रहलें। चाहे हिन्दू-धर्म के

१. श्री कुलदीप नारायण राय झड़प, सन्त कबीरदास : के कहाँ के ? भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, मई १९७६ अंक–१

२. लहरतारा शोध के विषय बा जे ऊ आजमगढ़ जिला में रहे या गाजीपुर जिला में।

इहो मान्यता बा जे जइसन काम कइल जाई तइसन फल मिली। ऊपर का पाँति में कबीरदास अपना के पूर्वजनम में 'ओछे काम तप हीना' मनले बाड़ें। एहसे ई बात सिद्ध हो जाता जे मुसलमान भइलो पर कवीरदास पूरा तरह से हिन्दू-धर्म मानत रहलें।

(क) कबीरदास अपना के कासी के जुलाहा मनले बाड़न। संभव बा जे नीरू नीमा कासी क्षेत्र में रहत होखे लोग।

(ख) तू वामन मैं कासी का जुलाहा बुझहू मोर गियाना।

कबीरदास का सिद्धान्त में एकेश्वरवाद के मान्यता रहे। ऊ पूरा तरह से निर्गुण ब्रह्म के मानसु तवे नु कहतारें—

जाति जुलाहा मति को धीर।
हरखि हरखि गुण रमे कबीर॥
मेरे राम की अभय पद त मरी।
कहे कबीर जुलाहा॥

कबीरदास का एकेश्वरवाद में उपनिषद् में वर्णित अद्वैतवाद ठीक तरह से देखल जाला।

कबीरदास तत्कालीन महात्मा रामानन्द के शिष्य रहलें।[1] स्वामी रामानन्दजी पहिले अद्वैतवादी सिद्धान्त मानत रहलें। बाद में स्वामी रामानुज के ग्रंथ पढ़लें आ उनका से प्रभावित होके विशिष्टाद्वैतवादी हो गइलें। एह से स्वामी रामानन्द के उपदेश में अद्वैतवाद आ विशिष्टाद्वैतवाद दुनूं के दर्शन होत रहे। एह कारण दुनूं वादन के मानेवाला इनकर शिष्य लोग रहे। कबीरदास अद्वैतवादी आ रैदास विशिष्टाद्वैतवादी।

वैदिककाल में दू तरह के ब्राह्मण के वर्णन बा—कर्ममार्गी आ ज्ञानमार्गी। कबीरदास पर एह दुनूं प्रकार का ब्राह्मण के प्रभाव बा तवे नूं आउरी साधु लोग तरे भीख माँगल ना चाहत रहलें।

उनका अनुसार परिश्रम कके जीवनयापन कइल आवश्यक रहे। एहीसे जेतना कबीरहा मठ बा सब भूमिपति बा। एह मठन में साधु लोग ठीक से गृहस्थी करत रहे आ ज्ञानियो बनत रहे। ई अलग बात बा जे एह साधु लोग का मन में आजकल ज्ञान के बात खतम हो गइल बा।

---

१. कासी में हम प्रगट भए हैं रामानन्द चेताए
और—
रामानन्द रामरस माते, कहहि कबीर हम कहि कहि जाए।

कबीरदास में ज्ञानमार्ग कूटि-कूटि के भरल रहे। आत्मा-परमात्मा, माया, यौगिक क्रिया आदि के वर्णन अपना पदन में खूब कइले बाड़न। ई अपना के 'राम की बहुरियाँ' कहले बाड़न अर्थात् आत्मा के पत्नी आ परमात्मा के पुरुष मनले बाड़न। परमात्मा के पावे खातिर आत्मा बेचैन बा। लेकिन माया का कारण ऊ मिल नइखे पावत। ई अलगाव क्षणिक बा। माया का संबंध में कहले बाड़न—

"माया महा ठगिन हम जानी
त्रिगुन फाँस लिये कर डोले बोले मधुरी बानी" इत्यादि।

जब योगाभ्यास से माया के बंधन टूट जाई तब आत्मा-परमात्मा एके हो जाई। वस्तुतः आत्मा-परमात्मा एके बा। कबीरदास एकेश्वरवादी नूं हऊअन। एही से एह ढंग से कहतारें—

"जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जल ही समाना यह ततु कहेऊ गियानी॥"

कबीरदास आत्मा-परमात्मा के वर्णन करे खातिर प्रतीक के सहारा लेहलें। ऊ सहारा अइसन बा जवन सुनत में त उलटा लागेला, हँसी आवेला बाकिर बात सही कहले बाड़न। एकरा के 'उलट बांसी' कहल जाला। कबीरदास के आत्मा-परमात्मा के चर्चा करे के ई ढंग एकदम मौलिक बा।

'उलटबांसी' के एगो दूगो उदाहरण देखीं—

"नइआ बीचे नदिया डूबल जाय" इत्यादि
"बरीसे कम्बल भीजे पानी" इत्यादि।

कबीरदास पर हिन्दू धर्म के पूरा प्रभाव रहे। तबे नूं ऊ अपना के ब्राह्मण कहले बाड़ें, हिन्दू कहले बाड़ें। ई अपना के खाली हिन्दू कहलहीं नइखन बलुक हिन्दुए तरे व्यवहारो करते रहलें। चउका ठहर देके माटी का नया गगरी से पानी पिअत रहलें। जवना से नीमा बड़ा घबड़ात रहली। एह बात के कबीरदास खुदे कहले बाड़ें—

'नित उठि कोरी गबरी आने लीपत जीउ गयो।
ताना-बाना कछू न सूझे, हरि रावि लपट्यो।
हमरे कुल कौने राम कह्यो।
मुसि-मुसि रोवे कबीर की माई। ए बारिक कैसे जीतहिं रघुराई।
तनना-बुनना सब तज्यो है कबीर। हरि का नाम हरि का नाम लिख
लियो है सरीर॥

ओछी मति मोरी जाति जुलाहा।
इन मुडियन मेरा घर धुधरावा। नितवहि राम रमौवा लायो।

कबीरदास बहुत आस्था-विश्वास का साथ राम का भजन करत रहलें। त नूँ सिकन्दर लोदी जंजीर में बान्हि के गंगा में इनका के फेंकवा दिहलसि। त कबीरदास के कुछु ना विगड़ल। गंगा का धारा से जंजीर टूट गइल। कबीरदा सही-सलामत बाहर आ गइलन। हिन्दू धर्म के अनुसार ई कवनो नया वात नइखे भक्त प्रह्लाद के कथा बहुत पुरान बा। कबीरदास का बादो भक्तिन मीरांबाई इहे कहानी बा। गंगा में अपना के डूबवला के चर्चा कबीरदास स्वय कइले बाड़न—

गंगा गुसाइन गहीर गंभीर। जंजीर बाँधिकर खरे कबीर॥
मन न डिगै तन काहे को डेराई। चरन कमलचित रह्यो समाई॥
गंगा की लहरि मेरी टूटी जंजीर। मृगछाला पर बैठे कबीर॥
कहि कबीर कोई संग न साथ। जल-थल राखत है रघुनाथ॥

सं० १५५१ में सिकन्दर लोदी के शासन भारत पर भइल। ऊ जब कासी आइल त कबीरदास के गंगा में फेंकवइबे ना कइलस, विश्वनाथ मन्दिरो तु के उँहवें मस्जिद बनवलसि। यद्यपि कुरानशरीफ का अनुसार जबरदस्ती दख भइल मस्जिद के नमाज अल्लाह कबूल ना करेलें तबो का जाने काहे बाब सिकन्दर लोदी आदि बादशाह मंदिर तूरि-तूरि जबरदस्ती मस्जिद बनवलें। त कुरानशरीफ पढ़ेवाला मुल्ला मौलवी लोग ओह बादशाहन के धार्मिक मानेला।

कुछ आलोचक सेख तकी के कबीरदास के गुरु कहले बाड़न। बाकी कबीरदा अपना पदन में कतहूँ कवनो पीर पैगम्बर के नाम नइखन लेले। कबीरपन्थी मठ में हिन्दुए लोग बा।

कबीरदास मुए का वेर कासी छोड़ के मगहर चल अइलें तवे नूँ ई कहाव प्रसिद्ध बा जे 'सब दिन सेवले कासी, मरे के वेर मगहर के बासी' कबीरदास बड़ा जिद्दी रहलें। उनका कासी आ मगहर में कवनो अन्तर ना बुझात रहे। दूनूँ एके मानत रहलें। तबे नूँ ऊ कहतारें—

'कहे कबीर सुनहू रे सन्तो, भ्रमि परे जिनि कोई।
जस कासी तस मगहर ऊसर हृदय राम सति होई॥'
'जो कासी तन तजे कबीरा रामहिं कौन विहोरा रे।'

ई अलग बात बा जे कबीरदास के मुअला का बाद मगहर में दूगो समा बनल बा। एगो पर कबीरपन्थी मठ वाराणसी के अधिकार बा। जवना के कबी

दास के समाधि कहल जाला। दूसरका के नाम 'कबीरदास के रौजा' बा। जबना पर मुसलमान लोग के अधिकार बा।

कबीरदास का युग में हिन्दू-मुसलमान दूनूँ समाज में आडम्बर ठीक तरह से भरि गइल रहे। कबीरदास आडम्बर से बहुत दूर रहत रहलें। हिन्दू-मुसलमान दूनूँ जाति के ठीक से फटकरलें। हिन्दू के फटकारत कहलें—

पाहन पुजैं हरि मिले तो मैं पूजूं पहार,
ताते वह चक्की भली जो पीस खाय संसार।

मुसलमान के फटकारत कहलें—

कांकड़ पाथर जोरि के मस्जिद लिया बनाय
ता चढ़ि मुल्ला बाग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।

मगहर जवन गोरखपुर के आस-पास बा। चाहे कासी, कबीरदास के मुख्य निवास स्थान रहे। ई दूनूँ स्थान भोजपुरी क्षेत्र में बा। एहसे स्वाभाविक रहे 'जे कबीरदास का पदन के भाषा भोजपुरी रहे। अइसे त उनका भाषा में पंजाबी, बुन्देलखण्डी आदि भाषा के शब्द बहुतायत से मिलेलसन। एकर कारण ई रहे जे ऊ त घुमक्कड़ साधु रहलें। जहाँ-जहाँ जासु ओइजा के शब्द ले लेसु। एही कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कबीरदास का भाषा के सधुक्कड़ी भाषा कहले बाड़न। बाकिर कुल मिला-जुला के भोजपुरी के प्रधानता बा।

एगो दूगो बानगी देखीं—

(क) "कवने ठगवा नगरिया लूटल हो" इत्यादि,

(ख) "मन ना रंगवले, रंगवले योगी कपड़ा
आसन मारि मन्दिर में बइठे नाम छाड़ि पूजन लागे पथरा" इत्यादि।

यद्यपि कबीरदास का पहिलहू सरहपा सिद्ध लोग चाहे नाथ सम्प्रदाय के योगी लोग अपना पदन में भोजपुरी के खूब प्रयोग कइले बा। बाकिर ओह लोग का बाद बीच-बीच में भोजपुरी कवि के क्रम टूटि जाता आ कबीरदास का बाद उनही के सम्प्रदाय के धर्मदास आदि कवि लोग सर (स्वर) भंग सम्प्रदाय के कवि लोग, सखी सम्प्रदाय के कवि लोग लगातार होत गइल बा जवना के क्रम नइखे टूटत। एही से भोजपुरी के आदिकवि कबीरदास मानल गइल बाड़न।

भोजपुरी के अइसन प्रभाव बा कि जे कवि एकरा शरण में आई ऊ देशे में ना विदेशो में इज्जत पाई। तुलसीदास आपन रचना रामचरितमानस अवधी में लिखलें

आ अऊरी कुल ग्रन्थ ब्रजभाषा में। बाकिर अवधी भाषा जब भोजपुरी का शर
गइल त रामचरितमानस विश्वविख्यात हो गइल।

मानस के एगो भोजपुरी चौपाई देखीं—

'हमहूँ कहब अब ठकुरसुहाती। नाहीं त मौन रहब दिन राती।'

केकरा भोजपुरी ले तुलसीदास के ई भोजपुरी कमजोर बा ?

अइसन भोजपुरी के आदिकवि कबीरदास से "गुरुनानक का भेंट संवत् १५
में भइल रहे। ई बात रेवेरेण्ड बेस्टकाट लिखले बाड़न। इनका मुताबिक गुरुना
अपना सताइसवाँ बरिस में कबीरदास से भेंट कइले रहलन।"[1]

कबीरदास के प्रिय शिष्य धर्मदास, कबीरदास का निधन का समय उनका
रहलें। इनका अनुसार कबीरदास के निधन सं० १५६९ में भइल रहे। एह बात
धर्मदास स्वयम् लिखले बाड़न—

संवत् पन्द्रा सौ उनहत्तरा आई।
सत्गुरु चले उठ, हंसा ज्याई॥

एह तरह से कबीरदास ११६ वर्ष का उम्र तक जिअले।

हिन्दू धर्म के एह विशिष्ट कवि से हिन्दू भाई लोग जनम-जनम तक वे
उपनिषद् में वर्णित अध्यात्म के शिक्षा लेत रही ई हमरा उम्मीद बाटे।



---

१. श्री कुलदीप नारायण राय 'झड़प' के निबन्ध कबीरदास : के, कहाँ के ? से

भोजपुरिया गाँव के दुलरुआ बेटा देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद

बात ८ मई १९६२ के हवे। जब हम श्री सन्त कुमार वर्मा के लिखल आ साहित्य परिषद् सीवान से प्रकाशित पुस्तक 'श्री ब्रजकिशोर प्रसाद' आ 'मौलाना मजहरूल हक' परिषद् के सचिव का हैसियत से लेखक का साथे तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू का हाथ में समर्पित करे गइल रहनीं। राष्ट्रपति-भवन का जवना कक्ष में पुस्तक समर्पण समारोह भइल ओइ में रेशमी कपड़ा पर खूब सुन्दर कलात्मक ढंग से लिखि के देवाल पर टाँगल रहे—'हारिए न हिम्मत विसारिए न हरिनाम, जाही विधि राखे राम वाही विधि रहिए।'

पन्द्रह मिनट के समर्पण-समारोह के बाद जब राष्ट्रपतिजी उठिके चल गइनी तब हमार नजर परल ओह तुलसी बानी पर। अबले त ई नजर खाली राजेन्द्रे बाबू के नूँ देखत रहे। हमरा बुझाइल ई सूक्ति भारतीय राष्ट्र के सफलता के प्रेरक एगो सबल मंत्र बाटे जवन राष्ट्रपति भवन से प्रसारित-प्रचारित होता। ई मन्त्र उत्साहवर्द्धक बाटे, ईश्वर का प्रति आस्था आ भारतीय ढंग से जीए के प्रेरणा देता।

तबे नूँ अइसन लागल ई मन्त्र खाली राष्ट्रपति जी खातिर नइखे, ई त सउँसे भारतीय राष्ट्र का नागरिक खातिर एगो राष्ट्रीय मन्त्र बाटे।

राजेन्द्र बाबू भारतीय संस्कृति, संस्कृत, भारतीय सदाचार आ भारतीय शालीनता के सर्वोत्तम प्रतिनिधि, सजग पहरेदार रहनीं।

राजेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व अइसन रहे जे हरदम आगही रहत रहनीं। कलकत्ता का छात्र-समाज में आदर्श छात्र, वकील बनिके जब धन कमाए लगनी तबो आदर्श वकील, गाँधीजी का भक्त लोगन में अपना त्याग आ निष्ठा का चलते सर्वश्रेष्ठ गाँधीमार्गी, राजनीति में सबसे आगे राष्ट्रीय संगठन का रचनात्मक काम में सबसे आगे, १९३४ में बिहार का भूकम्प का दुर्दिन में समाज-सेवा में सबसे आगे, तबे नूं भूकम्प पीड़ित सहायता समिति के अध्यक्ष का नाते जब देश से मदद खातिर अपील कइनीं त देश के धनी-मानी लोग आपन खजाना खोलि दिहल। ओह घरी ई साबित हो गइल जे पूरा देश के विश्वासपात्र राजेन्द्रे बाबू बानीं।

भीतर-बाहर दूनू से राजेन्द्र बाबू एगो किसान जइसन लागत रहनीं। उहाँ के चेहरा, केहू से मिले-जुले के उहाँ के तौर-तरीका, पोशाक, सब कुछ किसाने जइसन लागत रहे।

उहाँ के देखते केहू समझ सकत रहे जे भारत किसान के देश हवे। ओकर सच्चा प्रतिनिधि आ प्रतीक राजेन्द्र बाबू बानीं।

इहाँ के सबसे बड़ विशेषता रहे—अजातशत्रुता। केहू से कबो बिगाड़ ना भइल। सन्त के ई लक्षण राजनीतिक लोग में बिरले पावल जाला।

स्वराज्य के गाड़ी चलावे के भार जब जवाहरलाल जी अपना हाथ में लिहनीं त उनकर सब तरह से सहायक बने के नाजुक भार राजेन्द्र बाबू सकरनी आ सचहूँ भीष्म पितामह अइसन सबके सम्हाल के, देश-परदेश के लोगन का साथे सम्बन्ध बढ़ावत जवाहरलाल जी के हाथ मजबूत कइल इहें के काम रहे।

हमरा त ई बुझाता—राजेन्द्र बाबू का राष्ट्रसेवा के सबसे नीमन अवसर उहे रहे जब राष्ट्रपति का रूप में भारतीय संस्कृति के रक्षा कइनीं आ भारत सरकार का समन्वयकारी तटस्थ नीति के बड़ा खूबी आ योग्यता से सम्हलनीं।

राष्ट्र के तीन गो अंग हवे—भूमि, भूमि पर बसल जन आ जन के संस्कृति। एह तीनूं के रक्षा खातिर उहाँ का समर्पित रहनीं। तवे नूं सरोजनी नायडू कहले रहली—'बाबू राजेन्द्र प्रसाद के भव्य व्यक्तित्व के बारे में स्वर्ण लेखनी को मधु में डुबोकर लिखना होगा।'

राष्ट्रपति पद पावे का पहिले जवन सरलता उहाँ में रहे तवन राष्ट्रपति भइला का बादो बनल रहे। अन्तर एतने रहे जे पहिले जवना स्वतन्त्रता से सबसे मिलजुल लेत रहनी तवन राष्ट्रपति भइला पर छिना गइल। एह खातिर उहाँ का मन में कुढ़न रहे, बाकी पद-मर्यादा का लेहाज से बड़ा शालीनता का साथे ओह इच्छा के दबा देत रहनीं। तवो अवसर पाके राष्ट्रकर्मी लोग से मिले खातिर कबो-कबो ऊ बन्धन तूरि देत रहनीं।

राजेन्द्र बाबू के सरलता, सहृदयता, सज्जनता बेजोड़ रहे। केहू जो उहाँ का सम्पर्क में आवे त ओकरा हृदय पर उहाँ का एह गुण के अमित छाप परि जात रहे।

१० मई, १९६२ के राजेन्द्र बाबू राष्ट्रपति पद से सेवानिवृत्त भइनीं। दिल्ली का रामलीलामें मैदान डॉ० राधाकृष्णन् का सभापतित्व में एगो विदाई समारोह

भइल, जवना के रूप बड़ा बड़हन रहे। ई समारोह अइसन मार्मिक प्रसंग में रहे जवन शायद केहू ऐतिहासिके पुरुष का जीवन में आ सकेला। ओह दिन के दृश्य; ओह में भइल बात आजुओ जब याद परेला त मन बेचैन हो जाला। पद-मुक्ति का एह प्रसंग में उहाँ का कुछ बात बड़ा सरल ढंग से विनम्र भाषा में ओतहत बड़ भीड़ का सामने आपन हृदय खोलि के कहले रहनी—'मैं इस पद से मुक्त होते हुए ऐसा अनुभव कर रहा हूँ जैसे पाठशाला से छुट्टी मिलने पर बालकों को प्रसन्नता होती है। अब मैं आजादी से अपनी बात किसी से कह सकूँगा।' एह कथन में अपना के एगो बालक आ राष्ट्रपति भवन के एगो पाठशाला कहिके उहाँ का अपना विनम्रता, उदारता के परिचये भर नइखीं दिहले बलुक राष्ट्रपति-भवन आ राष्ट्रपति-पद के एगो गम्भीर आ दार्शनिक व्याख्या कइले बानीं। एह क्रम में उहाँ का अपना कार्यकाल में भइल त्रुटियन खातिर क्षमा याचना कइनीं। एकरा खातिर जवन वाक्य कहनीं तवन मार्मिक त बड़ले बा एगो सन्त व्यक्ति के हृदयो एइमें साफे झलकता। उहाँ के कथन रहे—'मुझसे यदि कुछ त्रुटियाँ हुई हों तो उनके लिए परमात्मा से तथा आप लोगों से क्षमा चाहता हूँ।' त्रुटि होखे ना बाकी त्रुटि भइल स्वाभाविक बाटे। एह स्वाभाविक बात के सीधा-सादा शब्दन में संकारि लिहल आ अस्वाभाविक तथा अनहोनी बात के प्रयत्न आ पुरुषार्थ से पा लिहल, इहे नूं राजेन्द्र बाबू के दर्शन रहे। बिदाई का अवसर पर चाहे कवनो महत्वपूर्ण काम खतम भइला का प्रसंग में क्षमा मांगल हमरा सांस्कृतिक परम्परा के पुनीत पहचान हवे।

राजेन्द्र बाबू के जीवन में तुलसीदास के ई बानी 'भरतहि होंहि न राजमद, विधि हरिहर पद पाइ।' पूरा तरह से चरितार्थ होत रहे। एही तुलसी के बानी से उहाँ का आपन कथन खतम कइले रहनीं। ओइजा उमड़ल लाखन का तायदाद में जन-समूह राजेन्द्र बाबू का जय के नारा लगावत रहे आ हमरा आँख में लोर छलछला गइल रहे। रहि-रहि के इहे याद परे—'भरतहि होहि न राजमद...। ओह सन्दर्भ में अपना उद्‌घाटन-भाषण में पण्डित नेहरू कहले रहलें—'भारतीय गणतंत्र के ये बारह वर्ष राजेन्द्र युग के नाम से याद किए जायेंगे।' 'हमरा ई बात कबो ना भोर परेला। एह में सच्चाई नूं बाटे।

राजेन्द्र बाबू के शिक्षा भले ही उर्दू-फारसी में भइल होखे बाकी उहाँ का मातृ-भाषा भोजपुरी के, राष्ट्रभाषा हिन्दी के आ भारतीय संस्कृति जवना पर आधारित बा अइसन देवभाषा संस्कृत के उपासक रहनीं। ओह घरी राष्ट्रपति-भवन में भोजपुरियो आपन अलख जगवले रहे। राष्ट्रभाषा का प्रचार-प्रसार खातिर त उहाँ

का बहुत त्याग कइले रहनीं। संस्कृत के महत्व बूझि-समूझि के स्वतंत्र रूप से योग्यता खातिर पढ़नी आ संस्कृतो में योग्य बननीं।

राजेन्द्र बाबू का सम्बन्ध में केहू लेखक चाहे विचारक जब कुछ सोचे लागी त बड़ा कठिनाई में परि जाई, काहे कि परिचय, प्रशस्ति, प्रचार आ प्रतिष्ठा के लो उहाँ का ना रहे। उहाँ का जीवन में मानवता के अइसन सुन्दर आ सांगोपां प्रतिनिधित्व आ विकास भइल रहे जे ऊ लेखक-विचारक कवना-कवना घटना वर्णन करी। हमरो हाल इहे नूँ बाटे। एह तरे उहाँ के जीवन-ज्योति निर्मल निष्कलंक रहि के सूर्य का तरह से हरदम दमकत रही। काश, ओह ज्योति से आ के नेता, पदाधिकारी आ नागरिक लोग प्रकाशित होइत।

आज के समाज गांधी, राजेन्द्र के भुला गइल बाटे। एह समाज के देखला सुनला आ गुनला पर अइसन लागता जे अब देश राष्ट्र के रक्षा भगवाने करिहें अब केहू अवतारिए पुरुष आई त एह पतित देश के सुधार होई। लेखक-विचारक चुप्पी साधि के घुटन के जिनिगी जीअतारे।

ऊ दिन कब आई जब राष्ट्रप्रतीक राजेन्द्र बाबू से प्रेरणा लेके देश के नागरि राष्ट्र का उत्थान में लागि जइहे। स्वार्थपरता, द्वेष, ईर्ष्या, जातीयता का सा आतंकवादी प्रवृत्ति के भुला जइहें आ अनेकता में एकता स्थापित करके भारती स्वतंत्रता कायम रखिहें।

प्रकाशित—'भोजपुरी लोक
दिसम्बर १९८९
लखनऊ

भक्त, कवि, नाटककार, कलाकार आ समाज सुधारक : भिखारी ठाकुर

लोकनाटक आ लोकगीतन के एगो पुरान परम्परा बा। जवना में कुछ के त मौखिक रूप मिलेला बाकि कुछ आजो रचा रहल बा। जो अइसन ना होइत त जात्रा, रामलीला, रासलीला, नौटंकी, नाच, भवई, तमासा, कुचिपुड़ी आदि कुछ फेरबदल का साथे आजो जीवित ना रहित। ओइसहीं जदपि बिआह-सादी में आज फिल्मी तर्जं में नया हिन्दी गीत गावे के रेवाज चल रहल बा तबहुँओ विधि-विधान में ऊहे परम्परावादी लोकगीत (देवता-पितर के गोहरावन, झूमर, सोहर, अपटौनी, जनेऊ-गीत, कोहबर आदि) के परिपाटी बा।

भिखारी ठाकुर अपना लोकनाटक आ लोकगीतन में एह दूनों रूप के बीच पड़त रहस। याने ऊ ना त परम्परावादी नाटक कइलन ना गीत गवलन बलुक सबके रचना तबके समस्या आ विषय देखत कइलन बाकि ओकर रूप ना त बेलकुल अद्यतन रहे ना बेलकुले पुरान। ऊ भाषा भोजपुरी अपनइलन जवन लोकभाषा हटे आ शिल्पो लोके साहित्य से लेलन।

अइसन भिखारी ठाकुर के जनम पूस महीना के शुक्ल पक्ष पंचमी संवत् १९४४ वि० के भइल रहे। दिन सोमार रहे आ समय दिन के बारह बजे। अंग्रेजी तिथि १८ दिसम्बर १८८७ पड़त रहे आ फसली संवत् १२९५। ऊ लिखलहूँ बाड़न—

"बारह सौ पंचानवे जहिया। सुदी पुस पंचमी रहे तहिया।
राज सोमार ठीक दुपहरिया। जनम भइल ओही घरिया॥"

जन्म-स्थान बिहार में सारन जिला के कुतुबपुर गाँव ह जे उनका जनम के एक साल पहिले ले आरा में पड़त रहे। आ बाद में बाढ़ के कटाव का वजह से सारन में चल आइल आ आजो बा।

भिखारी ठाकुर के पिता के नाम श्री दलसिंगार ठाकुर रहे, माता के श्रीमती शिवकली देवी आ पत्नी के श्रीमती मतुरना। ऊ दू भाई रहस— बड़ भिखारी ठाकुर आ छोट—बहोर ठाकुर। ऊ नाऊ जाति में पैदा भइल रहस।

भिखारी के शिक्षा-दीक्षा ना के बराबर भइल रहे। आजो उनकर पाण्डुलिपि कैथी लिपि में लिखल मिलेला। ऊ टो-टा के रामायण बांचस बाकि उनका पले लेखन के मौलिक शक्ति रहे।

गाय चरावल, चिट्ठी पहुँचावल आ हजामत बनावल उनकर पहिले के पेशा रहे। जादे कमाये का नीयत से आ पारिवारिक कलहो से ऊ खड़गपुर (बंगाल) भाग गइलन। जहाँ गइल त रहस जातीय पेशा कके दाम कमाये बाकि मेदनीपुर में रामलीला देख के उनका भीतर के कलाकार जाग गइल। ऊ उहाँ से आषाढ़ महीना में रथयात्रा देखे जगन्नाथपुरी गइलन जहाँ चन्दन तालाव नहाके ठाकुरजी के दर्शन कइला का बाद समुन्दर में उठत-गिरत लहर भर हीक निहरलन आ डेरा आके साथी से मांग के रामचरितमानस पढ़े-समुझे के कोशिश करे लगलन। धार्मिक भावना के एह तरह से शुरूआत भइल। अब तक ले उनकर उमिर तीस पर पहुँच चुकल रहे। ऊ घरे आके गाँव पर रामलीला करे लगलन फेर नाचमण्डली बनवलन आ बाप-मतारी से चुपे-चुपे साटा लिखावे लगलन। उनकर मण्डली उनका अन्दर के भौतिकता के कारण चल निकलल। ऊ एके आजीविका के साधनो बनवलन आ सुधार के हथियारो।

अपना बचपन से लेके नाच-मण्डली बनवला तक के बारे में ऊ साफ-साफ लिखले बाड़न—

"नौ बरस के जब हम भइलीं, विद्या पढ़न पाट पर गइलीं
वर्ष एक तक जबदल मती, लिखे ना आइल राम गती।
मन में विद्या तनिक न भावत, कुछ दिन फिरलीं गाय चरावत।

× × ×

जब कुछ लगलीं माथ कमाये, तब लागल विद्या मन भाये।
माथ कमाईं नेवती चिट्ठी, विद्या में लागल रहे डीठी।
बनिया गुरु नाम भगवाना, उहे ककहरा साथ पढ़ावा।
अल्पकाल में लिखे लगलीं, तेकरा बाद खड़गपुर भगलीं।

× × ×

गइलीं मेदनीपुर के जिला, ओही जे कुछ देखलीं रामलीला।
ठाकुर दुबरा उहाँ से गइलीं, चनन तालाब समुद्र नहइलीं।
दर्शन करि डेरा पर आईं, खोलि पोथी देखलीं चौपाई।
फुलवारी में जगह बुझाइल, तुलसीकृत में मन लपटाइल।

× × ×

घर पर आके लगलीं रहे, गीत-कवित कतहूँ केहू कहे।
अरथ पूछि-पूछि के सीखीं, दोहा छन्द निज हाथ से लिखीं।
शादी-गवना रहुए भइल, लीखे में पहिले भो पर गइल।
साधु पण्डित के दिग जाहीं, सुनि श्लोक होंकी मनमाही।

× × ×

निजपुर में करि के रामलीला, नाच के तब बन्हलीं सिलसिला।
बरजत रहलन बाप मतारी, नाच में तू मत रह भिखारी।
तनिको आवे ना गावे बजावे, काहे दो लागल लोग के भावे।

× × ×

नाच-मण्डली के धरि साया, लेक्चर दिहीं जै कहि रघुनाथा।
राम शब्द जय जब तब कहिके, सभा खुश करीं बाच में रहिके।
एह पापी के कवन पुन्न से; भइल चहुं दिसि नाम।
भजन भाव के हाल न जनलीं, सबसे ठगलीं दाम।"

भिखारी ठाकुर सबसे पहिले 'बिरहा बहार' नामक पुस्तक के रचना कइलन जे गीत आ संवाद में बा। इहे उनकर पहिलका नाटक रहे आ गीत पुस्तक। बाद में "नवीन बिरहा" नाम से उनकर एगो किताब निकलल। उनका गीतन के दोसर पुस्तकन के नाम बा--भिखारी हरिकीर्तन, नाई बहार, श्रीनाम रत्न, रामनाममाला, भिखारी शंका समाधान, जयहिंनू खबर, नर नव अवतार आदि आ नाटकन के नाम बा--

बहरा बहार (बिदेसिया), कलियुग बहार (पियवा निसइल), गंगा स्नान, बेटी वियोग (बेटी बेचवा), भाई-विरोध, पुत्र-वध, विधवा विलाप, राधेश्याम बहार, ननद भउजाई आ घिचोर बहार (गबर घिचोर) आदि।

भिखारी लगभग २८ किताबन के रचइता बतावल जालन जवना के प्रकाशन १९३८ ई० से १९६२ ई० के बीच भइल बा। सब किताब सस्ता आ फुटपाथी बा जवन मेला-ठेला में बिकाला। प्रकाशन या त छपरा से भिखारी ठाकुर अपने करवले बाड़न ना त जादे पर सकलियां (हवड़ा) लिखल बा। बबुए लाल ठाकुर, कचौरी गली, बनारसो से उनकर किताब निकलल बा।

एने आके उनका १० नाटक के दू खण्ड में स्तरीय प्रकाशन भिखारी ठाकुर ग्रन्थावली खण्ड १-२ के रूप में उनका जन्म-स्थान पर स्थापित लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर, कोरवा रामपुर (सारन) से सर्वश्री अविनाश-चन्द्र विद्यार्थी, नागेन्द्र प्र० सिंह, प्रो० तैयब हुसेन पीड़ित आदि सम्पादक मण्डल के सम्पादन में भइल ह।

स्फुट रचना आने स्वतंत्र कवितन के अइसन ग्रंथ-रूप में प्रकाशन अभी बाकी बा।

अपना गीतन में भिखारी भक्ति-संबंधी पद लिखले बाड़न जवना में राम, कृष्ण, शिव, भवानी, गंगा आदि हिन्दू-समाज में स्थापित देव-देवी-बन्दना बा।

कुछ स्थानीय देवता-पितर के स्तुतियो लिखाइल बा। राम आ कृष्ण के भक्ति कीर्त्तन शैली में मिलेला जवना में राम के बिआह प्रसंग लेल गइल बा आ कृष्ण के यशोदा-सखी-संवाद प्रसंग।

समाज-सुधार जइसे वर्ण-व्यवस्था के बुराई, बाढ़ के प्रकोप, हिन्दू-मुस्लिम एकता के बात, बूढ़े लोग के कठिनाई आ ताड़ी के कुपरिणाम से संबंधित गीतो मिलेला।

गीतन के तिसरका वर्ग शृंगार गीतन के बा। शृंगार के दूनों पक्ष संयोग आ वियोग लेले। बाकि जादे सफलता उनका वियोग गीत में मिलल बा।

नाटकन के विषय अधिकतर सामाजिक आ पारिवारिक बा। एह माध्यम से समाज-सुधार के प्रयास लउकता। जइसे 'बिदेसिया' में--गवना करा के मेहर के देहात में छोड़ कलकत्ता कमाये के लचारी आ उहाँ शहरी औरत के फन्दा में फँस के जिनगी तबाह क लेवे के बात बा कि फेर बटोही के समुझवला पर अपना घरे लवट आवे आ दूनो मेहर सुख से रहे लागे के बात।

'पियवा निसइल' में—नसा के लत से घर-परिवार के बर्बादी। 'बेटी बेचवा' में--गरीबी गुने तिलक ना जुटला से बेटी दादा के उमिर के हाथे बेच देवे के लचारी। 'गंगा स्नान' में—ढोंगी साधु से ठगाएल। 'पुत्र-वध' में—गहना के लालच में बेटा के हत्या। 'विधवा-विलाप' में—धन खातिर मुसमात के मारे के मनसा। 'भाई-विरोध' में—कुटनी के लहरा से टूटत संयुक्त परिवार आ 'घिचोर बहार' में बेटा पर मतारी, बाप आ प्रेमी के अधिकार के सवाल आदि।

एह सब में 'बिदेसिया' भिखारी के सबसे लोकप्रिय नाटक ह जेहसे ऊ अमर हो गइलन आ आजो ओइसन पार्टी के लोग बिदेसिया के नाच कहेला। 'घिचोर बहार' उनकर अन्तिम आ सबसे पोढ़ नाटक बतावल जाला।

ऊ नाटक का बीच-बीच में गोंड़, नेटुआ, धोबी आदि के नाचो के नकल देखावस। एकरा अलावे ऊ एगो कुशल अभिनेता, निर्देशक आ संयोजक रहस। उनका मण्डली में अनुशासन रहत रहे। ऊ कबो अश्लील प्रदर्शन कके मर्यादा भंग ना कइलव।

भिखारी ठाकुर के महत्व एही से आंकल जा सकेला कि जिनिगिए में उनकर नाम चारो ओर फइल गइल रहे। उनका प्रदर्शन में अतना भीड़ जुटे कि पुलिस के इन्तजाम करे के पड़े। टिकिट लागे। भोजपुरी क्षेत्र से बाहरो कलकत्ता, आसाम, नेपाल, सिंगापुर आदि में उनका के ले जावल गएल।

अंग्रेज उनका के रायबहादुर के खिताब देलन। बिहार सरकार अपना राज्य-पाल श्री अनन्त शयनम् अयंगार के हाथे ताम्र-पत्र से सम्मानित कइल आ 'विदेसिया' नाम से दोसरा कहानी पर बनत फिलिम में इनका के छोट भूमिका देके इनका नाम के लाभ लेवल गइल काहे कि भिखारी आ बिदेसिया अब तकले एक-दोसरा के पर्याय बन चुकल रहे।

पं० राहुल सांकृत्यायन उनका के भोजपुरी के शेक्सपियर आ अनगढ़ हीरा कहलन। जगदीशचन्द्र माथुर भरतमुनि के परम्परा में। श्री महेश्वर प्रसाद (बाद में महेश्वरा-चार्य) के उनका पर 'जनकवि भिखारी' आ भिखारी' नाम से दूगो किताब छपल आ प्रो० तैयब हुसेन पीड़ित त उनका व्यक्तित्व आ कवित्व पर शोध कके पी. एच. डी. के उपाधि पा चुकल बाड़न।

उनका आ उनका रचनन पर प्रकाशित लेख के बहुत बड़ संख्या होई जवना के क्रम आजो जारी बा।

अइसन करत भिखारी के ८४ बरिस के उमिर में १० जुलाई, १९७१ ई० शनिवार के दिन अपना जन्म भुई पर स्वर्गवास हो गइल।

ऊ भविष्यवाणी कर चुकल रहस—

"कहत भिखारी शनिचर के दिन होई, सउँसे गाँव के बटोर।"

उनकर भविष्यवाणी इहो रहे—

"अबहीं नाम भइल बा थोरा, जबई छूट जाई तव मोरा।
तेकरा बाद पचास बरीसा, तेकरा बाद बीस दस तीसा।
तेकरा बाद नाम होइ जइहन, पण्डित, कबि, सज्जन यश गइहन।
नइखीं पाठ पर पढ़ल भाई, गलती बहुत लउकते जाई।"

भिखारी के वाणी साँच होखत बुझाता। उनका उदाहरण आ समाज सेवा पर सिर अपने आप झुक जाता। ओ महान के शत्-शत् प्रणाम।



राहुलजी, उनकर बहुमुखी विचार आ काम

प्रकाण्ड विद्वान, छत्तीस भारतीय आ विदेशी भाषा के जानकार, पुरातत्व आ इतिहास के अनुसंधानकर्त्ता, बौद्ध आ मार्क्सवादी विचारक आ एक नम्बर के घुमक्कड़ व्यक्तित्व के नाम ह—महापण्डित राहुल सांकृत्यायन।

राहुलजी के जनम ९ अप्रैल १८९३ ई० के उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिला स्थित पन्दाहा गाँव में भइल रहे। पन्दाहा उनकर ननिहाली गाँव रहे जहाँ उनकर मतारी कुलवन्ती रहत रहस। राहुलजी के पिता के नाम गोवर्द्धन पाण्डेय रहें आ पिता के गाँव के नाम कनैला।

राहुलजी के बचपन के नाम केदार रहे। उनकर नानाश्री रामायण पाठक एगो पुरान फौजी अफसर रहस जेकर घर में त दबदबा रहे बाकिर अपना नाती केदार के ऊ खूब मानस। उनका के देश-दुनिया के क़िस्सा-कहानी सुनावस, फौज के रोमांचक हाल बतावस। साइत एही प्रभाव से राहुलजी में बचपने से जोखिम उठावे आ देश-दुनिया घूम-घूम के साहसी काम करेके प्रेरणा मिलल।

कहल जाला कि नाना कीहाँ उनका गलती से घीव के बरतन से घीव ढरक गइल। ऊ सोचलन, एह खातिर उनका डाँट सुने आ मार खाये के पड़ी। ऊ बिना केहू से कुछ कहले घर से १९०६ ई० में कलकत्ता भाग चललन। एह घरी उनका उमिर १४ साल रहे। एह घरी से शुरू भइल उनकर घुमक्कड़ी आ स्वाध्याय के जीवन। उनका स्कूली शिक्षा ना के बराबर मिलल रहे बाकि अपने से अध्ययन कके ऊ विद्वता के ओह ऊँचाई पर पहुँच गइलन जहाँ उनका के बड़ा आदर से 'महा-पण्डित' कहल जाला।

स्वाध्याय के अलावा ऊ अपना जिनिगी भर संघर्ष करत रहलन। बइठ के समय बितावे के त जइसे हाले ना जानत रहस। ऊ अपना जीवनी में लिखले बाड़न कि—सेकेण्ड के बात ना बताएब बाकिर मिनट-मिनट के सदुपयोग हम अपना जिनगी में करे के कोशिश कइले बानी।

राहुलजी जब अपना कार्य-क्षेत्र में उतरलन तवना घरी भारत में १९३०-३१ के लगभग महात्मा गाँधी के सत्याग्रह आन्दोलन चलत रहे आ रूस में १९१७ में अक्टूबर क्रान्ति हो चुकल रहे जवना के प्रभाव समूचा संसार पर पड़े लागत रहे। राहुलजी के अन्दर एह दूनो घटना के बराबर प्रभाव पड़ल।

राहुलजी तिब्बत से बौद्ध साहित्य एकट्ठा कके भारत लौटत रहस आ त्रिपिटिकाचार्य राहुल सांकृत्यायन कहात रहस। कलकत्ता में सत्याग्रहियन पर लाठी-चार्ज होत देख के उनकर मन सत्याग्रह-आन्दोलन में सामिल होखे खातिर जोर मारे लागल।

२५ जनवरी, १९३१ ई० के ऊ छपरा अइले आ कांग्रेस में भरती होके सत्याग्रह में सामिल हो के जेल चल गइलें। बाकिर जल्दिए उनकर मन दुखियन के सेवा करे खातिर ललचाये लागल। ऊ स्वामी सहजानन्द सरस्वती के सान्निध्य में किसान—आन्दोलन में पिल पड़लें। १९३९ में जब उनका सहयोग से अमवारी (सिवान) में जमीन्दारन के खिलाफ किसान आन्दोलन भइल आ जमीन्दारन के लठैत राहुलजी के कपार फोड़ देहलेसँ। एह घटना के साहित्य आ राजनीति जगत में बहुत प्रतिक्रिया भइल। प्रि० मनोरंजन कविता लिखलन—

"राहुल के सिर से खून गिरे फिर क्यों वह खून उबल न पड़े?
साधु के शोणित से फिर क्यों सोने की लंका जल न उठे।"

१९३९ में राहुलजी रामवृक्ष बेनीपुरी के सम्पादन में निकलेवाला पत्र 'जनता' से किसानन के दयनीय दशा पर खूब हिन्दी में लिखा-पढ़ी कइले रहस। फेर जइसे बुद्ध पाली भाषा में उपदेश करस जवन तवके लोकभाषा रहे, ओइसहीं राहुल जी संस्कृत आदि विद्वत् भाषा के परित्याग कके भोजपुरी अपनवलन आ किसान—मजदूर आ आम जनता खातिर भाषन से लेके लेखन तक सारा काम भोजपुरी में करे लगलन। समाज में बेटा-बेटी में फरक होत देख के ऊ लिखलन—

"एक माई-बापवा के एक ही ओदरवा से
दूनू के जनमवा भइल रे पुरूषवा।
बेटा के जनमिया में नाच अउर सोहर होये
बेटी के जनमवा में सोग रे पुरूषवा।"

एही क्रम में ई आठगो भोजपुरी नाटक लिखलें जवना में पूंजीवादी व्यवस्था के आ समाज में फइलल कुरीतियन के विरोध बाटे।

राहुल जी अखिल भारतीय किसान सभा के अध्यक्षो भइलें आ बिहार में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नीव डालेवालनों में उनकर गिनती होले। कम्युनिस्ट भइला खातिर उनका के तवके भारतीय कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार कके देवली कैम्प जेल में डाल दिहल गइल रहे। जेले में ऊ तबके बड़-बड़ कम्युनिस्ट नेतन के सम्पर्क में अइलन। जेल-जीवन में ऊ मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होके

कइगो किताब लिखलन जवना में विश्व की रूपरेखा, मानव समाज, वोलगा से गंगा, दर्शन-दिग्दर्शन, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद आदि बहुते महत्त्वपूर्ण बा।

राहुलजी १८४८ में मार्क्स-ऐंगल्स लिखित कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणा-पत्र के आचार्य नरेन्द्रदेव का साथे १९३१ में पहिला बेर हिन्दी अनुवाद कइले आ कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल मेंग ावल जायेवाला गीत—'उठ जाग ओ भूखे बन्दी, अब खींचो लाल तलवार' के अनुवाद भोजपुरी में कइलें—

"उठ उठ रे ते भूख-बन्हुआ उठ रे धरती के अभगवा
बा न्याय बजर छहरावत, जनमत बढ़िया संसरवा
पुर्रबिज फेनु नाहीं बान्हीं, उठ रे अब नहि ते बन्हुआ
नई नेंव उठत बा जगवा, ना रहलें अब सब होयबे
आ जुटहू संघतिया समूहे ई आखरी बेर लड़इया
गाई इन्टरनेशनल, स्वतन्त्र होखे के गान।"

एतने ना, जब क्षेत्रीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन सीवान में २ मार्च, १९४७ ई० के भइल त ओही साल दिसम्बर में दोसरको अधिवेशन गोपालगंज में बड़ा धूमधाम से भइल। एह दूसरका अधिवेशन के अध्यक्ष महापण्डित राहुल सांकृत्यायन रहनीं आ ओह घरी अध्यक्ष पद से जवन ऊ भाषन कइलन तवन भोजपुरी खातिर आजो ऐतिहासिक बा। जइसे कुछ सामयिक अंश ई रहे—

"अबहिन हमनी के ई मतारी भाखा के केहू ना पूछत-आछत बा, लेकिन केतिक दिनवाँ हो केतिक दिनवाँ। हमनी के देस के दिन लौटल। लोग सचेत भइल। उहो दिनवा आई जब हमनी के भाखवा सरताज बनी। एक करोड़ से अधिक बंका जेकर पूत, ऊ भाखवा केतना दिन ले एतरह भिखमंगिन बनल रही। हिनुई हमनी के बड़की माई ह, ओकरा से नेह तूरे के काम नइखे। दूसरा जगह केतना भाई समझत बा, जे हमनी के भाखवा के जे पूछार होए लागल त हिनुई के बड़ लोकसान होई। तब लोग खाली अपने भाखवा में लिखे-पढ़े लागी, अउर हिनुई के केहू ना पूछी। हिनुतान हमनी के देस, हमनी के बड़का देस के भाषा हिनुई, भला ओकर पूछ कै न करी। हिनुई के राज समूचा हिनुतान में रही। ओकरा के हटावेवाला केहु ना जनमल बा। हमनी के बोली छपरा, बलिया, चऊपारन अउर आरे जिला में त बटले बा, बनारसो के बोली में बहुत कम फरक बा।

कुल मिलवला पर चउपारन, सारन, साहाबाद, पलामू आ थोर बहुत राँची में हमनिये के बोली बोलल जाले। ओने बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़, गोरखपुर,

देवरिया समूचा अऊर जवनपुर, मिरजापुर में कुछ-कुछ हिस्सा इहे भाषा बोलेला। हमनी के बोली के एगो फरका प्रान्त बने के चाहीं। एकर कवनो मतलब नइखे कि एके बोली बेवहारवाला लोग दू जगह बटल रहे। अंगरेज लोग के बात अउरि रहे। जइसे-जइसे राज दखल होत गइल, अपना काम में जेवन सुबिहिता देखाइल ओइसने ऊ लोग बँटवारा कइलस। आजिकल के जमाना में छिटपुट रहला से काम ना चले के बा। कल-कारखाना नहर बिजुरी के भारी पसार होखेवाला बा। हमनी के पच्छिम के प्रान्त में पूरबवाला जिला बलिया, देवरिया ओगरह के पूछार सबसे पाछे होले। पहिलहूँ से इहे होत चलत आइल बा आ आगहूँ इहे होई। आपन फरका प्रान्त भइला पर अपना घर के सोलहो आना मालिक-मुखतार हमनिये होइब, फेनु कुलि अपनहीं मन के मोताबिक होई। हमनी के आपन पंचायती राज प्रजातंत्र कायम करे के चाहीं। हमनी के बोली में केतना जोर हवे, केतना तेज बा, ई अपने सब भिखारी ठाकुर में देखीलें। लोग के काहे नीमन लागेला भिखारी ठाकुर के नाटक। काहे दस-दस, पनरह-पनरह हजार के भीड़ होला, इ नाटक देखे खातिर। मालूम होता कि एहीं नाटक में पबलिक के रस आवेला।

जवना चीज में रस आवे उहे कविताई। केहुके जो लमहर नाक होय आ ऊ खाली दोसे सूँघत फिरे त ओकरा खातिर का कहल जाय। हमनी के बोली के अबहीं ढेर के ढेर गीत छितरायल पड़ल बा। कुलि नीमन नीमन कविताई के छाप देवे के चाहीं। ई एगो बड़का काम पड़ल हवे, ना कइला से हमनी के नाती-पनाती गारी दीहें काहे से कि ओमे से केतना नीमन भोर परल जाता।"

राहुलजी भोजपुरी के ओकरा बोलेवालन आम आदमी के उच्चारण के मोताबिक लिखे के पक्ष में रहस। उद्धृत अंश में इहो बात ध्यान देबे लायक बा।

कुछ दिन एकमा (सारन) के नजदीक परसागढ़ में राहुलजी कवनो महंत के चेला होके फेर खुदे रामोदार बाबा के नाम से महंथ बन गइल रहस। एह तरह संन्यासी, आर्यसमाजी, बौद्ध होते ऊ कम्युनिज्म तक के यात्रा कइलें। ऊ लिखलहूँ बाड़े—"आर्यसमाज के स्वतंत्र विचारों के बाद मैं बुद्ध के पास पहुँचा और उनके अनीश्वरवाद, विचार स्वातन्त्र्यवाद, आर्थिक समतावाद से बहुत प्रभावित हुआ। उसके बाद मार्क्स के विचारों को अपनाना मुझे बिलकुल स्वाभाविक मालूम हुआ।"

परिवार बसावहूँ में घरेलू पत्नी के बाद जहाँ गइलन उहँहीं शादी कके रहे में विश्वास कइलन। एह तरह से कमला, जया, जेता, लोला अउर इंगोर आदि देशी-विदेशी पत्नियन आ सन्तातन के छोड़ के १३–४–१९६३ ई० के राहुलजी उहाँ पहुँच गइलन जेके मउअत कहल जाला आ जहाँ राजा-रंक सभे एक भाव बिकाला। जहाँ सचहूँ समाजवाद बा। □

बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'

भोजपुरी के एगो समर्पित साहित्यकार

भोजपुरी भुँई पर जनम लेके अपना महतारी भाषा खातिर अपना के पूरा तरह से निछावर क देबेवाला सपूतन में बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंहजी के नांव आदर का साथे लिहल जाला। अपना पचहत्तर बरिस के जिनिगी में दुर्गाशंकर बाबू भोजपुरी आ हिन्दी के करीब दू दर्जन से अधिक पुस्तकन के रचना कइनीं, बाकिर भोजपुरी में आ भोजपुरी से सम्बन्धित जवना पुस्तकन के लिखके उहाँ का भोजपुरी साहित्य का इतिहास में अपना नाम सोना के उच्चारन में लिखववनीं, अइसन पुस्तकन के संख्या करीब एक दर्जन बा। एहमें भोजपुरी के कविता, नाटक, आलोचना, इतिहास आदि विधा पर लिखल पुस्तक बाड़ीसँ। बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहीं दुर्गाशंकर बाबू। एही से एक ओर जहाँ 'भोजपुरी लोकगीत में करुण रस' आ 'भोजपुरी के कवि और काव्य' जइसन भारी-भरकम पुस्तकन के रचना कके भोजपुरी के लोकगीत आ इतिहास के राह सुगम बनवनीं त दोसरा ओर 'साहित्य रामायण', 'ऐटम के युग में' आ 'गुनावन' लिखके अपना कवित्व शक्तियो के अच्छा परिचय दिहनीं। अइसहीं नाटक आ समीक्षा लिखके भोजपुरी के बढ़न्ती में उहाँ के सेवा बराबर इयाद कइल जाये लायक बा।

दुर्गाशंकर बाबू के जनम विक्रम संवत् १९५३ में मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी सोमवार (दिसम्बर १८९६) के शाहाबाद जिला का दिलीपपुर गाँव में भइल रहे। उहाँ का पिताजी के नांव श्री विश्वनाथ प्रसाद सिंह रहे। उहाँ के पितामह श्री नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह 'ईश' हिन्दी के नामी कवि आ विद्वान रहीं।

दुर्गाशंकर बाबू सन् १९२१ ई० में मैट्रिक के परीक्षा पास कइनी आ सन् १९२२ ई० से हिन्दी साहित्य में प्रवेश कइनीं। आगे चलके भोजपुरी में अनुराग पैदा भइल आ लगातार कलम चले लागल। जवन जीवन के अन्तिम सांस तक पूरा लगन आ निष्ठा के साथ कायम रहल।

दुर्गाशंकर बाबू के भोजपुरी पुस्तकन के विस्तार से चर्चा करे के पहिले उहाँ के हिन्दी पुस्तकन के संक्षेप में चर्चा कइल अप्रासंगिक ना होई। हिन्दी के जानल-मानल यशस्वी साहित्यकार आ सम्पादक आचार्य शिवपूजन सहायजी उहाँ के साहित्य सेवा के चर्चा करत लिखले बानी—

"लेखक की हिन्दी सेवा के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त है कि वे बीसवीं

सदी के दूसरे चरण के प्रवेशकाल से ही बराबर साहित्याराधन में लगे हुए हैं। इनकी दस हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित हैं—

१. ज्वालामुखी··· ··· ··· ··· ·· ··· ···गद्यकाव्य
२. हृदय की ओर··· ··· ··· ··· ··· ···उपन्यास
३. वह शिल्पी था··· ··· ··· ···· ··· ···कहानी
४. तुम राजा मैं रंक · ··· ··· ··· ··· ·· कहानी
५. भूख की ज्वाला··· ··· ··· ··· ··· ···राजनीतिक निबन्ध
६. गद्य संग्रह
७. भोजपुरी लोकगीत में करुण रस
८. नारी जीवन साहित्य
९. फरार की डायरी
१०. कुँअर सिंह··· ··· ··· ··· ···एक अध्ययन।

लगभग एक दर्जन हिन्दी रचनाएँ अप्रकाशित हैं।"

ऊपर लिखल पुस्तकन में कुछ भले हिन्दी में बा बाकिर विषय के दृष्टि से ई भोजपुरिये साहित्य के बढ़न्ती करेवाला बा। अइसन प्रकाशित पुस्तकन में 'भोजपुरी लोकगीत में करुण रस' आ 'भोजपुरी के कवि और काव्य' बहुत महत्त्वपूर्ण बा। एकरा अलावा भोजपुरी एक समीक्षा आ 'भोज भोजपुर और भोजपुरी प्रदेश' नाँव के पुस्तकन से भोजपुरी से सम्बन्धित विषयन पर पूरा जानकारी मिलत बा।

भोजपुरी से सम्बद्ध ऊपर लिखल पुस्तकन के नीचे कुछ विस्तार से विचार कइल जरूरी बा।

१. भोजपुरी लोकगीत में करुण रस- दुर्गाशंकर बाबू के लिखल ई पहिलका पुस्तक सन् १९४४ ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से प्रकाशित भइल। एकर दोसरका संस्करण सन् १९६५ ई० में संशोधित आ परिवर्द्धित होके प्रकाश में आइल जवन ६१४ पृष्ठ के बाटे। एकरा ८२ पृष्ठ का भूमिका में भोजपुरी के उत्पत्ति, प्राचीनता, विस्तार आ विशेषता प्राचीन आ आधुनिक काव्य, लोक साहित्य के विविध अंग, विभिन्न रस आ व्याकरण पर प्रकाश डालल गइल बा। एकरे साथे मालवा का परमार वंश के वंशावली दिहल बाटे जहाँ से बाबू कुँअर सिंह के पूर्वज शान्तनु शाह तेरहवीं सदी में शाहाबाद जिला में आके आपन राज कायम कइलें। एह पुस्तक में ३२६ लोकगीतन का साथे धरतीदास, भिखारी ठाकुर आ महेन्दर मिसिर के कुछ गीत बाटे। लोकगीतन का क्रम में सोहर, जँतसार, झूमर, भजन, बाहरमासा, लाचारी, खेलवना, देवी गीत, पूरबी गीत, कजरी, रोपनी आ निराई के गीत, हिंडोला के गीत का रूप में विविधता पावल जा

सकेला। एह में संकलित गीतन में कहीं-कहीं कुछ हेर-फेर क दिहला से एकरा वैज्ञानिकता में कुछ कमी आ गइलो पर अनेक दृष्टि से एह पुस्तक के महत्त्व बाटे।

२. **भोजपुरी के कवि और काव्य** --ई दुर्गाशंकर बाबू के दोसरका महत्त्वपूर्ण पुस्तक बाटे। लगभग ३०० पृष्ठ के ई पुस्तक सन् १९५८ में 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्' पटना से प्रकाशित भइल। भोजपुरी साहित्य पर विस्तार से प्रकाश डाले-वाली एह पुस्तक में लगभग सवा दू सौ कवियन के परिचय रचना का साथे दिहल बाटे। एह में आठवीं सदी से लेके १९५२ ई० तक के सिद्धनाथपंथी, कबीरपंथी आदि सन्त कवियन का साथे आधुनिक युग का कवियन के रचना दिहल बाटे जबकि दुर्गाशंकर बाबू एह पुस्तक के लगभग तेरह सौ पृष्ठ में तइयार कइले रहीं बाकिर छपाई में असुविधा के ध्यान में रखत दू भाग में प्रकाशित होखेवाला एह विशाल ग्रन्थ के संक्षेप में कके छोट कलेवर में समेटे के प्रयास कइल बा। एकरा मूल रूप कि तइयार करे में लेखक के दीर्घकालीन श्रम आ साधना करेके परल होई, ई कहे में कवनो सन्देह नइखे। ४३ पृष्ठ के विस्तृत भूमिका में भोजपुरी प्रदेश, भाषा, साहित्य आ लोकगाथा का अलावे सुप्रसिद्ध विद्वानन आ डॉ० ग्रियर्सन के भोजपुरी पर शोधकार्य के चर्चा बाटे। एह पुस्तक का महत्त्व के रेखांकित करत वयोवृद्ध साहित्य सेवी आ विद्वान पं० गणेश चौबेजी ठीके कहले बानीं—"एकरा के भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पहिला इतिहास कहल जाय त ई अनुचित ना होई।" डॉ० विश्वनाथ प्रसाद के निर्देशन में ई पुस्तक तइयार कइल गइल। पुस्तक के वक्तव्य में आचार्य शिवपूजन सहायजी लेखक का बारे में लिखले बानी—"इसमें सन्देह नहीं कि लेखक ने इसकी सामग्री का शोध एवं संग्रह में सच्ची लगन के बहुवर्षव्यापी अक्लान्त परिश्रम किया है। भोजपुरी के लिए इनकी निष्ठा और सतत् साधना वास्तव में अभिनन्दनीय है।"

एह दूनू पुस्तकन के अलावे सन् १९६४ ई० में 'भोजपुरी : एक समीक्षा' के प्रकाशन भइल जवना में भोजपुरी क्षेत्र के बहुत अइसन पुरान आ सन्त कवियन का रचनन के जानकारी मिलल, जवना के बारे में बहुत कम मालूम रहल ह। एगो दोसर पुस्तक 'भोज, भोजपुरी और भोजपुरी प्रदेश' सन् १९६५ ई० में प्रकाशित भइल जवना में 'राजा भोज' आ 'भोजपुरी प्रदेश' का इतिहास पर प्रकाश डालल बा।

ऊपर चर्चा कइल चारों पुस्तक हिन्दी में लिखाइल बा जबकि विषय भोजपुरी के समेटले बा। एकरा अलावा दुर्गाशंकर बाबू के लिखल भोजपुरी के महाकाव्य, काव्य आ नाटक के अवलोकन से उहाँ के बहुआयामी व्यक्तित्व के आ मौलिक साहित्य-सृजन क्षमता के पता सहज रूप में लाग जाता। अइसन पुस्तकन में

'साहित्य रामायण' के प्रमुख स्थान बा। एकर किष्किन्धा आ सुन्दरकाण्ड सन् १९६४ ई० में, लंका काण्ड सन् १९६५ ई० में, अयोध्या आ अरण्यकाण्ड सन् १९६७ ई० में प्रकाशित भइल। भोजपुरी के दुभाग्य से दुर्गाशंकर बाबू के अकाल में काल-कवलित हो गइला से एकर बालकाण्ड आ उत्तरकाण्ड ना लिखा सकल। लगभग ८०० पृष्ठ में छपल एह महाकाव्य में अनेक छन्द, रस आ अलंकार के प्रयोग कइल गइल बाटे। एहमें जगह-जगह पर कवि के मौलिक कल्पना का उड़ान के सुन्दरता देखल जा सकत बा।

दूगो आउर काव्य-पुस्तक भोजपुरी में बाटे 'ऐटम का युग में' आ 'गुनावन'। ई दूनू पुस्तक आध्यात्मिक भावभूमि पर आधारित बा। एहसे एकरा के आध्यात्मिक काव्य कहल ज्यादा उपयुक्त होई। 'गुनावन' में छपल कवितन के हिन्दी आ अंग्रेजी में अनुवादो दिहल बाटे।

भोजपुरी में लिखल दुर्गाशंकर बाबू के दूगो नाटक प्रकाशित बा—'बाबू कुंअर सिंह' १९६२ ई० में आ 'न्याय के न्याय' सन् १९६५ ई० में। 'बाबू कुंअर सिंह' ऐतिहासिक नाटक ह, जवना में सन् १८५७ ई० के अदम्य उत्साह आ पराक्रम के बखान बाटे। 'न्याय के न्याय' एगो समस्या प्रधान नाटक ह, जवना में श्री रामचन्द्र के कइल विवादग्रस्त काम पर आधुनिक ढंग से विचार कइल गइल बा।

'भोजपुरी के कवि और काव्य' पुस्तक में दुर्गाशंकर बाबू का परिचय का क्रम में तीनगो पुस्तकन के चर्चा आइल बा—(१) भोजपुरी लोकगीत में शान्त रस, (२) भोजपुरी लोकगीत में शृंगार और वीर रस आ (३) भोजपुरी निबन्ध संग्रह। शायद ई तीनू पुस्तक प्रकाशित ना हो सकल।

दुर्गाशंकर बाबू साहित्य-सेवा के अपना जीवन के व्रत बना लेले रहनीं। तबे नूं भोजपुरी संसद वाराणसी में ७.४.१९६४ में आयोजित कवि सम्मेलन के उद्घाटन भाषण करत कहतारें—"हम त सन् ५७ से ही सभा सोसाइटी में गइल आइल एक तरह से छोड़िए देले बानीं—साहित्य-सेवा में ही समय काटल अपना अन्तिम जीवन के ध्येय मानि लेले बानी। बाकी अपना 'साहित्य रामायन' के छपाई का सिलसिला में कासी जब ठहरे के पड़ल त संयोजक भाई लोग पकड़िये लेल आ हम एह स्नेह के दुरावल भी ना चहलीं, काहे कि अइसन होइत त अपनन के दरसन करे के भागि ना मिलित।"

अपना ओही भाषण में एगो सफल आ समर्पित साहित्यकार के रूप में आपन परिचय देत कहतानीं—

"साहित्य-सेवा आ काव्य-रचना जीवन के तपन के कटुमधु भावन के अनुसीलन, मनन, रसास्वादन के ऊ आनन्द हवे जवना के बरनन भाषा में नइखे कइल जा सकत। ओहके जे अनुभव कर लीही से दुनिया के भुला जाई आ आनन्द का मस्ती में अपने आप पगला जाई।"

× × ×

"साहित्यिक मस्ती कुछ अजीब मस्ती हवे। ई मस्ती जब हासिल हो जाले त भगवत प्रेम के मस्ती के मिठास आपे-आप मिले लागेला आ 'सत्यं शिवम् सुन्दरम्' के रूप दरसाये लागेला। जेही संस्कार में संस्कृत मानव के सदा से जीवन—ध्येय रहल आ आगे भी बनल रही, चाहे भौतिक विज्ञान के ज्ञान जतना भी विकसित हो जाय।

काहे कि भौतिक विज्ञान सरीर सुख के वास्ते नाना विधि से सामान त इकट्ठा कर सकता बाकी अन्तर सान्निध्य, अन्तर आनन्द, अन्तर सुख में साधन त एही सत्यानुभूति के मस्ती में ही बा; जहाँ पहुँच के ही दरसन सास्त्र के सब सिद्धान्तन के समन्वय खुद बा खुद हो जाला।"

× × ×

"जे दुनिया का दुःख से, रोड़ा से, अपना हृदय के जलन में परीसान होके दुनिया के दुःख के मिटावे मात्र का भाव से लेखनी पकड़ल ओकरे लेखनी पकड़ल सफल भइल आ आदि-औलादि तक पढ़ल गइल।"

राष्ट्रभाषा हिन्दी 'रघुवीरी' शब्दन का प्रयोग से जब वोझिल होखे लागल त हिन्दी आम जनता से दूर होखे लागलि। ऊ अब सचिवालय आ विश्वविद्यालय के भाषा मात्र रहि जाई। ई देखि के दुर्गाशंकर बाबू का बड़ा दुःख भइल कि हिन्दी, भोजपुरी, अवधी, मैथिली, मगही आदि क्षेत्रीय वोलियन का शब्दन से भरल-पूरल जाइत तब सामान्य लोग के भाषा रहित। एही से ऊ एगो कविता बनवलें जवना में क्षेत्रीय कुल बोली हिन्दी से प्रार्थना करतारी सन। ई कविता १९६० ई० का आसपास के लिखल हवे—

"सुनी हिन्दी रानि, भगिनी हम राउरि हईं
अवधी ब्रज मैथिली भोजपुरी कहीं राउरि हईं॥
माई के एके कोखी से जनमलीं, बढ़लीं, हँसलीं,
खेललीं, कूदलीं, पनपलीं, बढ़लीं हँसलीं॥
रउरा बर राजा मिलल हमन के भिखारी बाकी,
राजा भिखारी बनल खूब दूनो एके हईं॥

रउरे में विलीन, बानीं आपन तेजि क कीर्ति···
रूप में रउरे नीज रूप 'नाथ' बगरत हुईं ।।

एइजा 'नाथजी' हिन्दी के रानी कहतानीं काहें कि संविधान का अनुसार १९६५ से हिन्दी पूरा तरह से राष्ट्रभाषा बनी जायेके रहे । बाकी १९६३ में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० नेहरू एगो अइसन 'काला विधेयक' संसद से पास करवलें जवना का अनुसार देश के कवनो एको राज्य जबले अँग्रेजी चाहत रही तबले अँग्रेजी पटरानी बनल रही आ हिन्दी ओकर दासी । १९६० में कविता लिखे के समय 'नाथजी' का ई कहाँ पता रहे जे एही स्वतंत्र भारत में हिन्दी दासी बन जाई ।

भोजपुरी के एह सुधी साधक का जीवन के अन्त सन् १९७० ई० का जुलाई में हो गइल t औरंगाबाद जिला में अपना जिरात के काम देखे उहाँ का गइल रहीं । रात के सुतला में उहाँ के निर्मम हत्या हो गइल । एह तरह से भोजपुरी का आसमान में चमकत एगो नक्षत्र हमेशा-हमेशा खातिर तिरोहित हो गइल । अइसन समर्पित साहित्यकार खातिर हमार शत-शत नमन ।



भोजपुरी रतन डा० रामविचार पाण्डेय

बात १९७० के लगभग के हवे जब दर्शन का लालसा से, भेंट का क्रम कुछ जाने-सुने खातिर पूज्य पाण्डेयजी के लगे बलिया गइनी आ आपन इच्छा जाहिर कइनी त पाण्डेयजी बड़ा दर्द भरल आवाज में ई सेर सुनवनी ---

मैं तो चुपके सो रहा था यार तुमने छेड़ दी,
बैठ कर रोने लगा मैं, अब बताओ क्या करूँ ?

एक ओर जहाँ भोजपुरी के विकास देख के पाण्डेयजी का संतोष बा, तहँवे तथाकथित भोजपुरी के महन्त लोग अब भोजपुरी से कमाता जबकि अबहि भोजपुरी से लेबे के जरूरत नइखे, ओकरा के देबे के जरूरत बा एहि बात के कचोट बा।

भोजपुरी के उन्नायक लोगन में जहाँ राहुल बाबा, डॉ० उदयनारायण तिवारी, श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ', आचार्य महेन्द्र शास्त्री, पं० गणेश चौबे के नाँव लिहल जाला, ओही पाँती में डॉ० रामविचार पाण्डेय के नाँव आवेला।

कविवर रामविचार पाण्डेयजी के जनम ३ मार्च १९०० ई० में बलिया जिला का दामोदरपुर (गड़वार) गाँव में पूज्य पिता श्री हरिनारायण पाण्डेय का घर में स्नेहमयी माता श्रीमती रूक्मिणी देवी का कोख से भइल। पाण्डेयजी के बचपन बड़ा लाड़-प्यार में बीतल। इहाँ के प्राथमिक शिक्षा बलिया जिला दलसागर प्राथमिक विद्यालय में शुरू भइल। पाण्डेयजी पढ़े में बड़ा तेज रहनीं। मिडिल स्कूल में इहाँ का प्रतिष्ठा का साथ छात्रवृत्ति पवनीं। प्रवेशिका परीक्षा जिला स्कूल छपरा से १९२० ई० में पास कइनीं। एकरा बाद आयुर्वेद के उच्च शिक्षा खातिर इहाँ का कलकत्ता गइनीं। स्वतन्त्र रूप से संस्कृत के पढ़ाई करत इहाँ का महामहोपाध्याय कविराज गणनाथ सेन सरस्वती से वैद्यक के पढ़ाई शुरू कइनीं। कविराज जी अपना जमाना के नामी-गिरामी विद्वान वैद्य रहनीं। पाण्डेयजी का प्रतिभा से प्रभावित होके कविराज जी के कृपा इहाँ पर बरसि परल। ओह कृपा के फल भइल कि पाण्डेयजी आयुर्वेद के बड़ा गहिर अध्ययन थोरे दिन में क लिहनीं। अध्ययन खतम भइला का बाद कविराज के विचार रहे कि कलकत्ते शहर में ई आपन चिकित्सालय खोलसु बाकी घर का लगे रहल इहाँ का जरूरी समझनी एह से बलिया नगर में १९३० में औषधालय खोलि के रहे लगनी। पाण्डेयजी के चिकित्सा के प्रभाव कुछुवे बरिस में नजर आवे लागल। रोगी के भीड़ बढ़े लागल आ पाण्डेयजी

का आमदनियो खूबे होखे लागल। पाण्डेयजी के ई तरक्की देख के बलिया के कुछ एम. बी. बी. एस. डाक्टर के मन में द्वेष के भाव पैदा भइल। ऊ लोग ई कहके पाण्डेयजी के शिकायत शुरू कइल जे "ई कवनो एम. बी. बी. एस. डॉक्टर नानूं हउअन।" ई बात जब पाण्डेयजी का कान में पड़ल तब इहाँ के आत्मगौरव जाग उठल। तुरन्त इहाँ का आइ. एस. सी परीक्षा दिहनीं, बढ़िया नम्बर से पास कइनीं मेडिकल जाँच परीक्षा में सम्मिलित भइनीं आ चुनाइओ गइनीं। जब दरभंगा मेडिकल कॉलेज में नाँव लिखावे के बात आइल त ऊ कॉलेज इहाँ के ई कहि के हटा देहलस जे "राउर उमर बासठ बरिस के हो गइल बा अब नाँव ना लिखाई।" नियमावली के छानबीन कइला के बाद पता चलल कि मेडिकल कॉलेज में नामांकन खातिर निम्नतम उमर निर्धारित बाटे बाकिर अधिकतम उमर निर्धारित नइखे। इहाँ का घड़ से न्यायालय में मुकदमा क दीहनीं। मुकदमा में इहाँ के जीत भइल आ १९६३ ई० में ६३ वर्षीय एह छात्र के दरभंगा मेडिकल कॉलेज में नाँव लिखाइल। योग्यतापूर्वक एम. बी. बी. एस. डॉक्टर बनके फेरू से बलिया में आपन चिकित्सालय शुरू कइनीं। तबसे एगो प्रतिष्ठित डॉक्टर के रूप में मुए के बेर ले जनसेवा करत रहनी।

पाण्डेयजी के पहिलका विवाह १९२० ई० में भइल। एह विवाह से दूगो सौभाग्यवती बेटी अपना-अपना सन्तान के साथे अपना-अपना ससुराल के शोभा बढ़ा रहलि बा लोग। पहली पत्नी के निधन के बाद दूसरी शादी १९४१ ई० में भइल। एह पत्नी से पाण्डेयजी का कवनो सन्तान त ना भइल बाकिर जीवन बड़ा सुखमय बीतल।

पाण्डेयजी अपना कमाई से स्टेशन रोड बलिया में तिमंजिला भव्य भवन बनवा के बहुत इज्जत-प्रतिष्ठा के साथे रहत रहनीं। बलिये का रामपुर मुहल्ला में लगभग पौने दो बीगहा जमीन में कई किता मकान बनवा के किराया पर देले रहनीं अउर बाकी जमीन में खूब सुन्दर एगो बगीचा बा जवना में पक्का इनार का बगल में लम्बा-चौड़ा चबूतरा बाटे। पाण्डेयजी के विचार रहे ओह चबूतरा पर एगो मन्दिर बनवावे के।

पाण्डेयजी फाइलेरिया के रोगी रहनीं, बहुत दवा कइनीं मेटल ना। स्वामी सत्यानन्दजी का उपदेश से इहाँ का सूर्य स्वाँस में भोजन आ चन्द्रस्वाँस में पानी पीयल शुरू कइनी ओकरा बाद कुछुवे महिना में फाइलेरिया जड़-मूल से खतम हो गइल। तब से पाण्डेयजी के रुचि योगासन आ योगविद्या का ओर विशेष रूप से हो गइल। अंतिमो घरी में इहाँ के भोजन-जलपान सूर्य-स्वाँस आ चन्द्रस्वाँसे में होत रहे।

पाण्डेयजी बहुत उदार विचार के व्यक्ति रहनीं। कवि-सम्मेलन में जाये खातिर छिछला भोजपुरी कवि-लोग तरे कबो आपन फीस ना तय कइनीं। मकान में किरायादार लोग रहत रहे आ दू बरिस-चार बरिस रहला का बादो ओह किरायादार लोग का व्यापार में घाटा पर जात रहे त इहाँ का किराया लेबे ना करीं बल्कि बिजली-पानी के बिलो अपने चुकावत रहनी। उदारता के एगो अउरी उदाहरन लीं। बात १९७० का लगभग के हवे-गोपालगंज के साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम के पितामह पं० सरयू शास्त्री (वैद्य) बीमार का अवस्था में दवा करावे काशी जात रहनीं साथ में बेटा-भतीजा लोग रहे। संजोग के बात बलिया स्टेशन जात-जात शास्त्रीजी के देहान्त हो गइल। अब त बलिया में गाड़ी से लाश उतार लिहल लोग आ ई विचार पक्का हो गइल जे बलिये में गंगा का किनारे दाह-संस्कार क दिहल जाव। शास्त्रीजी गोपालगंज कवि-सम्मेलन में पाण्डेयजी के कई बार बोला चुकल रहनीं। शास्त्रीजी का बेटा का ई बात मन परल आ ऊ पता लगावत-लगावत पाण्डेयजी का निवास स्थान पर पहुँच गइलें। पाण्डेयजी जब ई समाचार सुननीं त तुरन्ते अपना बसवारी से बांस कटववनीं, बगीचा से आम के, अँवरा के लकड़ी कटववनी, बलिया के पचासो साहित्यिक आ समाज-सेवी लोग के बोला के शास्त्रीजी का महायात्रा में सामिल करवनीं। ५-६ आदमी जे शास्त्रीजी के साथे जात रहे ओह सब लोग के ओह दिन अपना कीहाँ रखनी, फलाहार, दूध आदि के व्यवस्था कके स्वागत कइनीं। तब ऊ सब लोग घर के राह लिहल। गोपालगंज में जब लोग का ई बात मालूम भइल त सब केहू पाण्डेयजी के बार-बार सराहना कइल। एही उदारता आ जनसेवा के ई फल भइल रहे जे बलिया से इहाँ का जेने जात रहनी, लोग चरण धूलि लेबे खातिर दउरि परत रहे।

पाण्डेयजी का भोजपुरी रचना में आध्यात्मिक भाव भरल-पूरल बा। देखीना 'साध' शीर्षक कविता के कुछ पांतीं—

एक बेरि तू हमें जितइतऽ
अपने जइतऽ हार हरी।
निराकार हम हो जइतीं
तू हो जइतऽ साकार हरी

× × ×

साध इहे बा एके बेरियाँ
करीं तऽ ऐतना उपकार हरी
रामविचार हरी ! हरी !! कहिते
तूं कहित रामविचार हरी।।

जिनिगी का क्षणभंगुरता पर 'जीवन गीत' नामक पुस्तक में सँवँस' शीर्षक कविता के कुछ पाँती देखीं—

दू दिन का एह जीवन में
ना सँवँस मिलल जे सोचि सकीं,
जे कुछु कइलीं, कहलीं, बुझलीं
कवना में केतना पन्नि रहल
कवना में केतना रहल पार ॥

पाण्डेयजी बचपने से भोजपुरी आ हिन्दी में कविता करत रहनीं। इहाँ के स्वभाव रहे जे कविता त लिखीं बाकिर सहोर-बटोर के राखीं ना। जवना पन्ना पर लिखीं ऊ पन्ना कहीं गायब हो जाव। इहाँ का अपना दूसरी पत्नी से एह बात से काफी सन्तोष बा कि जबसे इहाँ का अइनीं तब से इहाँ के लिखल कविता सुरक्षित रहे लगलीं सन आ समय-समय पर ओकर प्रकाशनो भइल।

१९४५ ई० में चितबड़ागाँव (बलिया) में एगो हिन्दी कवि-सम्मेलन आयोजित भइल। एह कवि सम्मेलन में बच्चन, गोपेश, श्यामनारायण पाण्डेय, रूपनारायण त्रिपाठी आदि महान् हिन्दी कवि लोग आइल रहे। ओह कवि-सम्मेलन में एगो समस्या-पूर्ति रहे "ज्योत्सना"। पाण्डेयजी ज्योत्सना के भोजपुरी बनवनी — 'अँजोरिया' आ आपन अँजोरिया शीर्षक कविता ओह हिन्दी कवि सम्मेलन में सुनवनीं। पहिले त इहाँ के भोजपुरी कविता कहे खातिर समय ना मिलत रहे। बाद में प्रबन्धक लोग का पैरवी पर अध्यक्ष की ओर से समय मिलल आ अँजोरिया कविता के पहिले पाँती—"टिसुना लागल सिरी किसुना के देखे के त" लोग सुनल त ताली के आवाज से पूरा वातावरण भर गइल। फिर इहाँ का जम के कविता सुनवनीं। ओह कवि-सम्मेलन में महापण्डित राहुल सांकृत्यायन उपस्थित रहनीं। पाण्डेयजी 'अँजोरिया' के बाद "बसन्त-वर्णन" कविता सुनवनीं। एह दूँनू कविता के प्रभाव राहुल बाबा का दिल पर अइसन परल जे उहाँ का अपना "लोक-भाषाओं का इतिहास" नामक पुस्तक में ई पाँती लिखे के परल—"रामविचार पाण्डेय जो भोजपुरी के एक उदीयमान कवि हैं—की दो कविताएँ 'अँजोरिया' और 'बसन्त-वर्णन' मुझे देखने-सुनने को मिली हैं। मेरा दृढ़ मत है कि श्री रामविचार पाण्डेय यदि भोजपुरी में आगे और कविताएँ न भी लिखें तो उनकी इन्हीं दोनों कविताओं ने भोजपुरी को और इनको अमर बना दिया है। जहाँ तक मेरा अध्ययन है—गत चार सौ वर्षों में किसी भी लोकभाषा में क्या हिन्दी में भी ऐसी कविताएँ सामने नहीं आयी हैं।"

१९४५ का एह कवि-सम्मेलन के बाद पाण्डेयजी के ख्याति बढ़ल त पटना, लखनऊ आ इलाहाबाद रेडियो स्टेशन से बार-बार बुलाहट आवे लागल। रेडियो स्टेशन से भोजपुरी कविता प्रसारण के दौर एहीजा से शुरू भइल। पटना रेडियो स्टेशन से पाण्डेयजी के ई कविता बड़ा चर्चित प्रशंसित रहल—"जागऽ ए भोजपुर जागि उठ पूरब में दउरत लाली बा।" एकरा बाद त पाण्डेयजी भोजपुरी के समर्थ कवि का रूप में, भोजपुरी के महान सेवक का रूप में खुल के काम करे लगनी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रेलवे विभाग में अंग्रेजी के हिन्दीकरण होखे लागल। स्टेशन पर पैखाना घर पर लिखाइल "शौचालय"। हिन्दीकरण का क्रम में शब्द के ई दुर्गति देख के पाण्डेयजी के मन में बड़ा दुख भइल। एही सन्दर्भ में पटना में रेलमंत्री जगजीवन बाबू से भेंट भइल। जगजीवन बाबू एह हिन्दीकरण के समर्थन का उमेदि में पाण्डेयजी से बात कइल शुरू कइनीं। पाण्डेयजी नाक-भौं सिकोड़ के जगजीवन बाबू से कहनीं जे "आलय" बड़ा पवित्र अर्थ राखेवाला शब्द हवे। एकर प्रयोग देवालय, विद्यालय में होला। रउआ त पैखाना घर के शौचालय नाम देके एह शब्द के नाशि दिहनीं। एकरा बाद जगजीवन बाबू के नया आदेश निकलल आ शौचालय नाम काट के प्रसाधन नाम लिखाइल। संयोग से फिर जगजीवन बाबू से कहीं भेंट हो गइल उहाँ का पूछ परनी—"का पाण्डेयजी अब खुश बानी नूं। शौचालय हटा के प्रसाधन लिखाइल हा।।"

पाण्डेयजी प्रसाधन शब्द के अर्थ बतावत कहगीं जे रउरा त भोजपुरी इलाका के रहनिहार हईं। नाम अइसन राखे के चाहीं, जे ओकरा मोताबिक कुछ कामो होखे। ओह घर में कौन सिंगार कइल जाता जे ओकर नाम प्रसाधन रखनी हा। बल्कि "काँखन घर" नाम रखितीं त नीमन कहाइत। बाद में जगजीवन बाबू का प्रसाधनो नाम हटावे के परल।

स्वतंत्रता-आन्दोलन के सन्दर्भ में गाँधीजी, राजेन्द्र बाबू आदि बड़-बड़ नेता लोग जनजागरण खातिर पूरा देश के दौरा करत रहु। ओह लोग का भाषण के प्रभाव लोग पर खूब परे। नेता लोग का बात से प्रभावित होके अउरियो लोग स्वतंत्रता का लड़ाई में जुट जात रहे। बाकिर बलिया आ ओकरा आसपास में चित्तू पाण्डेय (शेरे बलिया) का भोजपुरी भाषण के जवन प्रभाव लोग पर परे ऊ अद्भुत रहे। पाण्डेयजी पहिले भोजपुरी आ हिन्दी दूनू में कविता लिखत रहनीं। बाकिर चित्तू पाण्डेय के भाषण के ई चमत्कार देख के इँहो का आपन बात भोजपुरिये में कहे के

शुरू कइनीं। नमक सत्याग्रह युग के पाण्डेयजी के ई सोचावट धीरे-धीरे निखरत गइल। मातृभाषा भोजपुरी के सेवा इहाँ के मन में घर क गइल। तब से जम के भोजपुरी में लिखे लगनीं।

बहुत विद्वान लोग अवधी, ब्रजभाषा तरे भोजपुरियो के हिन्दी के अंग मानेला। पाण्डेयजी ई बात ना मानीलें। इहाँ के तर्क बा जे हिन्दी (खड़ी बोली) अवधी चाहे ब्रजभाषा सौरसेनी से प्रभावित बा आ भोजपुरी बंगला चाहे मैथिली मागधी-अर्द्धमागधी से प्रभावित बा। एह से हिन्दी के खानदान अलग बा।

मेरी बोली पूरबी विरला बुझै कोय।
सोई इसका अर्थ लगावे अटट पूरबीया होय॥

एह तरह से अनेक तर्क देके पाण्डेयजी भोजपुरी के एगो स्वतंत्र भाषा मानीले। प्रकाशित पुस्तकन में पाण्डेयजी के पांच पुस्तक बाटे--विनिया बिछिया (१९५४ ई०), आसा (१९५६ ई०), जीवन गीत (१९५७ ई०), शहीद मंगल पाण्डेय, नाटक (१९६० ई०) गुरुम्हा।

'विनिया विछिया' भोजपुरी कविता के संग्रह हवे। एहमें संगृहीत कवितन में प्रकृति वर्णन आ राष्ट्रीय भाव से भरल कविता बाड़ी सन। प्रकृति के दूनू रूप बाह्य प्रकृति आ आन्तरिक प्रकृति के छटा एह कवितन में छिटकता। तनीं देखीं ना 'वसन्त बरनन' कविता में बाह्य प्रकृति के चित्र—

अइली बसन्तऋतु महुआ का कोंचवा में
झांकि-झांकि हँसि-हँसि आँखि मटकावेली।
सरिसो का फूलवा का पीयर चदरिया में
तीसिया का फूल के बतीसी चमकावेली॥

आन्तरिक प्रकृति-चित्रण में बेजोड़ कविता बाटे "अँजोरिया।" एकरा उत्तमता के ध्यान में राखिके अगर एके 'क्लासिकल पोइट्री' कहल जाय, त अत्युक्ति ना होई। एहमें राधा का अभिसार के बड़ा भावुक वर्णन बाटे। कविता के पाँती देखीं--

टिसुना लागल सिरी किसुना के देखे के त
अधिरतिए खां उठि चलली गुजरिया।
चान का नियर मुँह चमकेला रधिका के
चम-चम चमकेली जरी के चुनरिया॥

राष्ट्रीय कवितन के एह संग्रह में संगृहीत 'भारत महिमा', 'जागरन गान', 'उलटनि', 'हुलास' आदि कविता बड़ा जोरदार बाड़ी सन।

पाण्डेयजी के दोसर पुस्तक 'आसा' भोजपुरी के एगो सफल खण्डकाव्य बाटे। अइसे त स्व० रामवचन लाल श्रीवास्तव के 'कुणाल' अपना ढंग के एगो अनोखा खण्डकाव्य बाटे, बाकी 'आसा' खण्ड-काव्य 'आनन्द' छन्द में लिखल एगो समरथ काव्य बाटे। महाकवि जयशंकर प्रसाद के 'आँसू' का ढंग पर लिखल ई 'आसा' मानवीय आवेग 'आशा' पर एक सौ पनरह छन्दन में लिखाइल बाटे। एगो मानवीय आवेग के त्रिषय बनाके एतना छन्द लिख दीहल पाण्डेयजी जइसन महा-कविए के काम बाटे। यद्यपि ई पोथी भोजपुरी के विकास का शुरूआते में लिखाइल, बाकी कवि का कवित्व शक्ति के दर्शन भलीभाँति हो जाता। एह में मानवीय भाव-स्तर ऊँचा उठावे में कवि का खूब सफलता मिलल बा। एही पुस्तक के अन्तिम एक सौ पनरहवाँ छन्द में संस्कृत का शार्दूलविक्रीड़ित छन्द के प्रयोग भइल बाटे। पाण्डेयजी भोजपुरी में संस्कृत छन्द के प्रयोग कके अपना कवित्व सामर्थ्य का साथे भोजपुरियो के सामर्थ्य बतावतानी जे भोजपुरियो में संस्कृत छन्द के सफलतापूर्वक प्रयोग हो सकत बाटे। देखीं ना—

आसा बा एतने सदा चिरउरी मुन्नी सुनऽ ध्यान से
जो तोके कबहूँ भुलाईं हम तऽ खेदी बगेदी कतें।
ओहू में जनिह सदा हिया में बाटे इहे भाव जे
आसा ! तू हमके तजऽ न कबहूँ लेले रहऽ गोद में।।

पाण्डेयजी के तिसरका किताब 'जीवन गीत' बाटे। ई दस गो भोजपुरी कवितन के संग्रह बाटे। सजनी से, साध, सँवँस, हारातूजी, उचाट, के दोनी, छलिया, निरमोही, नाता, ऊ चदरिया। जइसन कि कवितन के मथेला से पता चलता ई सब अलग भाव के अपना में समेटले बाड़ी सन। कवि का मन में जब जइसन भाव आइल, तब तइसन कविता लिखाइल। अइसने फुटकर कविता 'जीवन गीत' में बटोराइल बाटे।

अबले त पाण्डेयजी का कवि रूप के दर्शन भइल। अब तनी उहाँ का नाटक-कार के दर्शन कइल जाय। इहाँ के एगो एकांकी नाटक बाटे "शहीद मंगल पाण्डेय"। एह नाटक के नायक मंगल पाण्डेय अठारह सौ सत्तावन का पहिलका स्वतन्त्रता संग्राम के एगो सेनानी रहले। प्रबल देशभक्ति का कारण उनका अपना जीवन से हाथ धोए के परल। एही देश-प्रेमी वीर के गुणगान एह नाटक के वर्ण्य-विषय बाटे। १९६० में प्रकाशित एह नाटक का माध्यम से जनता में स्वतन्त्रता के भावना भरे में, स्वतन्त्रता के रक्षा के भावना जगावे में पाण्डेयजी का कमाल हासिल बा। एह में संवाद बहुत छोटे-छोटे आ भावपूर्ण बाटे। मंगल पाण्डे अपना साथी सैनिकन के जोस जगावत एक जगह कहतारे —

"सामने अंगार बा, बड़ा तेज धार बा,
जीत बा कि हार बा, देश के पुकार बा,
देश के गोहार बा, के कह तइयार बा ?"

ई सुनते मातर सब सैनिक हाथ उठाके कहतारे —

"सब केहू तइयार बा।"

एह तरह से एह लमहर कविता में राष्ट्रीय भावना के उजागर करत स्वतंत्रता के रक्षा करे खातिर जनता के जगावल गइल बा।

पाण्डेयजी में आशु कविता करेके एगो विलक्षण प्रतिभा भगवान का ओर से मिलल रहे। हमरा ऊ दिन भोर नइखे परत जहिआ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन के तिसरका (सीवान) अधिवेशन में कवि-सम्मेलन के सभापतित्व पाण्डेयजी करत रहनीं। लगभग सत्तर हजार के भीड़। एक सौ से ऊपर कविअन के सूची। सभापति पद से पाण्डेयजी के घोषणा भइल जे "एको कवि बाकी ना रहिहें सब केहू कविता कही। भलेही रात बीत जाय, दिन हो जाय।"

कवि लोग के कविता जमल। बीच-बीच में समस्या-पूर्त्ति का रूप में तरह-तरह का छन्दन में बँधेवाली समस्या श्रोता लोग का ओर से आवत रहे आ पाण्डेयजी ओह समस्या के पूर्त्ति बड़ा सरल ढंग से करत रहीं। सचहूँ दिन उगे लागल। का मजाल कि एको श्रोता टस से मस होखे। कवि चाहे श्रोता सभे चकित रहे पाण्डेयजी के सभापतित्व के खूबी देख के।

पाण्डेयजी के भोजपुरी में घनाक्षरी छन्द आशुकवित्व खातिर खूब मंजल हवे। १९४५ के एगो अइसन समय रहे कि पाण्डेयजी बोलचाल, बातचीत, चिट्ठी-पत्री सब घनाक्षरी छन्द में करत रहीं। ई व्यवहार तब छुटल जब कुछ लोग इहाँ के पागल कहे लागल। बाकिर प्रतिभा अन्त तक ले ओही तरह से कायम रहे। ओही दिन जब हम उहाँ के दर्शन करके लवटे लगनी तब पाँचगो घनाक्षरी सुनाके हमके इहाँ का आशीर्वाद दीहनीं। ओह छन्दन के विषय रहे—'हमार बलिया गइल।'

उत्तर-प्रदेश हिन्दी संस्थान जवन उत्तर-प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, उत्तर-प्रदेश राजभाषा विभाग, उत्तर-प्रदेश हिन्दी समिति के सम्मिलित रूप बा। १९७७-७८ सत्र में पाण्डेयजी के भोजपुरी सेवा खातिर एगो सुन्नर ताम्रपत्र प्रशस्ति पत्र का रूप में पाँच हजार एक रुपया के चेक का साथे पाण्डेयजी के उत्तर-प्रदेश के राजधानी लखनऊ कें एगो विशेष समारोह में मिलल। एह पुरस्कार से अकेले पाण्डेयजी के ना, भोजपुरियो के माथ ऊँचा भइल।

१९७८ ई० का अन्त में भोजपुरी अकादमी पटना के जे वार्षिकोत्सव भइल ओह अवसर पर सातगो भोजपुरी सेवकन के विशेष रूप से अभिनन्दन कइल गइल। ओहू में पाण्डेयजी आपन विशेष महत्त्व रखत रहनीं। ओह अवसर पर प्रशस्ति-पत्र का साथे पाँच सौ एक रुपया के चेक पाण्डेयजीं के मिलल। एह तरे उत्तर-प्रदेश आ बिहार दूगो भोजपुरी भाषी सरकार से पाण्डेयजी सम्मानित कइल जा चुकल बानीं। समूचा भोजपुरी क्षेत्र का जनता का दिल पर त पाण्डेयजी के राज बड़ले बाटे। तबे नूँ हिन्दी संस्थान से अभिनन्दित भइला का बाद बलिया में सन्त साहित्य मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का अध्यक्षता में बड़ा शानदार ढंग से सम्मान दिहल गइल रहे।

पाण्डेयजी संस्कृतनिष्ठ भोजपुरी के ना, ठेठ भोजपुरी के समर्थक रहनीं। अपना रचनन में इहाँ का अइसने प्रयोगो कइले बानीं। हरासी, हीक लगा के, झनकलि, गँवें-गँवें लुकइले छुवलसि, आदि ठेठ भोजपुरी शब्दन के प्रयोग इहाँ का रचना में खूब पावल जाला। संस्कृत के तत्सम शब्दावली के प्रयोग ओही हालत में इहाँ का करत रहनीं जब भोजपुरी में शब्द ना मिलत रहे। चाहे कविता में ना बइठत रहे। बाकी ई ध्यान रहे जे उहो संस्कृत शब्द अइसने रहो जवन जनभाषा में समा गइल बा। जइसे—तन, कविता, दान, कवि, विधाता, पंचम आदि।

फरवरी १९८९ में उहाँ का मृत्यु के बादो पूज्य पाण्डेयजी के निर्भीकता, राष्ट्रीयता, मातृभाषा के अनुराग आ जनसेवा देश के जनता के पीढ़ी दर पीढ़ी ले प्रेरणा देत रही, हमरा ई विश्वास बाटे।



भोजपुरी के भगीरथ आचार्य महेंद्र शास्त्री

बात १९६३ जनवरी के हवे। एक दिन हमरा निवास स्थान पर आके शास्त्री जी कहनी—"हम रउआ के धोखा दीं ?" हम त अकचका के ताके लगनीं। शास्त्री जी कान्ह पर से लटकत लमहर झोरा में से एगो छोटहन किताब निकाल के जब हाथ पर धइनीं त हमरा हँसी आ गइल। किताब के नाँव रहे—"धोखा।"

आचार्य महेन्द्र शास्त्री के जनम १६ अप्रैल १९०१ ई० के रतनपुरा, जिला सारन (अब सीवान जिला) में भइल। अपने के पूज्य पिता पं० लक्ष्मी पाण्डेय एगो निपुन वैद्य, देहाती झगड़ा फरिआवे में माहिर, न्यायप्रिय आ क्रोधी सुभाव के सज्जन आदमी रहनीं। अपने का सुभाव में धार्मिकता कूटि-कूटि के भरल रहे।

रतनपुरा से कुछ दूर दक्खिन एगो प्रसिद्ध मन्दिर बा जहवाँ माघी आ वैसाखी शिवरात्रि के मेला लागेला। मेला के नांव हवे बाबा महेन्द्रनाथ के मेला (मेहदार) वैसाखी शिवरात्रि के शास्त्रीजी के जनम भइला से धार्मिक महतारी-बाप इहाँ के नाँव ध दिहल 'महेन्द्र'। बचपन में महेन्द्र का पड़ोस के लोग इनके 'झूलन' कहे लागल। झूलन नाँव बहुत दिन ले प्रचलित रहे।

झूलन के प्रारम्भिक शिक्षा ५ बरिस का उमिर में घरे में शुरू भइल। बाद में महाराजगंज संस्कृत विद्यालय में नाँव लिखाइल। एकरा बाद गोदना संस्कृत पाठशाला से मध्यमा पास कके महेन्द्र काशी में संस्कृत के उच्च शिक्षा पावे खातिर चलि गइलें। काशी विद्यापीठ से १९२२ ई० में शास्त्री का परीक्षा में पहिला स्थान पवलें आ तबसे महेन्द्र शास्त्री कहाये लगलें।

अइसे त जे काशी विद्यापीठ में पढ़ेला ओकरा नांव का साथे शास्त्री लागि जाला। एह देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री विद्यापीठ के छात्र रहनीं एही से नाँव का साथे शास्त्री जोरा गइल।

शास्त्रीजी पटना में रहि के महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा से साहित्य आ दर्शनशास्त्र के गहिर अध्ययन कइनीं। १९३६ में कलकत्ता से काव्यतीर्थ के उपाधि पवनीं। एकरा पहिले शास्त्रीजी विशारदो परीक्षा पास क चुकल रहनीं।

शास्त्रीजी के बिआह पनरह बरिस में रामरति कुमारी से हो गइल। रामरति बहुत सुन्नर रहलीं। बाकी शास्त्रीजी का ई बुझात रहे जे ऊ सुन्नर नइखीं। एकर खास कारन रहे श्रीमती रामरति के कड़ा सुभाव। एह दम्पत्ति में कबो पटबे ना

कइल । १९३१ ई० का जुलाई में उनकर मौत हो गइल । मृत्यु का बाद शास्त्रीजी लोग से कहत रहनीं—"सर्पदंशात् मृता पत्नी" तब से शास्त्रीजी आपन विधुर जीवन बितावे में सन्तोष मननीं ।

शास्त्रीजी जिनिगी भर शिक्षक रहनीं । विद्यालय में पढ़ावल त कर्त्तव्य रहे बाकी अउर समय में बूढ़, जवान चाहे लड़कियन के पढ़ावे के बड़ा शौक रहे। स्त्री-शिक्षा के हामी भरत शास्त्रीजी हमनियो के कहत रहीं जे लड़कियन के जरूर आ खूब पढ़ावे के चाहीं ।

सबसे पहिले शास्त्रीजी बलिया जिला का कवनो संस्कृत पाठशाला में पढ़ावल शुरू कइनीं ।

एकरा बाद १९१५ ई० में भारत धर्म महामण्डल काशी में शिक्षक रूप में अइनीं । तवना का बाद हरिहरपुर दण्डी बाबा का पाठशाला में पढ़वनीं । हाजीपुर संस्कृत पाठशाला (गाँधी आश्रम) जबलपुर महाविद्यालय में थोरे दिन खातिर पढ़ावे गइनीं आ ओइजा पद्मसिंह शर्मा से शास्त्रीजी का अपनापन हो गइल ।

शास्त्रीजी चारू ओर से घूमत-घामत अब स्थायी रूप से पढ़ावे खातिर गोरयाकोठी उच्च विद्यालय में आ गइनीं । गोरयाकोठी में शास्त्रीजी अनुकूल अवसर पाके साहित्य सम्मेलन, कवि-सम्मेलन, संस्कृत-सम्मेलन आदि करे-करावे लगनीं । एकरा बाद १९३० का सविनय अवज्ञा आन्दोलन में शास्त्रीजी जेल भेजल गइनीं । जेल से छूटला का बाद शास्त्रीजी के समय बेकारी में बीतल तबो अपना कर्मठ जिनिगी में जीयत शास्त्रीजी बेकारी ना अनुभव कइनीं । एहू समय में गोरयाकोठी में शास्त्रीजी के निवास रहे । १९३४ ई० में शास्त्रीजी फेरू से गोरयाकोठी स्कूल में बहाल भइनीं । कुछ दिन का बाद गुरूकुल महाविद्यालय, देवघर में प्राचार्य भइनीं बाकि एहूजा रहि ना सकनी । गोरयाकोठी आ गइनीं आ स्कूल में काम करे लगनीं । एही बीचे पहलेजपुर में हाई स्कूल खुलल आ शास्त्रीजी ओह स्कूल के खोले में मेहनत ना कइनीं गोरयाकोठी छोड़ के ओइ में पढ़ावहूँ लगनीं । कुछ दिन का बाद ओह स्कूल के छोड़ के महराजगंज उमाशंकर हाई स्कूल में आ गइनीं आ प्रधान पण्डित के जगह पर काम करे लगनीं । जब ऊ स्कूल ठीक से चल गइल त ओके छोड़ के इहाँ का सांस्कृतिक विद्यापीठ सदाकत आश्रम पटना में प्राचार्य होके चलि गइनीं।

ओइजा कुछुए दिन तक रहनी आ प्राचार्य पद छोड़के फेनू महाराजगंज आ गइनीं । २-३ बरिस तक ले महाराजगंज में रहला का बाद शास्त्रीजी सिंहौता बंगरा हाई स्कूल (महाराजगंज) में चलि गइनों । शास्त्रीजी का अन्तिम सेवावाला स्कूल सिंहौताबंगरा रहल । एहिजा से १९७० में इहाँ का अवकाशप्राप्त कइनीं ।

शास्त्रीजी के पूरा जीवन शिक्षक आ साहित्य सेवक के रहे। लरिकाइयें से शास्त्रीजी कविता लिखल शुरू कइनीं आ अन्त तक ले कुछ ना कुछ लिखते रहनी।

शास्त्रीजी के लिखल पुस्तक ई रहे—

१. हिलोर कविता संग्रह—१९२८ (हिन्दी)
२. छुआछूत कविता संग्रह—१९३३ (हिन्दी)
३. आज की आवाज कविता संग्रह—१९४७ (हिन्दी भोजपुरी)
४. चोखा कविता संग्रह—१९५० (भोजपुरी)
५. प्रदोप कविता संग्रह—१९५७ (हिन्दी भोजपुरी)
६. धोखा कविता संग्रह—१९६२ (भोजपुरी)

शास्त्रीजी संस्कृतो में कुछ पुस्तक लिखले रहनी—

१. संस्कृत सार—१९४९
२. संस्कृत मोद (दू भाग में)—१९५०
३. सूक्ति सरिता—१९५१

अन्त में शास्त्रीजी 'मैं तथा मेरे' नाम से आत्मकथा लिखत रहनीं जवन पूरा ना हो सकल।

सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन १९७१ में 'आचार्य महेन्द्र शास्त्री' (व्यक्तित्व कृतित्व) नामक अभिनन्दन ग्रन्थ से शास्त्रीजी के अभिनन्दन कइले रहे। ओह ग्रन्थ के सम्पादक रहनी-- श्री पाण्डेय कपिल जी। अभिनन्दन समारोह के अध्यक्षता कइनीं आचार्य केशवचन्द्रजी मिश्र (भाटपार रानी; देवरिया)। एह ग्रंथ में व्यक्तित्व खण्ड में विद्वान लोग के शास्त्रीजी का सम्बन्ध में विचार बा आ कृतित्व खण्ड में शास्त्रीजी रचित अप्रकाशित कवितन के संग्रह बा।

शास्त्रीजी का पुस्तकन के त महत्त्व बड़ले बा, उनका साहित्यिक संगठन के काम तनिको कम महत्त्व के नइखे। भोजपुरी हिन्दी आ संस्कृत भाषा-साहित्य पर आधारित साहित्य-सम्मेलन आ कवि-सम्मेलन बड़ा महत्त्व के बाटे। प्रायः १९४१ ई० से मरे का दिन तक शास्त्रीजी साहित्य-सम्मेलन का माध्यम से खास कके भोजपुरी के जवन सेवा कइले बानीं तवन अनमोल बा। तबे नूं अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन के पहिलका अध्यक्ष डॉ० उदयनारायण तिवारीजी अपना अध्यक्षीय भाषण का क्रम में कहले रहनीं—"भोजपुरी के भगीरथ आचार्य महेन्द्र शास्त्री का रहते हमरा के अध्यक्ष चुनल बेमानी बाटे।" एइजा इहो बात जाने लायक बा जे शास्त्रीजी एह भोजपुरी सम्मेलन के गठन में बड़ा सहयोग देले रहनीं बाकी इलाहाबाद में पहिलका अधिवेशन के तइयारी चलत रहे तबले शास्त्री-जी के मृत्यु हो चुकल रहे। शास्त्रीजी का प्रयास से समूचा भोजपुरी क्षेत्र के पहिल-

का भोजपुरी साहित्य सम्मेलन मार्च, सन् १९४७ में सीवान में भइल जवना के अध्यक्षता कइनीं आचार्य बलदेव उपाध्यायजी आ उद्घाटन कइनीं श्री जगलाल चौधरी (तत्कालीन मंत्री बिहार सरकार)। ओही साल दिसम्बरे में शास्त्रीजी का प्रयास में गोपालगंज से राहुल बाबा का अध्यक्षता में भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन भइल ई दूनूं अधिवेशन के ऐतिहासिक महत्त्व बाटे।

शास्त्रीजी का परिश्रम से १९४८ ई० में पटना से 'भोजपुरी' नाँव के एगो मासिक पत्रिका निकलल। एह पत्रिको के आपन ऐतिहासिक महत्त्व एहसे बाटे जे भोजपुरी भाषा के ई पहिलकी पत्रिका रहे। एह तरह से शास्त्रीजी के भोजपुरी बोली के भोजपुरी भाषा बनावे में विशेष हाथ बाटे।

शास्त्रीजी गाँव-गँवई से लेके बड़का शहर तक में भोजपुरी साहित्य सम्मेलन करावते रहत रहनीं। उहाँ के ई खूबी रहे जे जहें रहीं कवि सम्मेलन करावेवाला दल तइयार करीं आ सम्मेलन करा दीं। सन् १९४१ का बाद सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन आ १९६० का बाद सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ बीच-बीच में जब मौका लागे सारन जिला संस्कृत साहित्य सम्मेलन करावल जइसे शास्त्रीजी का नाँवे लिखा गइल रहे।

शास्त्रीजी ई सब अधिवेशन कराईं बाकी कवनो पद पर ना रहत रहीं। १९५३ में सीवान में जवन भोजपुरी सम्मेलन भइल तवना के स्वागत मंत्री आ १९६९ में सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जवन अधिवेशन थावे में भइल तवना के अध्यक्षता बड़ा मेहनत से कबूल करावल गइल। १९५० ई० में जवन गया में विहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन भइल तवना में विषय निर्वाचिनी समिति के सदस्य शास्त्रीजी रहनीं।

भोजपुरी के प्रचार-प्रसार त शास्त्रीजी के जीवन के रोजनामचा रहे। हिन्दी भोजपुरी के सैंकड़ों सभा-सम्मेलन शास्त्रीजी का करते भइल होईं।

भोजपुरी क्षेत्र का बाहरो नूं शास्त्रीजी अधिवेशन करावत रहनीं। १९७२ ई० में गया में भोजपुरी सम्मेलन, १९७३ ई० में संथाल परगना में जिला भोजपुरी सम्मेलन के अधिवेशन करवनीं। जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् शास्त्रीजी के अभिनन्दन २० जनवरी १९६८ के कइले रहे।

सारन जिला हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का ओर से 'सारण्यक' नामक पुस्तक में नव कवियन में शास्त्रीजी एगो रहनीं। ओह पुस्तक के लोकार्पण छपरा में १९६६ में भइल रहे। ओह समारोह में सारन जिला के कवि लोग एह नवो वृद्ध कवि सभ के अभिनन्दन कइले रहे।

शास्त्रीजी का राजनीति से घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। जीवन का पूर्वार्द्ध में एह दिशा में सक्रिय रहनीं बाकी उत्तरार्द्ध में सक्रियता खतम हो गइल रहे। १९२० ई० में गाँधीजी के असहयोग आन्दोलन शुरू भइल त शास्त्रीजी खुल के भाग लिहनीं। १९२५ ई० में शास्त्रीजी हाजीपुर गाँधी विद्यालय में गइनीं त ओह विद्यालय में गाँधी आश्रम तरे नियम मानल जात रहे जवन राष्ट्रीयता से भरल रहे। सभे साफ खादी पहिरत रहे। ई काम शास्त्रीजी का मनोनुकूल रहे। १९३० ई० में गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन छिड़ल त ओहू में शास्त्रीजी खुल के भाग लिहनीं। ओह क्रम में पकड़ि के जेल में क दिहल गइनीं। १४ महीना जेल के सजा भोगनीं। १९३१ ई० में गाँधी-इरविन समझौता के ई फल भइल जे सब कैदी छोड़ दिहल गइलें। एकरा बाद शास्त्रीजी हर समय में कांग्रेस के मदद करत रहनीं बाकी जब स्वतन्त्रता मिलल आ कांग्रेसी नेता लोग जनकल्याण छोड़ के आत्म-कल्याण में लाग गइल त शास्त्रीजी कांग्रेस के साथ छोड़ दिहनीं आ १९५२ ई० के किसान-मजदूर प्रजा पार्टी के प्रत्याशी महामाया बाबू के महाराजगंज क्षेत्र से मदद कइनीं। एकरा बाद राजनीति से निष्क्रिय होके रहे लगनीं। अन्त में शास्त्रीजी साम्यवादी विचारधारा के हो गइल रहनीं। १९६८ का बाद के रचनो में साम्य-वादिए विचार देखल गइल। जइसे—

"कमइया हमार चाटि जाता इहे बाबू भइया।
ओकरा बाटे महल अटारी हमरा बा मड़इया।
ओकरा बाटे तोसक रजाई, हम खेलाइले जड़इया। इत्यादि

शास्त्रीजी आजीवन जुझारू योद्धा बनल रहनीं। सामाजिक कुरीतिपन के तूरे खातिर शास्त्रीजी जी-तोड़ परिश्रम कइनीं। समाज-सुधारक रूप में शास्त्रीजी के कुछ लोग सनकी तक कहल बाकी एकर परवाह उहाँ का कहाँ रहे। २२ बरिस का कम उमर में ब्राह्मण लोग के हर चलवावे के रिवाज कायम करे में शास्त्रीजी का सहायता ना मिलल बाकिर अपने कई जगह हर चलवनीं। छुआछूत के कट्टर विरोधी शास्त्रीजी अनेक कवितन में ई आवाज देले बानीं। मेहरारूअन में पर्दा-प्रथा के शास्त्रीजी कट्टर विरोधी रहनीं। १९२८ ई० से एह प्रथा का विरोध में काम करे लगनीं। इहाँ तक कि औरतन के जुलूस तक निकलनीं। बाल-विवाह के अत्यन्त विरोधी शास्त्रीजी अपना कवितन के विषय बनवनीं। ईहाँ का बाल-विवाहवाला बारात में ना जाये के कसम खा लिहले रहनीं। मादक द्रव्य निषेध कइल शास्त्रीजी के प्रिय काम रहे। अपना कवितन का माध्यम से चाहे व्याख्यान देके एह सब दुर्गुण के विरोध शास्त्रीजी हमेशा करत रहीं। विवाह आदि अवसर

पर फिजूलखर्ची के शास्त्रीजी प्रबल विरोधी रहनी। विधवा-विवाह आ अन्तर्जातीय विवाह के समर्थक अन्त ले बनले रहनीं। नारीजाति स्वतन्त्रता तथा समानाधिकार के पूरा समर्थक रहनीं।

शास्त्रीजी अनेक पुस्तकालयन के संस्थापक रहनीं। इहाँ का विश्वास का साथे पुस्तकालय का माध्यम से समाज-सुधार के कल्पना करत रहनीं। सारन जिला पुस्तकालय संघ के अध्यक्ष शास्त्रीजी १९५१ से बीसन-बरिस ले रहनीं।

शास्त्रीजी एगो नीमन पत्रकारो रहनीं। गोरयाकोठी रहत छात्रावासी लइकन से 'तरुण तरंग' नामक हस्तलिखित पत्रिका निकलवावत रहनीं। 'योगी', (पटना) 'विशाल भारत' (कलकत्ता), 'सुप्रभातम्' (काशी), 'नवशक्ति' तथा 'उत्तर बिहार' (पटना), 'ललकार' (जमशेदपुर), 'अँजोर' (पटना), 'विश्वमित्र' तथा 'आज' में शास्त्रीजी लिखते रहत रहनीं।

१९५३ ई० में जब बाबू रघुवंश नारायण सिंह का सम्पादन में 'भोजपुरी' मासिक पत्रिका आरा से निकलल आ लगातार तिसरका अंक तक ले शास्त्रीजी का मिलल त उहाँ का एगो पद्यात्मक चिट्ठी रघुवंश बाबू का लगे लिखनीं जवन चिट्ठी ई ह—

भोजपुरी के चौथा अंक, चमकत चान किन्तु अकलंक
चिठियो साथे-साथ मिलल, कली चित्तके खुल के मिलल
कुँवर सिंह के अइसन चित्र, देके रिनी बनवनी मित्र !
श्री मदन्त के आसीर्वाद, भोजपुरियन का रही इआद
इन्दुमती के सम्मति सुन्दर, सीसी में अँट गइल समुन्दर
समालोचना माधवजी के, तार छेड़ देले बा जी के
ई तऽ बहुत कीमती लेख, लेखो से ई चीझ बिसेख
एक 'अकेले' बा कहानी मन में ग्यान आँख में पानी
जन्म कथा बा पढ़हीं लायक थोड़े में सचित्र सुखदायक
बिरहा में बा बिरह अथाह जग के ए पर पड़ी निगाह
भासन अइसन बा अनमोल जे सब कर दी आँखे खोल
बलिया में दूजा भृगुनाथ ऊँचा करिहें सबकर माथ
चमत्कार चाचा में बाटे जेकर चर्चा घाटे-बाटे
सम्पादन के ईहे चाव इहे योग्यता सेवा-भाव
अइसन नीमन रोचक ठोस देख मसाला भइल भरोस
रघुवंशी प्रण नाहीं बिचली भोजपुरी निश्चय चल निकली

भोजपुरी के आरा केन्द्र सिद्ध मनोरथ आज महेन्द्र
अब खिसिआइल बाटे नाहक हमहूँ बनब बनाएब गाँहक

हे बाबू रघुवंशजी, लीं हमार आसीस
सुखी बनाई देसके, जी हीं लाख बरीस

शास्त्रीजी के प्रिय भतीजा श्री अनिल कुमार पाण्डेय के आरक्षी अधीक्षक पद पर गया में बदली भइल त शास्त्रीजी उनही का साथे रहे लगनीं। यद्यपि शास्त्रीजी का बहुत पहिले हृदयरोग हो गइल रहे। वाकी अन्तिम दिन में खूब चंगा रहनीं। किन्तु मरेवाला का कवनो वहाना ना मिली तवो चलिए जाई। कवनो बीमारी ना भइलो पर शास्त्रीजी ३१ दिसम्बर १९७४ के २ बजे रात में ई लोक छोड़ के चल गइनीं। श्री अनिलजी का हाथे शास्त्रीजी के दाह-संस्कार गया में फाल्गु नदी का किनारे भइल।

मरला का बाद 'लोक साहित्य संगम' (गया) 'नवकल्प' के आचार्य महेन्द्र शास्त्री स्मृति अंक निकलल जवन बड़ा समर्थ आ शास्त्रीजी का स्वरूप का अनुरूप रहे। एकर सम्पादन कइनीं मगही आ भोजपुरी साहित्य के महान विद्वान पं० रास-विहारी पाण्डेय जी। एकरा अलावे अउरी पत्र-पत्रिकन में शास्त्रीजी के संस्मरण छपले सन। एह पाँती के लेखक के भोजपुरी पुस्तक 'अङऊ' १९७७ में निकलल त ऊ 'अङ्ऊं' दिआइल शास्त्रीजी के। समर्पण के स्वर रहे—

"अलबेलापन में त हमरा दाख मिलल;
जिगिनी में अरमान सजल, पर राख मिलल,
सचहूँ दुनिया सून भइल हमरा खातिर;
जीए लायक शास्त्रीजी से साख मिलल।"



अनुपम भोजपुरी प्रेमी

श्रद्धेय जयप्रकाश बाबू के बेजोड़ व्यक्तित्व

बात १९६६ के ह। पुसा रोड में एगो एक सप्ताह खातिर 'सर्वोदय शिविर' लागल रहे। ओइ में सर्वोदय परिवार (सर्वोदय मण्डल, भूदान, ग्रामदान, तरुण शान्ति सेना आदि) के लगभग ३५० प्रतिनिधि लोग आइल रहे। हमहूँ एकइस गो तरुणशान्ति सैनिक लेके शान्ति सेनानायक रूप में ओह शिविर में भाग लेवे गइनीं। ओह शिविर में तरुणशान्ति सेना के छिहतरगो सैनिक आ सतरहगो सेनानायक रहलें। ओह शिविर के संचालक रहनीं—जयप्रकाश बाबू। हर विभाग के अलग-अलग उहाँ का उपस्थिति मे परिचय भइल आ एक आदमी के उहाँ का विभाग प्रधान मनोनीत कइनीं। सौभाग्य से उहाँ के उदारदृष्टि हमरा अइसन नाचीज व्यक्ति पर परल आ हमरा के दल के प्रधान मनोनीत क दिहनीं।

अइसे त संचालक के पूरा दायित्व जयप्रकाश बाबू पर रहवे कइल बाकिर उहाँ का नीचे आचार्य राममूर्त्तिजी रहनीं जेकरा से बार-बार बात करेके जरूरत परे। परम सौभाग्य के बात ई रहे जे दल के प्रधान का हैसियत से रोज दिनभर में एके दू बेर भेंट करेके जरूरत पड़े। जयप्रकाश बाबू का ई मालूम हो गइल रहे जे हम भोजपुरी क्षेत्र सीवान से आइल बानीं। ओह शिविर में पूरा बिहार के लोग आइल रहे एह से हरदम हिन्दिए में बोले के परत रहे। हम जब जयप्रकाश बाबू से मिले जाईं त हिन्दिए में कुछ कहल शुरू करीं बाकिर जयप्रकाश बाबू ओकर जवाब भोजपुरी में दीं। उहाँ के भोजपुरी सुनि के हम लजा के काठ हो जात रहनीं आ उहाँ के मातृभाषा प्रेम देखि के हम उहाँ का प्रति अउर अधिक नतमस्तक हो गइनीं। तब से हम उहाँ के एगो सच्चा भोजपुरी के सपूत माने लगनीं।

जयप्रकाश बाबू के ११ अक्टूबर १९०२ ई० में तत्कालीन सारन जिला का सिताब दियरा (अब वलिया जिला) नामक गाँव में पिता लाला हरसूदयालजी का घरे माता श्रीमती फूलमती रानी का कोख से जनम भइल।

जयप्रकाश बाबू अपना जिनिगी में बहुत बड़-बड़ काम कइनीं। ओह काम के प्रभाव देश-विदेश का लोगन पर परल। उहाँ का कुछ का मन के चर्चा हम आगे करब। ८ अक्टूबर १९७९ के जयप्रकाश बाबू परलोक सिधार गइनीं। मुअला का बाद हम एक दिन सोचनीं—

आज एगारह अक्टूबर १९८१ हवे। चारू ओर लोकनायक जयप्रकाश बाबू

के जयन्ती मनावल जाता। जगह-जगह जयप्रकाश बाबू की जय; जे० पी० जिन्दाबाद के नारा लगावल जाता।

हम अपना कोठरी में बइठल सोचतानीं एह घुटन भरल जिनिगी में, अन्याय-अत्याचार का होड़ में, स्वार्थ भरल जातीयता का जोरदार आजमाइस में, कवनो कुकर्म करके रुपया कमाए का माहौल में, अनीति भरल जिनिगी जीए का हारा-बाजी में, जयप्रकाश बाबू के जयन्ती मनावल एगो पहेलिए नूँ बा। ऊ जयप्रकाश बाबू कवनो तरह के व्यक्तिगत लाभ-लोभ से अलग रहेवाला, मानवता का खोज में आपन जिनिगी खपा देवेवाला एगो अइसन महापुरुष रहनीं जेकरा खातिर दिनकर जी के कलम चलल—"सारा आकाश तुम्हारा है।"

एगो आदमी केतना महान् आ व्यापक प्रभाव डालेवाला हो सकेला ई देखे के होखे त केहू जयप्रकाश बाबू के क्रान्तिकारी जीवनयात्रा देखो। बाबू के बाद जयप्रकाशे बाबू भारतीय जनता का आशा, आकांक्षा के छाछात देह रहनीं।

हम सोचतानीं—एह साधारण देहधारी में कवन अइसन बात रहे जे इहाँ का एतना श्रद्धेय, महिमावान् आ प्रिय हो गइनीं। बात ई बा जे लोग जयप्रकाश बाबू के अपूर्व त्याग, अद्भुत सत्यनिष्ठा, असाधारण विवेक, दीन-हीन का प्रति अपार प्यार, लोकजीवन का ओर अचल भक्ति, अचरज में डालेवाला विचित्र चरित्र-बल, राष्ट्रीय जागरूकता आदि गुणन के देखि-देखि सोचल आ सोचि-सोचि देखल। तवे नूँ लोग अपना हृदय के हार बनावल।

जब जयप्रकाश बाबू मुअनीं तब त देश-विदेश के सब लोग अउरी अचरज में परि गइल। जवना दल विशेष के लोग १९४२ में आन्दोलव का क्रम में अंग्रेजन से साँठ-गाँठ कके जे० पी० के जिन्दा जरावे के षड्यन्त्र कइले रहे आ सफल नाहियो भइल पर जिनिगी भर दुश्मने बनल रहे, ऊहो नूँ मुअला पर घड़िआली आँसू बहावत रहे। जे सत्ताधारी १९७४-७५ का आन्दोलन क्रम में इमरजेन्सी लगा के इनिके गिरफ्तार कके जेले में सड़ा के मुआ देवे के सोचले रहे आ अइसने मुर्दा बना के जेल से निकालल ऊहो इनका महायात्रा में सामिल होखे खातिर बड़ा चाव से चलि आइल रहे। सत्ता में नाहियो रहला पर जेकरा खातिर संयुक्त राष्ट्रसंघ में आ उच्चतम न्यायालय में शोक मनावल गइल। पटना में ओह अरथी का साथे जवन विराट् जनसमूह आ जुटल रहे तवन अचरज में डालेवाला रहवे कइल। धन्य रहनीं जयप्रकाश बाबू जीयते त कुल अचरज भरल काम कइबे कइनीं मुअला पर कइ गुना अचरज देखवनीं।

एगो बात बा—संसार में अच्छा गुन के जाने-मानेवाला लोग अबो बाटे। आजुओ लोग सत्य आ अहिंसा के, प्रेम आ भक्ति के बड़ चीज मानता। अबो अन्याय

से लड़नेवाला लोग खातिर दिल में आदर-भाव बाटे। आजुओ विवेकी आ निष्ठावान् के उहे इज्जत मिलता जवन राम, कृष्ण आ बुद्धदेव के मिलल रहे। ई नीमन लच्छन लउकता जे एहू माहौल में सब देश के लोग एह कुल्ही गुनन के बड़हने मानता। महामानव अब्राहिम लिंकन, महात्मा कार्ल मार्क्स, महापुरुष लेनिन, महात्मा गाँधी आदि महापुरुषन में इहे कुल गुन नूँ रहे जे आजुओ संसार पूजा करता। मनुष्यता आ आत्मबल आजुओ आसुरी वृत्ति आ पशु-बल से बड़ मनाता तबे नूँ जयप्रकाश बाबू का सब काम में लोग खूब ढंग से साथ दिहल आ मुअला का बाद देश-विदेश में उनकर जयन्ती मनावता।

१९४२ ई० का आन्दोलन का समय जयप्रकाश बाबू के पूरा देश में बोलबाला रहे। युवा वर्ग पर त इनका नाँव के जादू अइसन असर परत रहे। उहाँ का जेल के दिवार फननीं, आजाद दस्ता खड़ा कइनीं, भूमिगत रहि के सरकार के नाकोदम क दिहनीं। इनकर सिर ले आवे खातिर तत्कालीन सरकार का इनाम के घोषणा करे के परल रहे। इनकर ई पराक्रम भरल कहानी जनता का हृदय के हर लेले रहे।

१९४८ में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू कहले रहनीं—"जयप्रकाश भारत का भावी प्रधानमंत्री हैं।" स्वराज्य पवला का बाद जयप्रकाश बाबू कई गो कठिन समस्या के समाधान में निर्भीकता, सूक्ष्मदर्शिता आ कर्मठता का कारन जनता के सही नेता बनि गइनीं। तबे नूँ १९५२ ई० में नेहरूजी मंत्रिमण्डल में सामिल होखे खातिर नेवता देले रहनीं। ऊ नेवता जयप्रकाश बाबू ना सकरनीं। एही बीचे इहाँ का साम्यवादी दल के नया ढंग से संगठन कके बड़ा व्यापक बना दिहनीं। बाद में ओह दल का सक्रिय लोग के मानवता के हत्या कइल देखि के उहाँ का दल छोड़ दिहनीं। एकरा बाद त ई दल मृतप्राय हो गइल। कुछ एका-दुक्का लोग ओइमें रहि गइल आ संगठन के जियावत रहल। काहें जे इहाँ का साथे अधिकांश लोग निकल गइल। ओह दल में ओह घरी जवन जोस-खरोस रहे तवन आजु ले ना आइल। तवे नूँ जे बचि गइल से इहाँ के जिनिगी भर विरोधी बनल रहल।

ओकरा बाद 'समाजवादी' पार्टी नाम से एगो नया संगठन कायम कइनीं। इहो खूब फइलल, खूब जमल, बाकी एहू में उहे घून समाइल देखि के जयप्रकाश बाबू इहो दल छोड़ दिहवीं। मानवता के रक्षा का खोज में लागि गइनीं। १९५४ का 'सर्वोदय सम्मेलन' में आचार्य विनोबा भावे का साथे अहिंसक क्रान्ति जीवनदानी बने के घोषणा कइनीं।

एही सम्मेलन में इहो घोषणा कइनीं जे कवनो नया चाहे पुराना राजनीतिक पार्टी के प्राथमिक सदस्यता तक ना ग्रहण करबि, सत्ता का राजनीति से दृढ़ता का

साथ अलग रहबि। एकरा बाद त दल में रहि के आपन काम बनावेवाला लोग इहाँ का नाँव का साथे "पथभ्रष्ट क्रान्तिकारी", "मार्गच्युत क्रान्तिवीर" आदि विशेषण लगावे लागल।

दुनिया में महान् आदमी के सोचे के ढंग हमेशा आम आदमी का सोचावट से अलग होला। जयप्रकाशो बाबू कबो-कबो एही तरह के बात सोचत रहनीं। सामान्य लोग का मान्यता से इहाँ के मान्यता एतना दूर हटि गइल जे लोग देशद्रोही कहे लागल। एक बेर कश्मीर का सम्बन्ध में इहाँ का बात के अइसने प्रतिक्रिया भइल रहे। लोग कहे लागल रहे—"जयप्रकाश देश बेचि देबे के बात कहतारे। इनका के भारत रक्षा कानून का तहत गिरफ्तार क लेवे के चाहीं।" हमरा याद बा—ओह क्रम में केन्द्र सरकार बहुत चिन्तित हो गइल रहे आ इहाँ के सुरक्षा के विशेष व्यवस्था कइले रहे। लोग मा एह वक्तव्य के कारन इहे रहे जे जयप्रकाश बाबू का वक्तव्य के का मंशा या महानता बा ई लोग का ना बुझाइल रहे।

जयप्रकाश बाबू असहाय मानव का मुक्ति के उपाय हमेशा सोचनीं। एह दल से भागि के ओह दल में आ ओहू दल से भागि के तीसरा दल के संगठन के इहे कारन रहे। जवना दल के उहाँ का सर्वहारा वर्ग के दल समझनीं आ खून-पसेना एक कके ओकर संगठन मजबूत कइनीं। जे मानव मुक्ति के उपाय उभरि के सामने आई। बाकी एइजा त सेठ लोग जइसे भगवान के बड़ा प्रेम से नाँव ले आ ओही भगवान के बनावल गरीबन के मूर्ख बना के चूसेला ओइसही ओह दल में गरीबन के, मजदूर के नाँव लिहल जाता आ केवल आपन काम निकालल जाता। बस जयप्रकाश बाबू एकरा के कइसे बर्दास्त करीं, दल छोड़ि दीहनीं।

महात्मा गाँधी के सच्चा अनुयायी विनोबा का सर्वोदय में मानव-मुक्ति के पूरा-पूरा तथ्य उभरि के सामने आइल त इहाँ का सर्वोदय सिद्धान्त मानि के भूदान, ग्रामदान, जीननदान, तरुण शान्ति सेना के समर्थन करत सम्पूर्ण क्रान्ति का ओर आगे बढ़नीं।

लोक-नीति अइसन आधार रहे जवना के साथ लेके जयप्रकाश बाबू मानब-मुक्ति खातिर सब कुछ सोचले रहनीं। जेकर पहुँच ओइजा ना रहे सेकरा लोकनीति का रास्ता से मानव-मुक्ति तक पहुँचल नया आ अचरज भरल लागल। लोग का एह भावना के अध्ययन कके जयप्रकाश बाबू एक बेर कहले रहनीं—"यह चीज इतनी नयी है कि सारी बात समझने के लिए शायद एकाध पुस्तक ही लिखनी पड़े।" वास्तव में मानव-मुक्ति जयप्रकाश बाबू का जीवन के ध्रुबतारा रहे। एही खातिर परतंत्रता का समय से जिनिगी भर संघर्षरत रहनीं। मुक्ति के इहे खोज नूँ

साम्यवाद, समाजवाद से सर्वोदय तक ले आइल आ अन्त में सत्ता से जूझे खातिर बाध्य कइलस।

जयप्रकाश बाबू के ई विशेषता रहल जे मानव-मुक्ति का सन्दर्भ में जवन बात साच मालूम परल आ जरूरी बुझाइल त कठिन से कठिन काम करे खातिर तइयार हो जात रहनीं। उहाँ के सरल आ सजग हृदय ओह काम में एकरूप हो जात रहे। आपन समूचा मन आ प्रान उहाँ का ऊ काम पूरा करे खातिर उड़ेल देत रहनीं। पाकिस्तानी आक्रमण का बेरा अस्वस्थ रहलो पर चौदह देश के भ्रमण कके भारत के वकालत कइल साधारण आदमी खातिर संभव ना रहे। अहिंसा उहाँ के मूल व्रत रहे आ पाकिस्तान के हिंसक आक्रमण असह्य रहे।

सर्वोदय आन्दोलन के एगो साफ चित्र उहाँ का हृदय में खिंचा गइल रहे जवन विनोबाजी का सर्वोदय कल्पना से अधिक स्वष्ट रहे। ऊ चित्र अवहीं सामने आवहीं के रहे तवले-सत्ता के विलासिता आ काकस का खुशामद से अधिनायकवादी मनोवृत्ति का कारन जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गइल। समूचा भारत खास कके उत्तर भारत में त अराजकता छा गइल। लोकजीवन घुटन के जिनिगी जिए लागल। एकरा विरोध में १९७२ में गुजरात में आन्दोलन भइल बाकी ओह आन्दोलन के दबावे में सत्ता सफल हो गइल रहे। काहे जे सर्वस्व त्याग का भावना का साथे कवनो नेतृत्व ना मिलल। एह सफलता पर सत्ताधारी लोग अपने मुँहे मिट्ठू बने लागल रहे।

नेता लोग ई ना देखल जे जनजीवन के का आवश्यकता बाटे। ओकर पूर्ति कइसे होई? फिर उहे अलमस्ती, जनता का ओर से उहे उदासीनता।

सत्ता के मद सत्ताधारी का मन पर छा गइल रहे। १९७४ में बिहार में छात्र-आन्दोलन शुरू भइल। १९५७ का सिपाहीं-विद्रोह में जइसे बाबू कुँवर सिंह के पुरान हड्डी कामे आइल ओइसही एह छात्र का जोस का साथे जयप्रकाश बाबू के जोस मिलल। अब छात्र-आन्दोलन ना रहि गइल, लोक आन्दोलन हो गइल। आ एह आन्दोलन के नायक जयप्रकाश बाबू लोकनायक कहाए लगनीं। केतना साहित्य-कार आपन 'पद्म विभूषण' आदि अलंकरन राष्ट्रपति के वापस क दिहलें। लोक-जीवन सत्ता के घृणा का आँखि से देखे लागल। जब सत्ता का अवरी कवनो उपाय ना सूझल त आपात स्थिति लागू क दिहलस। आन्दोलग के समर्थक लाखों लोग जयप्रकाश बाबू का साथे जेल भेजि दीहल गइल। एह नेता लोग का जेल में रहते चुनाव के घोषणा भइल। धीरे-धीरे अबरी नेता लोग त छूटल बाकी जयप्रकाश बाबू ना छूटनीं। चुनाव भइल, विरोधी दल के विजय भइल। बीमार जयप्रकाश बाबू

जेल से निकालल गइनीं। इहाँ का प्रभाव से विरोधी दल मिलि के एक भइल। ई एकता लेआइल जीयत मेढ़क का तउलला से कम मुश्किल ना रहे। यद्यपि ई आम चुनाव ना रहे तबो बिहार आ उत्तर प्रदेश अइसन बड़-बड़ राज्य में त एको कांग्रेस के सांसद ना चुनइलें।

एह तरह से जनता पार्टी के सरकार केन्द्र में बनल। कांग्रेस दल विरोधी भइल। बुझाइल जे अब केन्द्र के सरकार जनता खातिर कुछ काम करी।

एह समय तक जयप्रकाश बाबू अवरी रोग जर्जर हो गइनीं। अब कुछ करे से लाचार रहनीं। जवना के जयप्रकाश बाबू एक पलरा पर ले आइल रहनीं तवन अब आपन आपन तमासा देखावे लगले सन। एही बीचे हारल तिकड़मबाजन के लहि गइल। एकर फल भइल जे फेनूँ मध्यावधि चुनाव भइल। तब श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रधानमंत्री बनली।

एइजा ई कहे में तनिको हिचक नइखे जे देश के जवन हालत १९७४ में रहे, जवना खातिर ओइसन विरोध भइल। तवना से तनिको कम अराजकता आजु नइखे बल्कि अधिक बढ़ि-चढ़ि के महंगाई चाहे फटेहाली आज बाटे। बाकी अब ओइसन व्यक्तित्व देश में कहाँ बा जे एह अराजकता के जरावे खातिर हाथ में लुकारी लेके आगे बढ़ो। इहे देखि के नूँ सत्ताधारियो लोग लमहर से लमहर अनर्थ कइलो पर, जनता के अत्यंत नाजायज ढंग से घोषणा कइलो पर आपन पीठ अपनही ठोकता। विरोधियो नेता लोग में एगो दुगो छोड़ि के सभे त कुबेर बने के सपना देखता। केकर केकर धरीं नाँव कमरो ओढ़ले सगरी गाँव। पहिले त केहू जयप्रकाश बाबू का अइसन विरोध करेवाला नइखे। अगर केहू तइयारो होखे त भारतीय जनता के ओइसन विश्वासी के बा? जेकरा नेतृत्व का नीचे खड़ा हो सको। अब त जयप्रकाश बाबू के जयन्तिए मना के नूँ सन्तोष क लेवे के बा आ जिनगी भर एह व्यवस्था में ऊबन आ घुटन भरल जीवन जीयत रहे के बा।

एह कर्मवीर राष्ट्रभक्त आ अनुपम मानव-कल्याणकारी जयप्रकाश बाबू का सम्बन्ध में कुछ लोग के विचार ई रहे—

"यह शख्स देना ही जानता है, लेने या पाने पर इनकी दृष्टि ही नहीं जाती।"

(इलस्ट्रेटेट वीकली)

"समाज में ऐसे कई साधु वेषधारी व्यक्ति हैं जिनका हृदय पालिटिशियन और डिप्लोमेट का होता है। जयप्रकाशजी एक ऐसे गृहस्थ हैं जिनका हृदय सच्चे राष्ट्रीय सन्त का है।

× × ×

अदम्य पराक्रमशीलता होते हुए भी महत्त्वाकांक्षा जयप्रकाशजी को छू तक नहीं गयी है।

× × ×

अन्तर्बाह्य प्रामाणिकता और वृति की अभिन्न सहचारिणी है। जे० पी० का व्यक्तित्व इस वीरवृत्ति से लबालब भरा है। (दादा धर्माधिकारी)

अन्त में एगो बात अवरी—जयप्रकाश बाबू का पराक्रमपूर्ण ईमानदारी; हृदय के शुद्धता आ उदारता के अनूठा परिचय चम्बलघाटी आ बुन्देलखण्ड के बागियन का आत्मसमर्पण का क्रम में मिलल रहे। एह बागी लोगन के मनावे खातिर जयप्रकाश बाबू ना गइल रहनीं। इहे लोग उहाँ का व्यक्तित्व से प्रभावित होके, विश्वास कके मिलल रहे। ३१ मई १९७२ के आत्मसमर्पण के दिन तय कइल लोग। ओह दिन तबियत का खराव भइला से जयप्रकाश बाबू ना जा सकत रहनीं। कुछ लोग ई प्रस्ताव भेजल जे जयप्रकाश बाबू का जगह पर दोसर केहू महानुभाव चलि जाय आ बागी लोग आत्मसमर्पण के कार्यक्रम पूरा क देउ। किन्तु ऊ लोग कहल जे "जयप्रकाश बाबू के विकल्प जयप्रकाशे बाबू हो सकिले दोसर केहू ना।"

अबो से अपने सोचीं जे जयप्रकाश बाबू के व्यक्तित्व कइसन रहे।

इहाँ का मुअला का बाद भोजपुरी अकादमी पत्रिका पटना (बिहार) का सम्पादकीय में जवन श्रद्धाञ्जलि वक्तव्य आइल तवन नीचे दिहल जाता—

"जयप्रकाश ! एगो मूरत ! अइसन मूरत, जेकरा में आदमीयत छछात चलत-फिरत रहे, जेकर हिया सीरीस के फूल से बनल रहे, जेकर आचार-विचार सप्तर्षियन के बटोराइल तपस्या से तपल रहे, जेकर साहस इस्पात गला के डालल रहे, जेकर निश्चय ध्रुवतारा से पिघलावल गइल रहे, जेकरा चेहरा पर चान का सुधा के लेप चढ़ावल रहे, जेकर सजधज आ नफीसी देखि के गन्धर्व लोग लजात रहे, जेकरा कर्मनिष्ठा के आगे गीता के दर्शन मात होत रहे आ जेकरा देस-भगती के सामने रामभगत हनुमानो सकुचात रहन।

सम्प्रदाय-भेद, जाति-भेद, ऊँच-नीच के भेद आ अहिंसा में महात्मा गांधी के पक्का चेला। पतित-पावन-गंगा-जल। अपना विचार-पथ में अविचल-हिमालय। शील-शालीनता में अथाह-समुन्दर। त्याग के दधीचि। चरैवेति-चरैवेति में ओनचासो पवन। लोभ, मोह, मद, मात्सर्य खातिर अछूत आ दुनिया के गरीबन के सभ दुख ढोवत ! ऊ जयप्रकाश ! हमनीं भोजपुरियन के सुरुज, जे पिछला अक्टूबर के ८ तारीख के अस्त हो गइल। भोजपुरी महल के बीचिला पाया टूट के भरहा गइल। देस के गरब-गुमान मेंट गइल। बिहार-सितार के तार टूट गइल। हमनीं के हीरा लुटा गइलें"।[1]

---

१. भोजपुरी अकादमी पत्रिका, वरिस १, अगस्त १९७९, अंक ५

भोजपुरी के यशस्वी साधक

डा० उदयनारायण तिवारी

डा० उदयनारायण तिवारीजी हिन्दी भाषा-साहित्य के नामी गिरामी विद्वान आ भोजपुरी क्षेत्र के एगो बड़हन गौरव रहनीं। उहाँ के जनम पूर्वी उत्तर प्रदेश का एगो अइसन जिला में भइल रहे जवन करीब तीन तरफ से बिहार का पुराना आरा, छपरा जिलन से घिरल बा। ऊ जिला ह बलिया जवना का आजादी के अनेक दीवाना आ साहित्य का साधक लोग के जनम देवे के सौभाग्य मिलल। आजादी का बलिवेदी पर अपना जान के आहुति देवेवाला पहिलका शहीद मंगल पांडे के जनम-धरती बलिये ह आ डा० भगवतशरण उपाध्याय, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा० परशुराम चतुर्वेदी, डा० कृष्णदेव उपाध्याय जइसन साहित्य के महर्षियो लोग एही जिला में पैदा भइल। डा० उदयनारायण तिवारी जइसन साधक का जनम से ई धरती धनिधनि हो गइल।

तिवारीजी के जनम २ जुलाई, १९०३ ई० में अपना ननिअउरा एगो छोटहन गाँव पाण्डेयपुर में भइल। नाना का कवनो दोसर सन्तान ना रहे, एहसे ऊ आपन सब चल-अचल सम्पत्ति तिवारीजी के लिखि दिहलें। तिवारीजी के पैतृक गाँव पीयरपांती (बलिया) ह। इहाँ का कुलीन शांडिल्य-गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में पैदा भइनीं। अपने के बाबा पं० रामयति तिवारी ज्योतिष के लमहर विद्वान रहनीं आ चाचा पं० शिवपूजन तिवारी व्याकरण आ पुराण के। एह कुलीन ब्राह्मण परिवार में संस्कृत पढ़े-पढ़ावे के परंपरा रहे। अपने के रुचि बचपन में संस्कृत का तरफ रहे बाकि अँगरेजी शिक्षा से आकर्षित होके अपने के चस्पा अँगरेजी स्कूल में भरती करवनीं। १९२३ ई० में अपने का बलिया का सरकारी जिला स्कूल से हाई-स्कूल पास कइनीं। हाईस्कूल पास कके अपने का प्रयाग चलि अइनीं। १९२५ में कायस्थ पाठशाला से आई. ए. आ १९२७ में प्रयाग विश्वविद्यालय से बी. ए. पास कइनीं। बी. ए. में अँगरेजी विषय का अलावा हिन्दी आ अर्थशास्त्र के अध्ययन कइनीं। १९२९ में अपने का प्रयाग से अर्थशास्त्र में एम. ए. कइनीं। बाकि अध्ययन में रूचि बढ़ते गइल। १९३० में महान भाषाविद् डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या से अपने का पटना में भेंट भइल आ ऊँहे का प्रेरणा से अपने का संस्कृत, पालि आ प्राकृत का अध्ययन में जुट गइनीं। १९३१ से १९३५ के अवधि में तिवारीजी एह विषयन के गंभीर अध्ययन कके हिन्दी आ पालि में एम. ए. कइनीं।

पालि भाषा के शिक्षा अपने का महापण्डित राहुल सांकृत्यायन आ भदन्त आनन्द कौशल्यायन से मिलल। १९४१ में तिवारीजी कलकत्ता जाके कलकत्ता विश्व-विद्यायल से तुलनात्मक भाषा विज्ञान से एम. . कइनीं। अपने का चार विषयन से एम. ए. रहीं।

एक बात के चर्चा कइल इहाँ जरूरी वा। जवना घरी तिवारीजी एम. ए. पास कइनीं, ओह घरी सरकारी नौकरी उहाँ का आसानी से मिलि जाइत बाकि तिवारी जी के आजादी का प्रति प्रेम उहाँ के जीवन के धारा बदल देहलस। ऊ असहयोग आन्दोलन के समय रहे। तिवारीजी महान स्वतंत्रता सेनानी आ हिन्दी के अडिग पुजारी श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन का सम्पर्क में आके सरकारी सेवा से अलग रहे के व्रत लिहनीं। एतने ना हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवैतनिक सेवा देके अपना त्याग आ साहित्य-प्रेम के परिचय दिहनीं। ई संसार कर्मभूमि ह। जीविको जरूरी रहे। एही से १९३० में तिवारीजी दारागंज का एगो हाईस्कूल में गणित आ इतिहास के अध्यापक पद सकरनीं। अध्यापक त हो गइनीं बाकि उच्च अध्ययन आ हिन्दी भाषा आ साहित्य के गंभीर ज्ञान-पिपासा से मन बेचैन हो उठल। एही सिलसिला में डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या से मिले खातिर उहाँ का कलकत्ता गइनीं। उहाँ गइला पर मालूम भइल कि डा० साहेब त पटना गइल बाड़ें। कलकत्ता से सीधे तिवारीजी पटना अइनीं। सन् १९३० में पटना में 'प्राच्य विद्या सम्मेलन' में आके तिवारीजी देखनीं कि सुनीति बाबू पालि पर धुआँधार भाषण दे रहल बाड़ें। भाषण का वाद उहाँ से मिलि के तिवारीजी कहनीं कि हम हिन्दी में पी. एच. डी. कइल चाहतानीं। रउआ हमार गाइड बनीं। सुनीति बाबू तिवारीजी के परिचय जानला का वाद उनका कान्हे पर हाथ ध के भोजपुरिये में बतिआवे लगलें आ कहलें कि "हम त तोहरे जइसन आदमी के खोजतानीं। तू भोजपुरी भाषा पर काम कर, अबहीं एह पर काम नइखे भइल। हम तहार पुरहर मदद करब।" एह अवसर के चर्चा तिवारीजी का शब्दन में नीचे वा—

"यहाँ सम्मेलन में मुझे सुनीति कुमार चटर्जी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने उनसे उच्च अध्ययन की आकांक्षा व्यक्त की और बताया कि मेरी मातृ-भाषा भोजपुरी है, गणित और इतिहास का अध्यापक हूँ। क्या आप मुझे भाषा विज्ञान के अध्ययन में नियोजित कर सकते हैं। डा० चटर्जी ने बड़े स्नेह से मेरी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा कि भाषा विज्ञान के अध्ययन के लिये तुम सबसे उपयुक्त आदमी हो। अच्छा हो कि तुम अपनी मातृभाषा भोजपुरी पर डी० लिट० का अधिनिबन्ध तैयार करो। उन्होंने मुझे यह भी आदेश दिया कि चार दिनों जब-तक पटना में रहें मैं उनके साथ रहूँ।········ वे इन चार दिनों में मुझे निरन्तर

भाषा विज्ञान एवं ध्वनि विज्ञान के विषय में व्याख्यान देते रहे। इन चार दिनों में मुझे ऐसे लगा कि किसी विशिष्ट लोक में विचरण कर रहा हूँ। तबतक के जीवन में मुझे ऐसे विद्याचरण सम्पन्न एवं स्निग्ध व्यक्ति से मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। मैंने इसे अपने पूर्वजन्म के पुण्य का फल माना कि जिन गुरु की खोज में था, वे मुझे मिल गये।"[१]

डा० चटर्जी से भेंट का बाद लगातार बारह बरिस ले तिवारीजी भोजपुरी पर शोध कइनीं। एह सिलसिला में उहाँ का नेपाल का बुटवल से लेके बिहार आ उत्तर प्रदेश का पूरा भोजपुरी इलाका में घूमे के आ बोलियन के सर्वेक्षण के मौका लागल।

चटर्जी साहेब का निर्देश पर उहाँ का डा० बाबूराम सक्सेना आ प्रयाग विश्वविद्यालय के संस्कृत के प्राध्यापक पं० क्षेमेशचन्द्र चट्टोपाध्याय से ज्ञान प्राप्त कइनीं। डा० सक्सेनाजी अपने के 'इन्टरनेशनल फोनेटिक वर्णमाला' से परिचय करवनीं। डा० सक्सेना का निर्देशन में अपने का करीब एक सौ पृष्ठ के 'ए डाइलेक्ट आफ भोजपुरी' निबन्ध तैयार कइनीं। ई निबन्ध बाद में 'बिहार, उड़ीसा रिसर्च सोसायटी' का जर्नल में प्रकाशित भइल जवना के डा० ग्रियर्सन आ सुनीति बाबू जइसन भाषाविद् लोग बड़ा बड़ाई कइल। १९४२ में अपने के शोध प्रबन्ध तइयार हो गइल आ इलाहाबाद विश्वविद्यालय में जमा भइल। १९४४ में विश्वविद्यालय अपने के डि० लिट० के उपाधि दिहलस। बाद में १९५४ में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना से ओकर हिन्दी रूपान्तर "भोजपुरी भाषा और साहित्य" साहित्य जगत में आइल। डी० लिट० के उपाधि पावला का बाद ओही साल उहाँ का इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में अध्यापक के रूप में चुन लिहल गइनीं। ओह घरी डा० अमरनाथ झा जी उपकुलपति रहनीं। जब तिवारीजी आपन पदभार सम्हारे गइनीं, झाजी अपना कमरा में बोला के चाय पिअवनीं आ चले का बेर दरवाजा तक छोड़े अइनीं। उहाँ का बतवनी कि जब केहू नया आदमी काम सम्हारे आवे त ओके सम्मान एही तरे करेके चाहीं।

तिवारीजी डा० अमरनाथ झा जी से आ महापण्डित राहुल सांकृत्यायन से भोजपुरिये में बतिआईं। ओहिजा ओह समय हिन्दी विभाग के प्रमुख डा० धीरेन्द्र वर्मा जी रहनीं। उहाँ का भाषा विज्ञान पढ़ावे के भार तिवारीजी पर सउँपनीं। तिवारीजी अपना स्वाध्याय आ प्रतिभा का बल पर डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० बाबूराम सक्सेना आ डा० विश्वनाथ प्रसाद जी जइसन उच्च कोटि का भाषा वैज्ञानिक

१. भोजपुरी अकादमी पत्रिका (शोध अंक) में प्रकाशित एगो लेख से।

लोगन में गिनाये लगनीं। एही से १९५३ ई० का मई महीना में जब पूना का डेकन कॉलेज में लन्दन विश्वविद्यालय के डा० टर्नर का सभापतित्व में देश के गिनल-चुनल भाषा वैज्ञानिक लोग के सभा भइल त डा० तिवारी जी बोलावल गइनीं। धीरे-धीरे तिवारीजी एगो मशहूर भाषाविद् का रूप में अपने के स्थापित क दिहनीं। १९५६ में उहाँ का डेकन कॉलेज में "हिन्दी भाषा के उद्गम और विकास" विषय पर भाषण देवे खातिर निमंत्रित कइल गइनीं। एतने ना १९५८ ई० में तिवारीजी भाषा विज्ञान के गम्भीर अध्ययन खातिर अमेरिका गइनीं। एइजा से उहाँ के अध्ययन आ अध्यापन का सिलसिला में निर्देशन के भाषा शुरू हो गइल। लगभग छः महीना तिवारीजी पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय में रहनीं जहवाँ डा० जैलिंग हेरिस आ डा० होनिश्ल काल्ड से संपर्क भइल। एही यात्रा में तिवारीजी का वाशिंगटन आ न्यूयार्क में अमेरिका का लिंग्विस्टिक सोसायटी से सम्पर्क भइल।

एह शोधयात्रा का क्रम में उहाँ का इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी आ रूस में जाके भाषा विज्ञान के मजिगर अध्ययन कइनीं। १९६० ई० में विदेश से लौटला पर अपने के बहाली जबलपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में प्रोफेसर आ अध्यक्ष पद पर भइल आ ओहीजा से रिटायरो कइनीं।

तिवारीजी साहित्य जगत के एगो विभूति रहनीं। उहाँ के नाम भाषाविद् लोग में बड़ा आदर से लिहल जाला। अनेक साहित्य अकादमी आदि उच्च समिति-यन में उहाँ का प्रमुख सदस्य का रूप में बड़ा निष्ठा से काम कइनीं। हिन्दी शब्द बनावे खातिर शिक्षा मन्त्रालय में हिन्दी निर्देशालय का ओर से जे समिति बनल ओमें तिवारीजी के सराहनीय योगदान रहे। उहाँ का निर्देशन में कई आदमी का पी० एच० डी० के उपाधि मिलल।

तिवारीजी भारतीय परम्परा के पोषक रहीं। उहाँ का मन में गुरुजन के प्रति अगाध श्रद्धा रहे। अपना कमरा में डा० सुनीति कुमार चटर्जी, डा० बाबूराम सक्सेना, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन जइसन गुरुजन के फोटो टँगले रहनीं। गुरु पूर्णिमा का दिन उहाँ का गुरुजन का घरे मिठाई ले गइल ना भुलाईं। दोस्ती खूब निबाहीं। विचार से भिन्नता रहलो पर दोस्ती में अन्तर ना पड़े। पारिवारिक संस्कार के भी निर्वाह में कोर कसर ना राखीं। एक बेर विदेश का एगो होटल में ठहरल रहीं आ अपना कमरा में खिचड़ी अपने बनाईं। प्रभाकर माचवे जी जब ओह होटल में जगह खातिर गइनीं त मैनेजर कहलें कि भारत के लोग के कमरा देवे में दिक्कत बा काहें कि ओइजा के एगो विद्वान ठहरल रहले नहें त कमरा गन्दा

क देले बाड़न। उहाँ के परिवार शुद्ध वैष्णव। उहाँ के पत्नी अन्तिम समय अचलस्त हो गइल रहनीं। कई बरिस ले तिवारीजी अपने भोजन बनवलें काहें कि ऊ नौकर के बनावल ना खात रहस। बताईं ई बड़प्पन, सादगी आ परिवार का प्रति कर्त्तव्य-बोध। ए घड़ी के अँगरेजी पढ़ुआ लोग खातिर त इ अचरज बा। बलिया वाला ठेठ भोजपुरी के बाना त रहबे कइल बोलियो उहे। कॉलेज में पढ़ावत में उनकर बोली रहे—मारब, कपार फूटि जाई, गोड़ हटाव, कहाँ ताकतार आदि।

तिवारीजी गाँधीवादी रहलन। ऊ स्वावलम्बन के हिमायती रहस। एक बेर उनकर छोट लड़िका कार खरीदे के रुपया मँगलन आ कहलन कि उनका स्टेटस खातिर जरूरी बा त तिवारीजी कहनीं कि स्टेटस अपना भरोसे बनावल जाला दोसरा का कमाई से ना।

उहाँ का निजी पुस्तकालय में दू लाख से अधिक कीमत के किताब रहे। तिवारीजी एगो बड़हन गुणग्राही रहनीं। आचार्य महेन्द्र शास्त्री के भोजपुरी सेवा प्रसिद्ध रहे। १९७५ में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का पहिलका अधिवेशन के अध्यक्षता करत तिवारीजी कहले रहनीं—

"जब भोजपुरी के भगीरथ आचार्य महेन्द्र शास्त्री रहबे कइले ना जाने काहें हमरा के एह सम्मेलन के अध्यक्ष बनावल गइल।"

एह सन्दर्भ में हमरा एगो आउरी घटना याद परता। १९८३ में भोजपुरी अकादमी पटना के वार्षिकोत्सव रहे। तिवारीजी का साथे छवगो आउरी भोजपुरी साहित्यकार लोग के अभिनन्दन कइल गइल। ओह अवसर पर अपना भाषण में दण्डीस्वामी विमलानन्द सरस्वती के लिखल भोजपुरी महाकाव्य बउधायन (अप्रकाशित) के चर्चा कइनीं आ अइसन उत्तम महाकाव्य के प्रकाशन करे खातिर भोजपुरी अकादमी पटना से अपील कइनीं। इहाँ का अपील के महत्व देके अकादमी बउधायन के प्रकाशन पर देहलस।

अइसन साधक तिवारीजी के हमार कोटि-कोटि प्रणाम।

भोजपुरी के उन्नायक कवि

श्री धरीक्षण मिश्र

ऋषिकल्प पं० धरीक्षण मिश्र जी भोजपुरी खातिर समर्पित एगो अइसन व्यक्तित्व बानीं जेकरा पर गाँधी आ विनोबा के सादगी, डॉ० हिल के अध्ययनशीलता आ महाराज तमकुही का शानदार जीवन के प्रभाव परल बाटे।

पैर में खड़ाऊँ, कमर में ओछ पनहा के खादी के ४ हाथ के लंगोटी आ ओइसने चादर, दूबर-पातर-लमहर-साँवर देह। फुर्तीला अइसन कि अस्सी बरिस के उमिर निगिचइलो पर लरिकन अस फान के पेड़ पर चढ़ि के कवनो फल तूड़ ले आइल कठिन काम नइखे। करीब २० बरिस से मोतियाबिन्द के प्रभाव बाटे बाकी लिखे-पढ़े में क़वनो दिक्कत नइखे।

मिश्रजी के जनम चैत रामनवमी सम्वत् १९६० विक्रमी के पूर्वी उत्तर प्रदेश का आखिरी पूर्वी छोर पर देवरिया जिला का बरियारपुर गाँव (तमकुही राज से २ मील पूरब) में भइल। पिता पं० जगदेव मिश्रजी बड़ा सुखी-सम्पन्न गृहस्थ रहनीं। सुने में आवेला जे एके चरन पर ३०-४० गो बैल जब नादे लागसँ आ गाइ-भईंस अपना-अपना ढाठर में बइठ के कवरी भांजस त इहाँ का दुआर के शोभा देखते बने।

अइसन घर में पलात धरीक्षण जी के प्राथमिक शिक्षा तमकुही राज प्राइमरी स्कूल में भइल। बाद के शिक्षा मिडिल स्कूल पड़रौना में। हाईस्कूल के पढ़ाई खातिर जयनारायण हाईस्कूल वाराणसी में नाँव लिखाइल बाकी थोरे दिन का बाद लंडन मिशन स्कूल वाराणसी में अपने चल गइनीं आ ओहिजे से १९२६ ई० में मैट्रिक पास कइनीं। एह स्कूल के अवैतनिक प्रिंसिपल आ क्रिश्चियन धर्म के विद्वान मिस्टर हिल के नजदीकी अपने का मिलल त जीवन में एगो नया मोड़ आ गइल। ई उहे मिस्टर हिल हउएँ जे रामायण आ गीता के बहुत विद्वत्तापूर्ण टीका अंग्रेजी में लिखले बाड़ें। अध्ययनशील ऊ एतना रहलें जे प्रतिदिन नियम से १४-१५ घंटा पढ़त रहलें। वैचारिक उदारता उनका में ख़ूब रहे। एह सबके अमिट छाप मिश्रजी पर परल।

मैट्रिक पास कइला का बाद घर का लोग चहलो पर इहाँ का आपन पढ़ाई आगे ना बढ़वनीं आ आर्यसमाज से प्रभावित होके गद्दी (मुसलमान) शुद्धिकरण

का चक्कर में लगभग १९३० ई० तक रहनीं। एह बीचे विना कवनो परीक्षा दिहले स्वाध्याय का वल पर संस्कृत के अच्छा जानकारी हासिल क लिहनीं। प्रथमा परीक्षा देवहूँ के तइयारी भइल, बाकी दिआइल ना।

कुलीन आ सम्पन्न ब्राह्मण वंश के वालक का गद्दी शुद्धिकरण कइला पर गाँव घर से अनादर पावही के रहे आ उहो ओह युग में। बाकी एह अनादर के तनिको परवाह इहाँ का ना रहे।

मिश्रजी विद्यालय छोड़लें तबे से लंगोटी पहिरल शुरू क दिहनीं आ आजु ले निवाहतानीं। एकर कारन ई रहे कि घर के सम्पन्न आ पढ़ल-लिखल रहलो पर जब नोकरी आदि से कमा के ओह सम्पत्ति के कुछ जोरत नइखीं त अपना में अधिका खर्चो काहे करीं। इहाँ का जब कहीं जाये का होला त रोज व्यवहार के कुछ आवश्यक सामान-जइसे खड़ाऊँ, लोटा-डोरी, कम्बल आदि बोरा में धर लीलें। ऊ बोरा हमेशा साथे राखी लें, जे जबे मन करी तवे उठ के चल देव। बोलवनिहार से पूछल कवन जरूरी वा। एह डील डौल में मिश्रजी का कई जगह तिरस्कार मिल जाला।

हमरा इयाद बाटे—१९५३ ई० में श्री रामकृष्ण सिंह जी आ आचार्य महेन्द्र शास्त्री का प्रयास से सीवान में एगो विशाल भोजपुरी सम्मेलन भइल रहे। मिश्रजी बड़ा आदर से बोलावल गलइ रहनीं। हम ओह सम्मेलन में स्वयंसेवक के काम करत रहनीं। हमार डिउटी मंच का लगे रहे। खूब मजमा जमल रहे। दिन का सभा में प्रिंसिपल मनोरंजनजी के भाषण होत रहे। तवले मुख्य द्वार पर मिश्रजी के कवनो पागल बूझ के स्वयंसेवक लोग भीतर आवहीं ना देत रहे। हम दउर के अइनीं आ इहाँ के आदर का साथे ले जा के मंच पर बइठवनीं। इहाँ पर ओह अनादर के तनिको प्रभाव ना रहे। अपने आप में मस्त।

ऊपर वतावल गइल बा जे राजा साहब (तमकुही) का शानदार जीवन के प्रभाव इहाँ पर परल बा। तवे नूं अपने से टिकटो ना कटाइलें। कहीं जाये के होला त टिकट कटावे खातिर एगो आदमी रहेला। एही से जल्दी कहीं जइबे ना करीलें।

मिश्रजी अपने लगावल एगो बगीचा में छोटी-मुकी पलानी डाल के घर से कुछ दूर पर रहीलें। बगीचा में तरह-तरह के पेड़ बाड़े सन जवना से प्रायः बारहो मास फल मिलत रहेला। आ इहाँ का फल खूब खात रहीलें। एकान्त में लिखाई-पढ़ाई खूब चलत रहेला। ओह झोंपड़ी में अपना पुस्तकालय के निजी संग्रह के सजावत-सँवारत रहीलें। अब घर से कवनो खास मतलब नइखे, खाली खाये भर से

काम बाटे। विशुद्ध संन्यासी जीवन बितावते मिश्रजी भोजपुरी के सेवा-साधना में लागल बानीं।

हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेश से भोजपुरी सेवा खातिर इहाँ के ५००० रु० के पुरस्कार मिलल बाकिर ओह आयोजन में इहाँ का एह से ना गइनीं जे चेक लेवे खातिर हाथ पसारे के परी। बाद में संस्थान के सचिव, कविवर चन्द्रशेखर मिश्र का साथे आके ऊ चेक दे गइलें।

मिश्रजी अनुशासन के बड़ा पक्का हईं। इहाँ का बगीचा में दतुअन के चीरो उचिते स्थान पर राखल जाला आ जाड़ा का दिन में ऊ चीरा के ढेर जरा के तापल जाला। पुरान दस-बीस गो खड़ाऊँ एगो रसरी में बाहर पलानी का कोना में टाँगल बाटे। जब टूटेला त ओही में से जोड़ा लगा लिहल जाला। कुरता त इहाँ का पहिरबे ना करीलें। ऊर्ध्वमुखी आ अधोमुख निकलेवाला कपड़ा ना नूँ पहिरे के। ई पूछला पर कि मिर्जई त सस्तो कपड़ा के बन सकेला आ ऊ त पीछे से पहिरल-निकालल जाला त उहे काहें ना पहिरीलें, जवाब मिलल जे ऊ त मिर्जा (सैनिक) के पोशाक हवे, ऊ के पहिरी।

मिश्रजी हरिजन के बड़ा हिमायती हईं। हरदम अपना साथे हरिजन बालक के राखीलें। ओह बालक से आपन सब काम कराइलें। अपने जब खेत में बिना शीत-घाम के परवाह कइले जुट जाइलें त साथे काम करत मजदूर लोग का छठी के दूध इयाद आ जाला। बाकिर खिआवे आ मजदूरी देवे में हाथ खुलले रहेला। तबे नूँ गाँव घर में इहाँ के नाँव 'लुटाऊ' पड़ गइल बा।

इहाँ कीहाँ काम करेवाला हरवाह, धोबी, हजाम, लोहार आदि के जवरा ना देके खेत दिया गइल बाटे। इहाँ का चाहीलें जे जवन खेत जेकरा के दिया गइल बाटे ओकरा नावें लिख दिहल जाय। घर का विरोध का बावजूद इहाँ का अइसन कुछ कइयो देले बानीं।

मिश्रजी के बिआह मिडिले स्कूल में पढ़त खा हो गइल। बिआह करे के इहाँ का ना चाहत रहनीं। बाकी मालिक के हुकुम कइसे टारीं। बिआह हो गइला का बाद ससुरार के परिचय दे अपना संहतियन से कहले रहनीं जे—

फूस फास के घर बाटे, तीन हाथ के ओरी।
धन मधे धन उनका बाटे एगो दूबर घोड़ी।

बात इहे रहे जे ओह घरी लरिकाइये में बिआह हो जात रहे त ससुरार के महत्त्व का बुझाय ? एह घरी नूँ सेयान भइला पर, किदों लरिकाइये में सेयान हो जा तारें सन, तब बिआह होता, त अउरी सब हित-नाता भुला जाता, खाली एगो ससुरारिये के माला जपाता। सचहूँ भूख लगले पर नूँ अन्न के आदर दिआला।

मिश्रजी बचपने में खड़ी बोली आ भोजपुरी में छिटपुट कविता करत रहनीं। ओह घरी तमकुही के राजा इन्द्रजीत प्रताप बहादुर शाही का जनम दिन पर बाहरो से कवि लोग आवत रहे आ जम के कवि-सम्मेलन होत रहे। इहाँ के पिताजी ओह दरवार के बड़ा आदरणीय व्यक्ति रहनीं। जनम दिन पर कविता सुनावे खातिर पिताजी इहाँ के ले गइनी आ इहाँ का कविता से राजा साहब खुस भइलें आ इनामो दिहलें। तब से कविता के चसका लागल आ कविता के धारा फूट परल। एकर फल भइल जे १९३८ ई० में इहाँ का 'भइँसवार मण्डल' नाँव के एगो भोजपुरी संस्था खोलनीं आ एह संस्था का ओर से तरह-तरह के काम होखे लागल। राजा साहब का जनम दिन पर ओह साल 'भइँसवार मण्डल' का ओर से इहाँ का अउरी कवि लोग के साथे लेके कविता सुनवनी आ इनाम पवनीं। इनाम देवे का वेरा राजा साहब कहनीं जे "भइँसवार मंडल" के कवि लोगन के रूप त भइँसवार के रहल ह बाकिर कवितवा त खड़िए बोली के रहल ह। भइँसवार के कविता त भोजपुरी में होखे के चाहीं। मिश्रजी एह प्रोत्साहन वाक्य के महत्त्व दिहनीं आ भोजपुरी कविता, जवन पहिले कबो-काल्ह लिखात रहे, ढंग से लिखे लगनीं। ओकरा बाद त राजदरबार से मिश्रजी के एतना सम्मान होखे लागल जे लोग इहाँ के राजकवि बूझे लागल। यद्यपि मिश्र जी ई बात कबूल ना करीलें, काहे जे दरबारी कवि लोग में जवन तत्त्व पावल जाला तवन इहाँ में नइखे।

मिश्रजी संस्कृतो में छिटपुट कविता लिखले बानीं। एक बेर जामुन का पेड़ पर चढ़ के करिआइल जामुन तूर के खात रहनीं। तबले हवा के एगो झोंका आइल आ टहनी में अझुरा के जनेव टूट गइल। बभने के बालक बिना जनेव के जामुन कइसे खाई। इहे सोचत डाल पर बइठल एगो श्लोक बनवनीं—

विशाल वृक्षमारूढः यदि छिन्नोपवीतकः।
जम्बवादि फलमश्नीयात् तत्र दोषो न विद्यते !!

ई श्लोक पढ़-पढ़ के जामुन खाइल शुरू कइनीं आ भरपेट खइला का बाद उतरनीं।

एगो बारात में समधी कोहनाइल रहलें। वातावरण प्रतिकूल रहलो पर बाराती लोग इहाँ के कविता सुने खातिर व्याकुल रहे। तब एगो श्लोक बना के सुनवनीं—

वर जनक उदासः प्राज्यमर्थं न लब्ध्वा,
नव अतिथि सपर्याशक्त पक्षश्च वध्वा,
अशन विवृत वक्या मानवाः यत्रशेषाः
कवि कलित कलानामत्र को दत्तचित्तः

[वर के बाबूजी उदास चाड़ें पूरा दहेज ना मिलला से, बेटिहा लोग बाराती का सेवा में लागल बा, बाराती लोग खाये खातिर मुँह बवले बा । एह हालत में कविता सुने में केकर मन लागी ?]

मिश्रजी हिन्दी कविता खूब लिखले बानीं । इहाँ का हिन्दी कविता के एगो नीमन संग्रह हो सकता । बिस्तार भय से अधिक चर्चा ना करब । एगो बानगी—

'आत्म परिचय' शीर्षक कविता त बहुत बढ़हन बाटे । दू-चार पाँती देखीं—

तमकुही राज का हूँ किसान, पैदा होता घर अधिक धान पर, मैं जव के मोटे पिसान की लिट्टी घी में सान-सानकर एक वक्त ही खाता हूँ, परिचय अपना बतलाता हूँ । पर भोजन जो आता समक्ष, जब तक उसको लेता न भक्ष, तब तक भरता है पेट नहीं, कुछ थाली में वच जाय कहीं तो बार-बार पछताता हूँ । परिचय अपना बतलाता हूँ ।।

एह कविता में मिश्र जी का यथार्थ जीवन के बात साफ-साफ कहल गइल बाटे ।

संस्कृत व्याकरण का आधार पर 'हरि' शब्द का तीसरी विभक्ति में घी संज्ञा होके हरिणा बनेला । एह क्रम में मिश्र जी का हास्य से भरल दोहा के एगो बानगी देखीं—

हरि के आगे प्रथम जब 'घी' का हुआ प्रवेश ।
ना जने क्यों धरि लिये 'हरि' 'हरिणा' का वेश ।।

मिश्रजी का कवि के निखरल रूप भोजपुरिए में लउकेला । व्यंग्य कविता लिखे में इहाँ का माहिर बानीं । राजनीतिक आ सामाजिक दूँनू व्यंग्य इहाँ का रचना में भरपूर बाटे । राजनीतिक व्यंग्य कवितन में कुक्कुर के कहानी, साँप के सुभाव, बादर से रामराज्य, सुराज सैर करत बा, मिनिस्टरन की कार पर आदि प्रसिद्ध बाड़ी सन । एगो-दुगो बानगी लीं—

कथनी पर करनी फेराते नइखे,
दिमाग गरम रहता कबो सेराते नइखे
हर के दुगो बैल कइसे मान होइहें सन
जब एगो बूढ़ गाइ घेराते नइखे ।।

एगो अउरी देखीं—

बिहार सरकार का मव में बड़ा अभिमान बा,
युग जमाना पर तनिको ना ध्यान बा,
समता के भाव तनिको रुचते नइखे,

बड़का लोग के हजामत त खूबे बनावता,
बाकी छोटका लोग के पूछते नइखे ।।

सामाजिक व्यंग्य-काव्य में पेटू पाहुन, बरच्छा, तिलक, खीर खवाई, भतवान के मनावन, आदि उत्तम कोटि के रचना बाड़ी सन । कुछ उदाहरण देखीं—

"बेटा जब माथे मउर बान्हि के ससुरारी में आवेला,
तब बाप बिगड़ि के आसमान माथा पर उहाँ उठावेला ।
बाइसिकिल, घड़ी आ ट्रांजिस्टर जब घरे ना बासे चढ़ेला ।
वर सासु-ससुर का माथे तब ई सगरी बोझा मढेला ।।
दछिना बिआह में पंडितजी पा जाइले जवने प्रमाण ।
ओही हिसाब से करि दीले बड़-छोट वेद के विधि-विधाव ।

मिश्रजी का काव्य पर महाकवि केशव के प्रभाव बाटे । एह से इहों का काव्य में पाण्डित्य प्रदर्शन, उक्ति चमत्कार खूबे पावल जाला । "परिवार में अनुप्रास" कविता देखे लायक बाटे । अनुप्रास के पाँचगो भेद हवे—वृत्यनुप्रास, छेकानुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, लाटानुप्रास आ अन्त्यानुप्रास । मिश्रजी एह पाँचों के परिवार में बड़ा सूक्ष्म दृष्टि से देखले बानीं । तनी रउओं नजर दउराईं—

वृत्यनुप्रास—जेकरा के जे काम दिआत जई,
करते निज वृत्ति विकास रहे ।
कबे आगे रहे कबे पीछे रहे,
कबे साथी का साथ में बास रहे ।
एक बार कहीं कई बार वहीं,
करते जो अकेलो प्रयास रहे ।
घरे अइसन होखे सवाङ जहाँ
उहवें नित वृत्यनुप्रास रहे ।

उदाहरण—सनमति संहति सुमति से करे बेकति सब कार ।
वृत्ति विकास विचारहीं उहे वृत्ति अनुप्रास ।

छेकानुप्रास—हमरा ससुरारि के गाइ हवे,
होतवा हउ खेत हमार हवे ।
हउ बाछा हवे हमरे कोसिला,
एको पाई ना ओमे तोहार हवे ।
तब छेकानुप्रास के ओ घर में
समुझीं भइले अवतार हवे ।।

उादहरण—जेसे जेतना हो सके, छेके जर जाजात।
तहाँ छेक अनुप्रास के, दरसन होत छछात।।

पाण्डित्य से पूरिल कविता के दोसर बानगी लीं। ई कविता बड़हन बाटे। एकरा एक पंक्ति में पाण्डित्य भरल बा। पहिलिकी पांती देखीं—

"कुशी नगर में छबिस जनवरी"
कुशी नगर में छवि सज नव रीं।

इहाँ का कुछ चिन्तन प्रधान कविता लिखले बानीं। एह तरह का कवितन से भोजपुरी के भण्डार भर रहल बानीं। अइसन कवितन में "कवना दुखे डोली में रोअत जात कनियां।" के बहुत बड़ाई बाटे। कविता वड़हन बा, दु चार पांती देखीं—

चउदहे बरिस घर राम-राम छोड़ि दिहले त
पोथी के पोथी लोग लिखलें बा कहानियाँ।
जन्मभूमि छोड़ि देत बानी आजीवन हम
माथे पर चढ़ा के माई बाप के बचनियाँ।
हमरी बेर बाकी त दुकाहे दों सूखि गइल
वाल्मीकि, व्यास, कालिदास के कलमियाँ।
हमरा एह त्याग पर लिखाइल ना ग्रन्थ एको
एही दुखे डोली में रोअत जात कनियाँ।।

एहतरे इहां के समूचा काव्य पर नजर दउरवला से बुझाला जे इहां का तीन तरह के काव्य रचना कइले बानीं—

१. मुक्तक—एह ढंग के इहां के सैकड़न रचना बाड़ी सन-जवना के स्वानुभूति परक कहल जाई।

२. प्रकीर्णक—एह ढंग के वहुत रचना बाड़ी सन जवना में 'कवना दुखे डोली में रोअत जात कनियां', चुनाव के चार अध्याय, "सुराज सैर करत बा', मिनिस्टरन की कार पर आदि प्रधान बाड़ी सन।

३. खण्ड काव्य—"विआह" आ "कुक्कुर के कहानी।"

प्रचार का नांव पर नाक-भौं सिकोड़ेवाला एह कवि के अब तक एके गो कविता-संग्रह 'शिवजी के खेती' नांव से प्रकाशित हो सकल बाटे। इहो प्रकाश में ना आइत यदि डा० राजकुमार पाण्डेय आ पं० सुदामा शुक्ल ना भीड़ित लोग। 'शिवजी के खेती' मिश्रजी का पचहत्तरवीं वर्षगांठ पर प्रकाशित भइल।

ई बात त साफ जाहिर बा जे मिश्रजी अइसन अक्खड़ आ निस्पृह आदमी से घर के लोग खुश ना रह सकेला। घर के लोग त भौतिक सुख-सुविधा के सामान जुटावे वाला से खुश रहेला। घर का लोग से अनादर पाके मिश्रजी अउरी कवनो राह ना देख के जहर खाके सुतल रह जाये के सोचनीं। एकरा खातिर मन ही मन सब तइयारी हो गइल। तवले कुशीनगर स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रीडर आ हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० राजकुमार पाण्डेय मिश्रजी का अभिनन्दन के सब तइयारी कके इहां के बोलावे खातिर अइनीं आ बड़ा रिगिर कके लेइयो गइनीं। बस, मनवाली बात मने में रह गइल आ ओह महाविद्यालय में अभिनन्दन के प्रभाव ई भइल जे ओह जिला-जवार से आगे बढ़ के बिहारो में पं० लक्ष्मण पाठक 'प्रदीप' अपना गांवे सोहनरिया (कटेया) में बड़ा धूमधाम से इहां के अभिनन्दन-समारोह कइनीं। देवरिया जिला में उच्च विद्यालय दुधही, इण्टर कालेज तरया सुजान, फतेह मिमोरियल इण्टर कालेज तमकुही में त अभिनन्दन भइवे कइल सबसे बड़हन समारोह लोकमान्य तिलक इण्टर कालेज सेवरही में १९७१ ई० में अभिनन्दन आ 'शिवजी के खेती' के विमोचन एके साथे भइल। एह आयोजन में दूर-दूर के कवि साहित्यकार लोग के बोलावल गइल रहे। मिश्रजी १९८० के बाद से एगो अइसन पुस्तक भोजपुरी में लिखल शुरू कइले बानीं जवना में भोजपुरी के सब छन्द आ अलंकार के लक्षण आ उदाहरण कविते में बाटे। भोजपुरी भाषा-साहित्य के ऊ सौभाग्यशाली दिन होई जहिया ई पुस्तक प्रकाश में आई।

अइसन साधक कवि से अबहूँ बहुत उमेद बाटे। भगवान उहां के अउरी उमिर दीं जे भोजपुरी काव्य के बढ़न्ती होखो।



सरस्वती के वरद पुत्र

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

संस्कृत के सूक्ति बा—"कीर्तिः यस्य स जीवति।" जे नीमन काम करेला ओकर यश फइलेला आ उहें नाशवान देह पाइयो के अमर हो जाला। अइसने रहनीं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी।

द्विवेदीजी एगो मजिगर विद्वान आ समथिर साहित्यकार रहनीं। इहां का व्यक्तित्व के निखार अलगे रहे। स्वाध्याय का बल पर अइसन लमहर साहित्यकार द्विवेदीजी हो गइल रहनीं जे आवेवाली पीढ़ी खातिर एगो आदर्श रहनीं। अनुपम साहित्यिक देन इहाँ के बहुत बा।

१९३० ई० में इहाँ का शान्ति निकेतन में अध्यापक नियुक्त भइनीं जहाँ १९५० तक रहनीं। एह बीस बरिस का समय के पूरा सदुपयोग कइनीं। एइजा रहते हिन्दी के गौरव त बढ़इबे कइनीं, विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर का लगे रहि के जे कुछ जाने-सुने-सीखे के मौका मिलल त ओह अवसर के लाभो उठवनीं। एइजा रहत जे अपने के ख्याति शुरू भइल से धीरे-धीरे बढ़ते गइल। ओकरा बाद अपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद पर आ गइनीं आ १९५० से १९६० तक रहनीं। एइजा अपने का हिन्दी के सेवा करे के बहुत अवसर मिलल। एह सन्दर्भ में काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा के अध्यक्ष पद पर आके सभा के बहुत विकास कइनीं। १९६० में अपने चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद पर गइनीं आ हिन्दी के सेवा कइनीं। १९६८ में हिन्दू विश्वविद्यालय में 'रेक्टर' पद पर अपने के नियुक्ति भइल। १९७१ ई० से अपने उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के अध्यक्ष पद के स्वीकार कके अकादमी के काम बहुत आगे बढ़वले रहनीं। बाद में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष आ कार्यकारी अध्यक्ष भइनीं। एइजा ई बात जाने लायक बा जे उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, हिन्दी समिति, हिन्दी पुरस्कार समिति आदि हिन्दी सम्बन्धी कुल संस्थावन के मिला के हिन्दी संस्थान राजकीय स्तर पर कायम कइल गइल बा जवना के अध्यक्ष मुख्यमंत्री पदेन होइलें।

आचार्यजी तीनूं ढंग से हिन्दी का सेवा में बड़ा मनोयोग से जुटल रहनीं—

अध्यापन कके, साहित्य-सृजन कके आ हिन्दी संस्थन के सफल पदाधिकारी रूप में सहयोग कके। साहित्य-सर्जक का रूप में त अपने के यश अमर बा। समालोचक आ ललित निबन्ध-लेखक का रूप में अपने के एगो अलगे स्थान बा। अपने के लिखल मौलिक ग्रन्थ सूरसाहित्य, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, साहित्य का मर्म, हमारी साहित्यिक समस्याएँ, विचार प्रवाह, विचार और वितर्क, हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास, प्राचीन भारत के कथात्मक विनोद, अशोक के फूल, बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्दलेख मध्यकालीन धर्मसाधना, नाथ सम्प्रदाय, मृत्युञ्जयी रवीन्द्रनाथ, कल्पलता, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा आदि चालिसन गो प्रकाशित बाड़न सँ। सम्पादित ग्रन्थन में विशेष बा—संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, संदेश-रासक। अनुदित ग्रन्थन में आपन महत्ता राखता 'प्रवन्ध चिन्तामणि', 'मेरा बचपन', 'लाल कनेर', विश्व-परिचय' आदि।

अपने का ललित निवन्धन मे गम्भीर पाण्डित्य, तीक्ष्ण प्रतिभा आ उत्कृष्ट चिन्तक के दर्शन होला। अपने अपना निवन्धन में गम्भीर से गम्भीर बात बड़ा सहज शैली से कह देले वानी। शिरीष के फूल, अशोक के फूल, नाखून क्यों बढ़ते हैं? आदि एही ढंग के निबन्ध बाडन सँ। अपने का उपन्यासन में 'बाणभट्ट की आत्मकथा' अपना ढंग के अनमोल ग्रन्थ बा। एइमें ओह घरी के सामाजिक सांस्कृतिक चित्र देखते बनेला, ओह उपन्यास का शैली के त कवनों बाते नइखे एकदम अपना ढंग के मौलिक। अपने के दोसरका-तिसरका उपन्यास 'चारुचन्द्र-लेख' आ 'पुनर्नवा' सचहूँ बेजोड़ बाड़न स। केकर हिम्मत बा जे एह उपन्यासन के जोड़ा कहीं से खोजि के लगा दे। एगो प्रकाशन वा—'अनामदास का पोथा'। उपनिषदन का कथा पर आधारित इहो पुस्तक अनूठे बा। कई दर्जन किताब त अधूरा आ अप्रकाशित परल बा। कब ऊ सुदिन आई जे ओह सबके दर्शन होई।

जे केहू का आचार्यजी का साथे बइठे के मौका मिलल होई ऊ अनुभव कइले होई जे हँसी के मजा लेत, बीच-बीच में ठहाका लगावत कतना नया-नया बात कहि देत रहनीं। बात-बात में मनोविनोद। ओह दिन का बात में 'नाई' शब्द पर बात चलि परल। अपने बतवनीं जे पाली में 'नहापित' शब्द बा, एकरा पहिले संस्कृत में 'स्नापित' के प्रयोग भइल होई, उहे फिर घिसत-घिसत 'नापित' हो गइल आ अउरी घिसल त 'नाई' बनि गइल। अपनापन का साथे बतियावत में प्रसन्नता मुँह पर नाचते रहत रहे।

सब गुन से भरल व्यक्तित्व में जइसन ऊँचाई रहे, हृदय में जइसन विशालता रहे, ओइसने देहियो नूँ रहे। झलकत लिलार, घन मोंछ, उज्जर केश, चमकत आँख आ पान कचरत मुंह। 'सादा सबके दादा' कहावत द्विवेदीजी का जीवन में सचहूँ चरितार्थ रहे। धोती, कुर्ता आ चादर (शुद्ध खादी) मस्त मौला आ गम्भीर चाल में गुरुता के जाल, अपनैती भरल व्यवहार, बोल में मिसिरी के घोल। ई रहे द्विवेदी जी के सामान्य व्यक्तित्व परिचय। परिचित लोग से धधा के मिलल अपने का स्वभाव रहे। विनम्रता त रोम-रोम में रमल रहे। घमण्ड के कहीं दर्शनो ना होत रहे। का मजाल जे स्वाभिमान का धक्का लागे। उच्च भाव से भरल कथनी-करनी में एक रस।

आचार्यजी का व्यक्तित्व पर गुरुदेव का आदर्श चरित्र के प्रभाव देखल जात रहे तबे नू स्वागत-सत्कार में ओतना माहिर रहनीं। अतिथि का आतिथ्य में अपनहीं पान लगा के देत रहनीं ई बात जगजाहिर रहे।

'विद्वान सर्वत्र पूज्यते' का अनुसार अपने के पूजा सब जगह होत रहे। यश के सुगन्ध कहाँ ना फइलल रहे? लखनऊ विश्वविद्यालय से डी० लिट्० के उपाधि मिलल रहे। भारत सरकार पद्मभूषण से सम्मानित कइले रहे। द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन मारिसस में भारत सरकार का प्रतिनिधि मंडल के वरिष्ठ सदस्य अपने रहनीं। मारिसस में राष्ट्रीय सम्मान त अपने के मिलबे कइल, सुदूर गाँव के परिवार के परिवार अपने का स्वागत में लट्टू रहे।

कहल जाला जे आरा, बलिया, छपरा, भोजपुरी के अँचरा'। भोजपुरी माई का एही अँचरा तर एह स्वनामधन्य साहित्यकार के जनम भइल बलिया जिला का आरत दुबे के छपरा ओझवलिया गाँव में सावन सुदी ११ संवत १९६४ (१९ अगस्त १९०७) में। पं० आरत दूबे अपने के परदादा रहनीं। पिताजी के नाँव पं० अनमोल दूबे रहे। देवी-देवता के पूजा करत ९६ बरिस का अन्तर में पं० अनमोल दूबेजी के देहान्त भइल। माताजी पहिलहीं जात रहनीं। अपने के बिआह सुखपुरा (बलिया) में भइल। अपने का साहित्यकार जीवन में अनुपम संगिनी श्रीमतीजी रहनीं। परिवार खूब भरल पूरल बा। चारगो बेटा एकरा बाद बेटी। भाइयो-भतीजा लोग बाटे। अंतिम समय में सब बेटा-बेटी के शादी-बिआह कके अपने निश्चिन्त साहित्य सेवा करत रहनीं। अपने के कहनाम रहे जे 'फोर्सबानप्रस्थ अपनवले बानी' बात ई बा जे चार जना बेटा, सब केहू पढ़ि लिखि के अपना नौकरी पर बा लोग। वाराणसी का ओतवत घर में दुइये प्रानी। इहे नूँ बानप्रस्थ जीवन ह।

अपने के दृढ़ विचार रहे—"कुर्वन्नेवहे कर्माणि जिजिविषेत शत ॐ समा।" तबे नूं एतना काम कइला का बादो हिम्मत कम ना भइल रहे। अंतिम घरी बहुत काम नधाइल रहे। एकरा साथे अपने इहो सोचत रहनीं—"अति दीर्घं जीवितत्वाद् व्यासेन हारितं यशो हन्त!"

द्विवेदीजी अपना साहित्य में भारतीय संस्कृति के पोषक का रूप में हर जगह दिखायी परतानीं।

"द्विवेदीजी के लेखन के माध्यम हिन्दी जरूर रहे, बाकिर उहाँ का भोजपुरी के जवन सेवा कर देले बानीं, दोसरा से संभव नइखे। उहाँ के परमप्रिय कवि रहले कबीर, जे भोजपुरी के आदिकवि रहले। 'कबीर' के जइसन सरस अध्ययन उहाँ का परोस चुकल बानीं, दोसर कवनो देखे में नइखे आइल। कबीरे काहें, सम्पूर्ण नाथ आ सिद्ध साहित्य जवना में काफी सामग्री भोजपुरी के बा, उहाँ के शोध आ अध्ययन के विषय बनल आ उहाँ का लेखनी से उजागर भइल। आचार्य द्विवेदीजी के रचनात्मक कृतियन में भोजपुरी लोक-संस्कृति खूबे उजागर भइल बा। लोरिक आ सँवरू भोजपुरी लोक-जीवन के मिथक-व्यक्तित्व हो चुकल बाड़े आ इहे जोड़ी ग्वालरिक आ श्यामरूप का रूप में 'पुनर्नवा' में पुनर्नवित भइल बा। भोजपुरी जीवन के इतिहास-भूगोल आ भोजपुरी संस्कृति के रस-गन्ध उहां का रचनन में जगह-जगह बड़ा जीवन्त होके झांक रहल बा। भोजपुरी के भाषिक शक्ति आ स्वरूप पर उहाँ का खूबे चिन्तन-मनन कइले रहीं आ अपना वैदुष्यमूलक काम में ओकर मजिगर उपयोगो करत रहीं। हिन्दी के ऐतिहासिक व्याकरण पर काम करत बानीं, जवना राष्ट्र के नैरुक्तिक व्याख्या संस्कृत से ना हो पावत रहे ओकर सुमंगल व्याख्या उहाँ का भोजपुरी से खोज लेत रहीं।

भोजपुरी खातिर उहाँ का हृदय में अपार ममता रहत रहे आ भोजपुरी के कवनो रचनात्मक कृति देख के उहाँ का बहुत सुख मिलत रहे। श्री भोलानाथ गहमरी के भोजपुरी कविता-संग्रह 'बयार पुरवैया' के भूमिका उहाँ का सन् १९६४ में लिखले रहीं, जवना में भोजपुरी के 'बड़ी सशक्त भाषा' भइला के घोषणा कइले रहीं।

१९७३ में, जब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गठन भइल त एकर सदस्यता उहाँ का बेहिचक सँकार लिहनीं। एह सम्मेलन के पटना में आयोजित दोसरका अधिवेशन के अध्यक्षता उहें का कइनीं। उहाँ का अध्यक्षता से भोजपुरी के आ सम्मेलन के गौरव बहुत बढ़ल, एह में सन्देह नइखे। एह सम्मेलन के अध्यक्ष पद से उहाँ का जवन भाषण कइनीं ऊ भोजपुरी साहित्य के अनमोल निधि बा।

'सोगहग' शब्द के व्याख्या 'सयुग भाग का रूप में करत, उहाँ का मातृभाषा आ राष्ट्रभाषा के सामंजस्य के जवन स्वरूप स्पष्ट कइनीं ऊ भोजपुरिये लोग खातिर ना, एह बहुभाषी देश के हर भाषा-भाषी खातिर दिशा-निर्देश के काम करी।'[1]

अइसन यशस्वी साहित्य-साधक के मृत्यु १९७९ ई० में दिल्ली में भइल। प्रसिद्ध आलोचक डॉ० नामवर सिंह आदि के प्रयास से इहाँ का महायात्रा में लाखन लोग जुट गइल रहे जवन द्विवेदीजी का लोकप्रियता के परिचायक रहे। एह महान विभूति खातिर शत-शत नमन।

प्रकाशित—अ० भा० भो० सा० सम्मेलन का
तिसरका अधिवेशन का स्मारिका में—
ओकर संशोधित रूप



१. श्री पाण्डेय कपिल-'उरेह' (१९७९, वर्ष-४, अंक-३) का सम्पादकी
श्रद्धाञ्जलि समर्पण से।

सुविख्यात लोक साहित्यकार

डा0 कृष्णदेव उपाध्याय

अइसे त भोजपुरी साहित्य के विद्वानन में डा० कृष्णदेव उपाध्याय के नाँव आगे बड़ले बाटे, समूचा लोक साहित्यो का साहित्यकार लोगन में उपाध्यायजी के नाम सबसे आगे बा। इहाँ के जनम सन् १९१० ई० में श्रीमती मूर्ति देवीका गर्भ से कृष्ण जन्माष्टमी का दिने बलिया जिला के सोनबरसा गाँव में एगो पण्डित घराना में भइल। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन जनम भइला से इहाँ के पिता पं० रामसूचित उपाध्यायजी कन्हैया (कृष्णदेव) नाम रख दिहनीं।

उपाध्यायजी के प्राथमिक शिक्षा अपना गाँव के प्राइमरी पाठशाला, माध्यमिक शिक्षा तत्कालीन मेस्टन हाईस्कूल (अब लक्ष्मीराज देवी इण्टर कालेज) बलिया में आ उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में भइल। इहाँ का हिन्दी आ संस्कृत में एम. ए. के उपाधि योग्यतापूर्वक पवले बानीं। लखनऊ विश्वविद्यालय से हिन्दी में 'भोजपुरी साहित्य का अध्ययन' शीर्षक विषय पर सन् १९५१ ई० में पी. एच. डी. के उपाधि पवनीं। एकरा अलावा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से 'साहित्यरत्न' के परीक्षा सम्मान के साथ पास कइनीं।

डॉ० उपाध्यायजी गवर्नमेन्ट ट्रेनिंग कालेज आगरा आ लखनऊ, गवर्नमेन्ट डिग्री कालेज, नैनीताल आ गवर्नमेन्ट पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, ज्ञानपुर (वाराणसी) के हिन्दी विभाग में सहायक प्रोफेसर के पद पर लगभग बीस बरिस तक पी. इ. एस. ग्रेड में अध्यापन के काम कइनीं। सरकारी नौकरी से अवकाश प्राप्ति के बाद सन् १९६९ में इहाँ का लालबहादुरशास्त्री डिग्री कालेज, मुगलसराय में प्रिंसिपल के पद पर काम कइनीं। एकरा बाद सन् १९७१ ई० से ७४ ई० तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में यू. जी. सी. (U.G.C) के प्रोफेसर के रूप में शोधकार्य के निर्देशन कइनीं।

उपाध्यायजी कई बरिस से लोकसाहित्य के क्षेत्र में शोध-कार्य में लागल बानीं। 'भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन' नाँव के इहाँ के शोध प्रबन्ध भोजपुरी साहित्य पर बाटे। इहाँ के निर्देशन में अनेक छात्र अनुसंधान कइके आन पी. एच. डी. के उपाधि विश्वविद्यालयन से पवले बा लोग। उपाध्यायजी केवल भोजपुरिए लोक-साहित्य में शोध-प्रबन्धन के निर्देशन ना करीले, बल्कि अवधी लोक-साहित्यो पर कइगो शोध-छात्र लोग इहाँ का निर्देशन में पी. एच. डी. पा चुकल बाटे।

सब लोक साहित्यन से प्रेम भइलो पर भोजपुरी के लोकसाहित्य इहाँ के प्रिय विषय हवे।

एह देस में लोक-साहित्य के विभिन्न विधा के संग्रह, सम्पादन आ प्रकाशन के प्रगति ले आवे खातिर उपाध्यायजी सन् १९५८ ई० में 'भारतीय लोक-संस्कृति सम्मेलन' के सहयोगी लोग के साने स्थापना कइनीं, जवना के अधिवेशन सन् १९५८ में प्रयाग में, सन् १९५९ में वम्बई में आ उज्जैन (१९६१) में भइल रहे। एह अधिवेशन में भारत के चोटी के लोक साहित्य के विद्वान एकट्ठा भइल रहलन। एह सम्मेलनन के विभिन्न गोष्ठियन में ई लोग आपन-आपन विद्वतापूर्ण लेख पढ़ले जवना के संग्रह उपाध्यायजी आ शंकर सेन गुप्त के सम्पादकत्व में 'स्टडीज इन इण्डियन फोककल्चर' कलकत्ता से प्रकाशित हो चुकल बाटे।

उपाध्यायजी वाराणसी में 'भारतीय लोक-संस्कृति शोध-संस्थान' नाँव के संस्था के स्थापना कइले वानीं जवना के इहाँ का संस्थापक-निर्देशक हयीं, एह संस्थान के आरे से 'जरनल ऑफ इण्डियन लोक-कल्चर' नाँव के एगो शोध पत्रिका उपाध्यायजी के सम्पादकत्व में प्रकाशित होत रहे जवन अर्थाभाव के कारण बन्द हो गइल। एह शोध संस्थान से लोक-साहित्य के प्रचार खातिर कइगो पुस्तको प्रकाशित कइल गइल वा जवना में 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास' प्रधान बाटे। एह शोध-संस्थान में कई गो देसी आ विदेसी शोध-छात्र आके अपना शोध विषय पर अनुसंधान करेला लोग। एही संस्था का ओर से पिछला वर्ष शान्ति निकेतनवाला अधिवेशन में प्रसिद्ध लोक-साहित्यकार पं० गणेश चौबे के अपना स्वर्गीया माताजी के नाम पर १००१/- रु० तथा चादर के सम्मान पुरस्कार दे के उपाध्यायजी अपना लोकभाषा प्रेम के परिचय दिहनीं।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना चऊथका अधिवेशन (बरहज यू. पी. के) अध्यक्ष माननीय डॉ. उपाध्याय के बनवलस। एह अधिवेशन का अध्यक्षीय भाषण के मुख्य विषय रहे—भोजपुरी विषय पर शोधकर्ता के विषयवार सूची. एह अधिवेशन के उद्घाटनकर्त्ता विश्वविख्यात विद्वान डॉ० भगवत शरण उपाध्याय रहनीं। बाद में उद्घाटकजी एह अध्यक्षीय भाषण के बड़ सराहना कइनीं।

उपाध्यायजी लगभग चालीस बरिस से भोजपुरी आ अवरियो लोक साहित्य के सेवा में एकान्त भाव से लागल बानीं। सन् १९३८ ई० में इहाँ का भोजपुरी लोकगीतन के संग्रह के काम शुरू कइनीं आ भोजपुरी प्रदेश के गाँव-गाँव में घूमि घूमि के लोकगाथा आ लोककथा के संकलन के काम में लागि गइनीं। आज

बावन बरिस पहिले इहाँ के भोजपुरी लोक-गीतन के प्रथम भाग प्रकाशित भइल आ छह-सात बरिस के बाद दूसरको भाग निकलि गइल। सन् १९६१ ई० में इहाँ के शोध-प्रबन्ध प्रकाश में आइल, जवन भोजपुरी लोक-साहित्य के पहिलका थीसिस हवे। नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी से प्रकाशित हिन्दी साहित्य के सोलहवाँ भाग (हिन्दी का लोक-साहित्य) के सम्पादन इहाँ का म० पं० राहुल सांकृत्यायन के साथ कइले बानीं जवना में १८० पृष्ठ के लोक-साहित्य सम्बन्धी प्रस्तावना लिखले बानीं।

उपाध्यायजी के बहुचर्चित ग्रन्थ 'लोक साहित्य की भूमिका' हवे जवना में लोक-साहित्य के मूल सिद्धांतन के विवेचन बड़ा गम्भीर अध्ययन के बाद प्रस्तुत कइल बाटे। ई ग्रन्थ अनेक विश्वविद्यालयन में लोक-साहित्य (एम. ए.) के पाठ्य पुस्तक के रूप में निर्धारित बा। भोजपुरी लोकगीतन के अतिरिक्त अवधी लोक-गीतन का संग्रह के उपाध्यायजी संपादन कइले बानीं जवन प्रयाग से प्रकाशित भइल बाटे।

डॉ० उपाध्याय अंग्रेजी में शंकर सेन गुप्त के साथ 'स्टडीज इन इण्डियन फोक-कल्चर' नामक ग्रन्थ के सम्पादन कइले बानीं। फोकलोर आफ उत्तर प्रदेश तइयार बा बाकी अबहीं प्रकाश में नइखे आइल।

पहिलका 'भोजपुरी साहित्य के इतिहास'—लेखक का रूप में उपाध्यायजी बहुचर्चित बानीं।

हम अपना 'भोजपुरी निबन्ध' (सोरहगो निबन्धन के संग्रह) के भूमिका लिखे के जब विनीत निवेदन कइनीं त उपाध्यायजी बड़ा विनम्रतापूर्वक जवाब दिहनीं—'रउवा पुस्तक के भूमिका लिखल हमार अहोभाग्य होई' ई वाक्य सुनि के हम लाजे गड़ा गइनीं। सोचे लगनीं—हमरा अइसन नाचीज आदमी के इहाँ का एतना महत्त्व देतानीं। पाण्डुलिपि लेके ठीक से पढ़ि के कृपापूर्वक भूमिका लिख देहनीं।

अबहीं उपाध्यायजी से बहुत कुछ उम्मीद बा। भगवान से प्रार्थना बा—उपाध्यायजी स्वस्थ सानन्द रहत भोजपुरी लोक-साहित्य के भंडार भरत रहीं।

प्रकाशित—श्री रासबिहारी पाण्डेय द्वारा सम्पादित
'डा० कृष्णदेव उपाध्याय' व्यक्तित्व-
कृतित्व के संशोधित रूप।

विश्वविख्यात विद्वान

डॉ० भगवतशरण उपाध्याय

भारत के साहित्यकारन में अइसन कमे लोग पावल जाला जे अपना प्रखर प्रतिभा के बल पर देशे ना विदेशों में आपन नाम उजागर कइले होखे। अइसने स्वामी विवेकानन्द, डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन आ महापण्डित राहुल सांकृत्यायन आदि साहित्यकारन के परंपरा में डॉ० भगवतशरण उपाध्याय के नाम आदर के साथ लिहल जा सकेला जे पुरातत्त्व इतिहास आ भारतीय संस्कृति पर लेखन-भाषण से भारत के यश-पताखा देशे में ना विश्व के कोना-कोना में फहरा के अमरत्व प्राप्त कइनीं।

डा० उपाध्यायजी के जनम उत्तर प्रदेश के बलिया जिला के उजियार गाँव में अक्टूबर १९१० में भइल। अपने के पिता श्री रघुनन्दन उपाध्याय बलिया के प्रसिद्ध न्यायवेत्ता रहनीं। गाँव के पाठशाला में शिक्षा समाप्त कइला पर उपाध्यायजी के नाम बलिया जिला स्कूल में लिखाइल। अभी कुछे साल के पढ़ाई इहाँ भइल रहे कि बापू के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित हो विद्यालय बहिष्कार आन्दोलन में भाग लेला के कारण उपाध्यायजी विदेशी सरकार के कोप-भाजन भइनी। इहाँ के गिरफ्तारी भइल। १२ बेंत आ डेढ़ साल के कठोर कारावास के साथे नकद जुर्माना के सजा मिलल। आपन जेल-जीवन इहाँ का बलिया, गाजीपुर आ बनारस में बिता के जब बाहर निकलनीं तब इहाँ के बदन पर बेंतन के गहरा निशान देखके स्वजन सबके आँख भर आइल। उपाध्याय जी के देह पर ऊ निशान आखिरी समय तक कायम रहल।

कारावास से उपाध्यायजी के छात्र-जीवन में जवन व्यवधान आइल ओकर इचको भर असर इहाँ के अध्ययन में ना पड़े पावल। कुशाग्र बुद्धि आ प्रतिभावान छात्र भइला के नाते अपने का पूरा जोश-खरोश के साथे अध्ययन प्रारम्भ कइनीं आ काशी विश्वविद्यालय, प्रयाग आ लखनऊ विश्वविद्यालयन के विभिन्न परीक्षा में सम्मानपूर्वक पास करत गइनी। तीव्र बुद्धि, स्वतंत्र विचार आ बेजोड़ वक्ता के गुन उपाध्यायजी में बचपने से पावल जात रहल जेकर लाभ इहाँ का जिनगी में मिलल। मनस्विता, निर्भीकता त इहाँ में कूटि-कूटि के भरल रहे। एही से इहाँ के सारा जीवन सरसता, सरलता, मधुरता आ ईमानदारी से ओत-प्रोत रहे।

उपाध्यायजी जन्मजात घुमक्कड़ी स्वभाव के आ कलम-जीवी रहनीं। विश्व-विद्यालय के अंतिम शिक्षा प्राप्त कइला का बाद इहाँ का विदेश दउड़ गइनीं आ उहाँ से पी. एच. डी. के उपाधि लेके जब स्वदेश लौटनीं त अपना लेखन-भाषण से

देशवासियन के मंत्र-मुग्ध करत फिरनी। इहाँ का हमेशा एक पाँव स्वदेश में आ दूसरका विदेश में रहल। एही से स्वदेश से अधिक विदेश में आदर आ सम्मान के पात्र बननीं। साँच कहल जाव त इहाँ के जेतना सम्मान विदेशन में मिलल ओतना स्वदेश में ना मिलल।

युगोस्लाविया में अपना भाषण के क्रम में उपाध्यायजी अपना विद्वता आ पुरातत्त्व के ज्ञान से उहाँ के नवही के ही ना बूढ़-बूढ़ पुरातत्त्ववेत्तन के चकित-विस्मित कर देहनीं। इहाँ के परिचय देत सभा संयोजक महोदय इ कहे से अपना के रोक न सकले कि उपाध्यायजी अपना भाषण में प्रमान के साथे जगह-जगह अइसन-अइसन बात के चर्चा क चुकल बानीं जे पर आज तक दोसर केहू कहे में असमर्थ रहल। एकरा बाद उपाध्यायजी के जब बोले के बारी आइल त कहलें कि यूनानी दवा के आविष्कारक भारत ह काहे कि सम्राट अशोक हिमालय से औषधियन के पौधा भेज के इहाँ के पहाड़न पर रोपववले। इहाँ के तर्कपूर्ण भाषण से उहाँ के लोग एतना प्रभावित भइल कि आपना इहाँ के म्यूजियम में उपाध्यायजी के आदमकद मूर्ति लगावल।

एही तरे फ्रांस के विश्वविद्यालयन में आपना भाषण से उपाध्यायजी फ्रांस सरकार तक के एतना प्रभावित कर देहनी कि सरकार इहाँ के आपन प्रतिनिधि बना के विश्व-पुरातत्त्व-सम्मेलन न्यूयार्क भेजलस। इहाँ एगो अजीब घटना घट गइल। वियतनाम युद्ध में अमेरिकी सरकार के विरोध में विश्व के महान विचारकन के हस्ताक्षर से एगो परचीं निकलल रहे जवना पर हस्ताक्षर उपाध्यायोजी के रहे। अभी इहाँ का होटले में रहनीं कि अमेरिकी राष्ट्रपति के आदेश आइल कि अमेरीका में अपने के प्रवेश पर रोक बा, एह से वापस जाईं। एह आदेश के खबर जब प्रतिनिधि लोगन का मिलल त ऊ लोग बौखला गइल आ पाकिस्तानी प्रतिनिधि त इहाँ तक कह देहले कि अगर उपाध्यायजी सम्मेलन में भाग ना लीहें त हमनी का केहू भाग ना लेब। हार-पाछ के सरकार का आदेश वापस लेबे के पड़ल।

एक दफे विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन से इहाँ का मिले गइनीं। निजी सचिव के बहुत प्रयत्न कइलो पर ऊ तत्काल मिले पर राजी ना भइले। फिर त उपाध्यायजी सत्याग्रही के रूप में आ गइनीं आ कहनीं कि आजु त मिलिए के जाइबि। इहाँ के संकल्प सुन मझौला कद के वैज्ञानिक हँसत अपना प्रयोगशाला से निकल के उपाध्यायजी के पीठ थपथपावत कहले—'तू गाँधी के देश के नूं बाड़। जा, काल्हु तोहरा के पंद्रह मिनट के समय देतानी।' दोसरा दिन जब वैज्ञानिक आ दार्शनिक का मिलन भइल त दूनो एक-दूसरा के बात से बहुत प्रभावित भइल लोग। एकरा अलावे उपाध्यायजी स्टालिन, पलेबक, एजरा पाउण्ड, रसेल आदि

महान हस्तियन से मिल के साहित्य, दर्शन, राजनीति आदि विषय पर विचार-विमर्श कर चुकल रहनीं।

ऊपर कहल जा चुकल बा कि उपाध्यायजी कलमजीवी व्यक्ति रहनीं। इहाँ का सम्पूर्ण दुनिया के छव बेर यात्रा कके लिखत-पढ़त, भाषण देत आपन जिनगी बिता देहनीं। इहाँ का विभिन्न विधा पर करीब १५० पुस्तक लिखले बानीं जवना में निबन्ध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, नाटक, कहानी आ उपन्यास आदि बाड़ी सन। इहाँ के 'इण्डिया इन कालिदास' नामक महत्त्वपूर्ण किताब लिखले बानीं जवना के हिन्दी अनुवाद 'कालिदास का भारत' बा। इहाँ के प्रमुख रचना में 'वो दुनियाँ', 'सागर की लहरों पर', 'घूमने का राज', 'लाल चीन', 'कलकत्ता से पेकिंग', 'ठूंठा आम', 'सांस्कृतिक निबन्ध', 'पुरातत्त्व रोमांस', 'महापुराणों का कोश', 'सांस्कृतिक भारत', 'इतिहास साक्षी है', 'अजेय राष्ट्रभाषा', 'कालिदासं नमामि', 'समीक्षा सन्दर्भ', 'विश्व साहित्य की रूपरेखा', 'साहित्य और कला', 'खून,' 'नारी' आदि पावल जाला।

एकरा अलावे उपाध्यायजी जवन महत्त्वपूर्ण काम कइले बानीं ओह में प्रमुख बा स्व० काशीप्रसाद जायसवाल के साथे मूर्तियन के सूची बनावल, १९३७ से १९३९ तक काशी विश्वविद्यालय रिसर्च जरनल के सम्पादन कइल, १९४० में उत्तर प्रदेश संग्रहालय के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति, १९४२ में पीकिंग के निरस्त्रीकरण या विश्वशान्ति सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के नेतृत्व कइल, अमेरिका-योरोप आदि पुरातत्त्व सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधित्व कइल। एकरा अलावे देश में 'इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज' हैदराबाद के निदेशक, काशी नागरी प्रचारिणी सभा के 'विश्वकोश' के सम्पादक, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के प्रोफेसर, अध्यक्ष, डीन आदि पद के सुशोभित कर चुकल बानीं।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन (सीवान) के अध्यक्ष पद से भाषण करत उपाध्यायजी कहनीं—

"संसार के प्रसिद्ध दार्शनिक रसेल से एक बार हमार बतकही भइल। ऊ संस्कृति और साहित्य का विषय में अपने लिखल बात दोहरवलें कि एह सबके निर्माण तीन चीजु के सम्मिलन से होला—प्यार का पुकार से, गेयान का खोज से आ सकल जीवधारियन के प्रति संवेदना से। मतलब कि प्यार का पुकार से साहित्य बनेला, गेयान का खोज से दर्शन आ विज्ञान आउर संवेदना से अथवा दूनों का संगम से संस्कृति।"

हम भोजपुरी के नई कविता पढ़तानी त लागत बा कि पुरनके कवितवा सूघर बा। उनुका अइसन लागता कि खड़ी बोली के कवितन के निचोड़ ह, छाड़न नियर।

कवि लोग समझता कि भासा बदलि गइला से सब बदल गइल। आ हाल बा ऊहे खड़ी बोली के निर्दिशा (दिग्भ्रान्त) स्थिति। हम कहतानीं कि जेकरा पास कबीर आउर घाघ के धन बा ऊहाँ ओ लोगन के सुर काहे नइखे आवत। 'जो घर जारै आपना चले कबीरा साथ' के ललकार या 'पंडित चुपचुप, बेसवा मइल' के बोध कहाँ बिला गइल ?

इन्सान जब दर्द का साथे आपना भणिति में पइठी तब कहीं ऊ भणिति काव्य कहाए जोग होई, साहित्य कहाई। साहित्य खाली भाषा के चमत्कार आ शैली के रंगारंग चूनर ना ह। 'सुगना बसे पहाड़ पर हम जमुना के तीर' दूर के बासी 'सुगना' आ जमुना तीर के बासी 'सुगनी' के मन जब मीत बनि के, एक होके रमी, तब जाके साहित्य बनी। पेड़ पर रहेवाला सुआ का हिया में (लोककथा में कहल जाला), जब केहू के हियरा बसेला, अइसन कि एगो के जान छुअला से दूसरकी तड़पे लागे तब साहित्य बनी।

आउर जिअरा के तड़पला के आपसे का कहीं। गांव के एगो गवाँरिन के बात सुनि के एक दिन हम सन्नाटा में आ गइनीं। सरहजि-ननदोई के बीच हँसी के बात सुननीं। सरहजि जवाब में कहलसि—"बतिया त साँचे कहतार हो, बाकी ई हमके बताव कि लड़ेले त नजरिया आ बथेला करेजवा काहें ?" हमरा त लागल कि हजार बिहारी आ मतिराम एह पर वारि जइहें। साहित्य खातिर अइसने वेदना-संवेदना के साथ मनुष्य ओह में पइठेला तब साहित्य बनेला।"

उपाध्यायजी पक्का सिद्धांतवादी रहनीं। इहाँ का चाहे देश में रहनीं या विदेश में चउका में लहसुन-प्याज तक ना परत रहल, मांस-मछली के त सवाले नइखे। एकरा अलावे इहाँ का बड़ा उदार व्यक्ति रहनीं। सैकड़ों छात्रन के इहाँ का अपना खर्च से पढ़वनी-लिखवनी आ सबके स्थायी सहारा दिअवनी। चीनी आक्रमण के समय आपन समूचा वेतन पांच महीना तक सुरक्षा कोश में देत रहनीं।

इहाँ का मारिशस में उच्चायुक्त पद पर काम करत अंतिम सांस छोड़नीं। मारिशस सरकार इहाँ के स्मारक बनावे खातिर बड़हन योजना पर काम कर रहल बा।

उपाध्यायजी के दू लड़िकन में एगो फारेस्ट विभाग में उच्च पदाधिकारी बाड़े आ दोसरकू उज्जैन संस्थान में काम करेले। इहाँ के बहिन पद्मा उपाध्याय अविवाहित रहि के एगो डिग्री कॉलेज चलावेलीं।

उपाध्यायजी के निधन से साहित्य क्षेत्र में जे शून्यता आ गइल बा ओकर पूरा भइल जरूरी संभव नइखे। अइसन मनीषी के शतबार नमन—शतबार नमन।



भोजपुरी के मुँहजोर कवि

मुँहदूब्बर जी

"एह मुँहगर लोग में हमरा मुँहदुब्बर के, के पूछी ?" ई वाक्य सुनते भातर लोग अकचका के देखे लागेला त झट से इयाद पड़ जाता —"हुरपेटी मत मुँहदुब्बर के, हइ चार सौ बीस के डाली लीं।"—एह पाँती के लेखक मुँहदुब्बरजी इहे हउअन का ?

गोड़ में टायर के बनल चप्पल, कमर में मारकीन चाहे एही ढंग के ओछ धोती, दूबर-पातर आ छोटहन कद का देह में मारकीने के कुरता, कान्हा पर एगो गमछा धइले आ रंग-ढंग बेडील-डौल, बाकिर भोजपुरी माटी का अनुरूप वेशभूषा, काट-छाँट का बतकही में माहिर। जेकरा सम्बन्ध में १९६८ में सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन का अवसर पर कवि-सम्मेलन के सभापति का क्षणिक अनुपस्थिति में मंच के सम्हारत ओह कवि सम्मेलन के उद्घाटक स्वनाम-धन्य स्वर्गीय श्री ब्रजकिशोर नारायणजी कहले रहीं—"ई मुँहदुब्बर ना, मुंहजब्बर हउएँ।" ओही कवि-सम्मेलन में उपस्थित कविवर दिनेश भ्रमरजी कहनीं—"सारन जिला एगो मंच-उखाड़ कवि पैदा क देले बा।"

अइसन "मुँहजब्बर" आ 'मंच-उखाड़' कवि के जनम सारन जिला का बनियापुर थाना अन्तर्गत हरपुर कोठी (पंडितपुर) गांव में शाकद्वीपीय ब्राह्मण का साधारण परिवार में १९१२ ई० का फागुन महीना में भइल। पिता पण्डित तुलसी राम मिश्र संस्कृत व्याकरण के बड़हन विद्वान आ विशुद्ध कर्मकाण्डी रहीं। एह पण्डित पिता के देख-रेख में एह बालक राघवशरण मिश्र के प्रारम्भिक शिक्षा घरहीं शुरू भइल। पिताजी पण्डित बनावे के त चाहत रहीं बाकिर परीक्षा देबेवाली पढ़ाई से दूर रह के। उहाँ के विश्वास रहे जे परीक्षा खातिर जवन शिक्षा होला ऊ ठोस ना हो सके। तबो ई बालक अउरी संहतियन के देखा-देखी प्रथमा के परीक्षा दइये दिहलस, नीमन नम्बर पइबो कइलस बाकी शिक्षा के क्रम आगे ना बढ़ल। पढ़ल-लिखल बाप त सन्तान के पढ़ावहीं के चाहेला। एह से जब पिताजी देखनी जे संस्कृत के पढ़ाई से मन हटता त राघवजी के तत्कालीन समाजसेवी आ कांग्रेसी नेता स्वर्गीय नारायण बाबू का कर्मयोगी उच्च विद्यालय गोरेया कोठी में स्कूली शिक्षा पावे खातिर भेजनी बाकी राघवजी के मन त पढ़ाई से उचट गइल रहे।

एँह से पढ़ाई आगे ना चलल। बाकिर एह सन्दर्भ में संस्कृत के त बढ़िया ज्ञान हो गइल, अंग्रेजियो नीमन तरे लिखे-पढ़े आ गइल।

जिनगी के कठिनाई

कविता का ओर त राघवजी के ध्यान बचपने से रहे। कविता का चसका से केहू-केहू जिद्दी हो जाला। इहों का एक नम्बर के जिद्दी रहीं। कवि लोग तनी स्वतंत्र विचारो के हो जाला। इहों में ई बात रहे। ऽही घरी थोरे-थोरे गाँजा, भाँग आ सुर्तियो के चस्का लाग गइल। ई सब अवगुन घर का कामो से अलग रहे के बाध्य करेला। फल ई भइल जे घर में पिताजी, बड़ भाई पं० बबन मिश्र चाहे उनकर परिवार, केहू से इहाँ का पटने ना करे। बाद में इहाँ का घर छोड़ देबे के निश्चय कइनीं। एही क्रम में १९३६ ई० से डेढ़-दू बरिस ले कलकत्ता में अमृत बाजार पत्रिका आ कुछ दैनिक-साप्ताहिक पत्र बेचनीं। ओकरा बाद एने-ओने घूमत-घामत रहीं।

बिआह-सन्तान आ परिवार के स्वर्गवास

कवनो बाप सन्तान के बिगड़ल बरदास्त ना नूँ करेला। राघवजी के पिताजी पहिले त काफी कोशिश कइनीं जे ई सही राह पकड़ लेस बाकिर अपना के असफल पाके उहाँ का सोचनीं जे बियाह क देहला से का जाने सुधर जाय। त गोड़रून्हू करे खातिर बिआह क देहनीं। अब राघवजी का घर का लगे रहे के जरूरत बुझाइल त गोपालगंज में शिव-मन्दिर के पुजारी के काम करे खातिर जगहो मिल गइल। १९४३ ई० में राघवजी पुजारी के काम शुरू कइलीं आ १९५८ ई० तक एह काम पर रहनीं। बियाह भइला का बाद इहाँ का एगो बेटी आ दूगो बेटा भइले सन बाकी दुर्भाग्य ई, जे दूनो बेटा बचपने में स्वर्ग सिधार गइले सन। बेटी के बियाह भइल। एगो बेटी भइल, ओकरा बाद सन्तान सहित बेटिओ स्वर्गवासी हो गइलीं। एह शोक से सन्तप्त होके पत्नियो ने स्वर्गवास हो गइल। अब मुँहदुब्बर जी एक दम अकेले हो गइनीं।

गृहत्याग

एही बीचे १९५६ में पिताजी स्वर्गवासी हो गइनीं। मुँहदुब्बर जी का मन कइल घरं रहे के आ १९५८ ई० में गोपालगंज मन्दिर छोड़ के अपने घरे आ गइनीं। बाकी ऊपर बतावल गाँजा-भाँग आदि कवनो अवगुन छूटल ना रहे। बिना कमाई के ई सब खरचा उनका भाई का आ उनका परिवार का ना सहाइल। बस, इनका फेनूँ घर छोड़े के परल। घर से थोड़े दूर पर ढोंढ स्थान का प्रसिद्ध शिव-मन्दिर पर जाके रहे लगनीं। कुछ बरिस तक मन्दिर में रहला के बाद अब मन्दिरो

छोड़ के निकट का जनता बाजार में बढ़ई का दूकान का पीछे खेत का कगरी आम का पेड़ तरे एगो लकड़ी के बनल गुमटी में आपन सामान राख के गुमटी से सटले एगो पलानी के पाझा डाल के मुक्त हवा खात जिनगी के अन्तिम दिन काटत रहीं। एह घरी इहाँ का मोतियाबिन्द, दमा आ खाँसी के दौर-दौरा रहे। एहू हालत में साहित्यिक वन्धु आ गँजेड़ी भाई लोग के जमवड़ा होते रहे। एकान्त पवला पर अपना निजी पुस्तकालय से वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण आदि ग्रन्थन के पढ़ाई होत रहे। आकाशवृत्ति से काम चलत रहे। घर से कवनो जरूरत ना रहे। हम पढ़ले बानी जे बंगला के प्रसिद्ध साहित्यकार सर माइकेल मधुसूदन दत्त बड़ा धनी-मानी रहले। एगो अंग्रेज मेहरारू के प्रेम में पागल होके सब धन बर्बाद क दिहले आ अन्त में हालत ई हो गइल जे अस्पताल में मुए के परल।

कवि-रूप में निखार

ई बात पहिले बतावल जा चुकल बाटे जे राघवजी में कविता का ओर बचपने से झुकाव रहे। परिवार का समाप्ति का बाद शोकातुर मन में इहाँ के कविता जागल। आदिकवि वाल्मीकि के कविता दु:खे में नूँ निकलल।

पन्तजी कहले बानीं—

"वियोगी होगा पहला कवि आह से निकला होगा गान।
उमड़कर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान।।"

परिवार के खतम भइला का बाद राघव मिश्रजी अपना के मुँहदुब्बर बूझे लगनी आ अपना के सबका सामने मुंहदुब्बरे रूप में उपस्थित करे लगनीं। बस, एह कवि के नांवे 'मुँहदुब्बर' पड़ गइल। गोपालगंज प्रवास काल में मुँहदुब्बरजी का काफी समय मिलल रहे। काव्य रचना होखे लागत रहे। कविता के अनेक धारा बहे लागल। जब जइसन 'मूड' आवे, कविता लिखा जाय। अब यह क्षेत्र में आचार्य महेन्द्र शास्त्री द्वारा संचालित साहित्य सम्मेलन का कवि सम्मेलनो में मुँहदुब्बरजी जाये लगनीं। पूरा प्रोतसाहन मिलल रहे। विभिन्न भावन के कविता में पूरा निखार आ गइल रहे।

एह तरे सन्तान आ पत्नी का मृत्यु का बाद जे कविता धारा फूटल से अबाध गति से मरे का दम तक ले बहत रहल। इहाँ का संस्कृत, हिन्दी आ भोजपुरी में काव्य रचना कइले बानीं। सब रचना स्वतंत्र बाड़ी सन। प्रबंधात्मक रचना नइखे।

संस्कृत कवि के रूप में—

मुँहदुब्बरजी के संस्कृत कविता त बहुत नइखे बाकिर जवन बा तवन चमत्कार से भरल बा। विद्या के अधिष्ठात्री देवी माता सरस्वती के वन्दना के बानगी लीं—

"करुणामयी कपाल मालिनी कंढ़े त्वं निवसतु जननी।
खप्पर खड्ग कृपाणधृतादरिता परिता अघ मर्दिनी।।
गणिता प्रभुता गणनाविकृता त्वं शारदया अभिनन्निनी।
घनवत गर्जिनी घमण्डमर्दिनी घट-घट व्यापिनी हे रमणी।।"

अपने के पिताजी एगो श्लोक बनवले रहनीं। एइमें सोनपुर से सीवान तक प्राय: सब स्टेशन के नाँव रहे आ श्लोक के आपन स्वतंत्र अर्थो रहे। एह से प्रेरणा पाके अपने १९५३ में एगो आशीर्वादात्मक श्लोक बनवनीं जवन बड़ा चमत्कार पैदा करेवाला बाटे।

ऊपर बतावल जा चुकल बाटे जे मुँहदुब्बरजी शाकद्वीपीय ब्राह्मण रहीं। अइसे त सब ब्राह्मण का बारात में पहिले द्वारपूजे से शास्त्रार्थ शुरू हो जात रहे, अबो कहीं-कहीं होला, बाकी शाकद्वीपीय ब्राह्मण में एगो विशेष रिवाज बाटे। भात-खउकी का बेर एक ओर मेहरारू लोग के गारी होत रहेला आ एने भात आगे लेके घंटन तक ले भात के वर्णन, खिआवेवाला के वर्णन में खूब सुन्दर-सुन्दर श्लोक होत रहेला। एही श्लोक से कन्या पक्ष के आशीर्वादो दिआला। मुँहदुब्बरजी एही प्रकरण में कहेवाला एगो श्लोक बनवनीं जवन सचहूँ बड़ा चामत्कारिक बाटे। एइमें जेतना उर्दू-फारसी के शब्द बा, सब संस्कृत व्याकरण से शुद्ध बा—

आला अल्ला चखाला विशमिल
मुहमद ला एलाहे लिलाही,
लोदी तुगलक पठानी सीया सुन्नी
आम कलमा कुरानम्।
अरबी मिस्री यहूदी काजी
मुल्लाह दोजकीया बहिस्ता।
एवं सर्व समक्षे मंगल भवने प्राप्य नोमिड्यतेऽहं।।

हिन्दी कवि का रूप में—

हिन्दिओ के रचना ओतना नइखे बाकी सब संगृहीत क दिहल जाय त एगो छोट पुस्तिका तैयार हो जाई। विभिन्न रस से भरल एह रचनन में बड़ा जान बा। एह कवितन में श्लेषालंकार, अनुप्रास का साथे पाण्डित्य प्रदर्शन विशेष रूप से मिलेला।

चन्द्रकला नाम के एगो बहुत प्रसिद्ध नर्तकी आ गायिका वेश्या रहे। एह चन्द्रकला पर लिखल इहाँ का 'चन्द्रकला' कविता के कुछ पाँती देखीं—

"आँख की मिचौनी छुट्टी छौकनी सी छेंकि राखे,
छैलन के छाव छिनी छोरत छलबला है।
छानी-सी छनी छेना छोआ अस लोआ पोआ,
छुअत ना बने छाप कोयल सी गळा है।।

मुँहदुब्बरजी का भोखपुरी रचना में व्यंग्य के प्रधानता बाटे। इहाँ का व्यंग्य काव्य के प्रेरणा मिलल आचार्य शिवपूजन सहाय का 'बकलोल कन्ट्रोल' से। ई प्रेरणा एतना मजबूत पड़ल कि मुँहदुब्बरजी भोजपुरी हास्य व्यंग्य के प्रधान कवि मानल जाये लगनीं। इहाँ का कविता में सामासिक पदावली के प्रयोग, शब्द आ अर्थ के चमत्कार भरपूर पावल जाला। एकर प्रेरणा मिलल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का आशीस शब्द का बदले आ c श शब्द से। संस्कृत में एगो सूक्ति बाटे "अर्द्ध मात्रालाघवेन पुत्रोत्सव मन्यन्ते वैयाकरणाः।" भारतेन्दुजी के 'आ c श' शब्द एही सूक्ति का समर्थन में बाटे। शी का बदले अंग्रेजी के c मात्रा लाघवे खातिर नूं भारतेन्दुजी लिखले बानीं। मुंहदुब्बरजी एइसे बड़ा प्रभावित भइनीं। तबे नूँ इहों का कविता में मात्रा लाघव भरपूर मात्रा में पावल जाला। श्लेष आ अनुप्रास त इहाँ का कविता के जान हवे। महाभारत का आदि पर्व में एगो श्लोक बाटे जेइ में 'प्राज्ञ' शब्द के आठ बार प्रयोग बाटे, आठ अर्थ में। एही से प्रभावित होके मुंहदुब्बरजी पाण्डित्य प्रदर्शन के बड़ा महत्त्व देत रहीं।

भोजपुरी कवि का रूप में—

ऊपर बतावल जा चुकल बाटे जे मुंहदुब्बरजी भोजपुरी के हास्य-व्यंग्य कवि का रूप में विख्यात रहीं। हास्य रस के कविता त ओतना वजनदार आ दमदार ना होले बाकिर हास्य में जब व्यंग्य मिल जाला त कविता शाश्वत बन जाले। काहें जे केवल हास्य रस के कविता क्षणिक आनन्द देले बाकिर व्यंग्य त सरकार चाहे समाज के कुव्यवस्था पर चोट करेले त सरकारो सचेत हो जाले, समाज त सचेत होइए जाला। तबे नूँ कहल जाला जे साहित्य में जवन शक्ति छिपल बा तवन तोप तलवार आ बम का गोलो में ना पावल जाला।

आज-काल्ह घर में बटुला-बटुली के जमाना लद गइल बा। अब त धनीमानियो का घर में टिनहा बरतन के प्रयोग धड़ल्ले से हो रहल बाटे। एह प्रयोग में कवि के क्रान्ति भावना जुटल बाटे। एह बदलल परिवेश में समाज पर व्यंग्य करेवाली एगो कविता के बानगी लीं—

"कह हो बटलोही तू त घर में के रानी महरानी,
अंगना में के सिंगार रसोइया घर में के मलिकिनी,

छितराइ के बइठेवाली, लउँड़ी नौकर में के चतुरसयानी;
कह हो ... ... ।"

भारत के गिरत अवस्था देख के कवि का कविता के कुछ पाँती देखीं—

"महँगी अनाज के समाज में विराज रहल,
पढ़ गित का महँगी से छइका हैरावी में।
टिउसन के महँगी से महँग मोल फैसन बा,
फेस ले अकूत महँग कट का कटानी में।
साइज पर गाइड के गार्ड लोग हीरो ह,
लेकिन कजरे का मुहब्बत पर जान कुर्बानी में।
भारत के भकोल भइल हर घरी देख-रेख
ऊ लागही का बेर भइँस हेल गइल पानी में।।

समाज के आडम्बर-भरल जीवन पर कुछ व्यंग्य देखीं—

"जब हम कविता कहीले त लोग पूछेला जे क बीता,
तब हमरा मुंहबई लाग जाला जे गज बताई कि ह फीता।
टीमटाम लम्बा-चौड़ा जल-पातर तक ले नदारत बा।
एह कोइला का फरिअवता में मोती के कवन बुझारत बा।
ओह लोहा सिंह का फाटक जी के पढ़ला के बलि जाइले।
जे गीता में हनुमानजी भी सुपनेखिया से बतिआइले।।
सजे रामायन गवला पर जब केहू पूछेला जे के सीता ?
तब हमरा मुँहबई लाग जाला जे हम गज बताई कि ह फीता।

आज का युवक-युवती के हाल केहू से छिपल नइखे। एह समाज के स्थिर बोध खातिर एक पाँती काफी बा—

"ई नयने रसीला, ई अँखिये रसीली।
एही पर, कहीं छैला उतान, कहीं उनहल छबीली।।

एह भारत का गिरल समाज के आज दशा बड़ा विचित्र बा। आज युवक वर्ग एक ओर लइकिन पर खुलेआम चोट करता त दूसरा ओर निर्लज होके नाजायज ढंग से लइकनो के गर-गाँती कइले बा। तबे नूं कवि के कहनाम बा जे—

लइका टेन्डर में बा लइका भेन्डर में बा,
लइका माहे दुआरी कलेण्डर में। इत्यादि।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के 'चाकलेट' कहानी एही तरे समाज का एक वर्ग के पर्दाफाश कइले बा, जवना के तारीफ करत गाँधीजी ना अघाइल रहस।

जिनगी में निराशा—

निजी परिवार के असमय मृत्यु का मुँह में गइल, भाई से बेपटरी आ सामाजिक स्वार्थपरता से मुँहदुब्बरजी का जिनगी में निराशा के करिया बादर घेर लेलस। कवनो राजनीतिक पार्टियो से मुँहदुब्बरजी का कवनो उमेद ना रहे। जातीयता का घोर दलदल में फँसल एह पार्टियन से देश के, राष्ट्र के, रक्षा कवनो तरे नइखे हो सकत।

अप्रकाशित रचना—

कवि का ५१ गो भोजपुरी कविता के संग्रह 'रकक्षक' नाँव से छपल बाकिर कवि का ओह छपाई से बड़ा असन्तोष रहे। मुँहदुब्बरजी के कहनाम रहे कि एगो 'वाद' से 'प्रतिबद्ध साहित्यिक साथी ५००/- का साथे रचना ले गइले जनशक्ति प्रेस में छपावे खातिर। पुस्तक छपहूँ लागल बाकिर गलती ई हो गइल जे प्रूफ देखे के भार एगो मैथिल महाशय के दे दिहल गइल, जेकरा भोजपुरी का प्रकृति से कवनो सरोकारे ना रहे। फल ई भइल जे 'टीमटाम एतना' के 'तीन टाँग एतना' छपि गइल। एतने ना 'रकझक' में एह तरह के अशुद्धियन के भरमार बाटे, अइसन मुँहदुब्बरजी के कहनाम रहे। मुँहदुब्बरजी निराश होके पाँच सौ रुपया बाज आवे के सोचत रहले। उनका अइसन असह्य अशुद्धि से भरल संग्रह ना निकाले के रहे।

स्वर्गवास—

मुँहदुब्बरजी अब एह दुनिया में नइखीं। ३ जनवरी, १९८१ के, ढोंढ़स्थान का अपना कुटिया में, उहाँ के अपना नश्वर शरीर के छोड़ के सुरधाम चलि गइनीं। उहाँ का ना रहला से भोजपुरी के एगो विशिष्ट व्यक्तित्त्व उठ गइल। उहाँ का अपना ढंग के अकेला व्यक्तित्त्व रहीं। उहाँ के अभाव पूरा ना हो सके। भोजपुरी के उहाँ का बहुत दिहनीं। ओह दिन भोजपुरी के भाग जाग जाई जहिया मुँहदुब्बर जी के कुल रचना प्रकाशित हो जाई।



भोजपुरी के जागरुक पहरुआ

पण्डित गणेश चौबे

सम्पूज्य चौबेजी के पहिलका दर्शन त हमरा १९६८ में अखिल भारतीय भोजपुरी समाज का ओर से आयोजित मोतिहारी अधिवेशन में भइल बाकी एकरा बाद कवनो चिट्ठी-पत्री के आइल गइल ना भइल। फेनू अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन के दूसरका अधिवेशन (पटना) में दू दिन साथे रहे के अवसर मिलल त बुझाइल जे एह दूबर-पातर देह में केतना ज्ञान, भोजपुरी-सेवा के केतना ललक आ सादगी भरल राष्ट्रीयता के उच्च भाव रोआँ-रोआँ में रमल बाटे। तबे मन में आइल जे एह महापुरुष से संपर्क बढ़ावे के चाहीं। ई विचार तव कार्यरूप में बदलल जब सम्मेलन के तीसरका अधिवेशन सीवान में होखे के बात तय भइल। संयोजक का नाते ढेर भोजपुरी सेवक सभ कीहाँ चिट्ठी-पत्री भेजनीं। ओही क्रम में चौबेजी के चिट्ठी लिखाइल। हमरा याद परता जे अधिवेशन में मदद खातिर पहिलका दिने पनरहगो चिट्ठी लिखनीं। सबसे पहिले जवाब मिलल चौबेजी के जवाबे ना, हर तरह से अधिवेशन सम्पन्न करावे के आश्वसनो मिलल। बड़ा उत्साह बुझाइल। प्रायः महीना पहिले संयोजन समिति बनल आ २९, ३० अक्टूबर १९७७ के अधिवेशन भइल। अधिवेसन के सफलता खातिर चोबेजी बंगरी से सीवान कई बेर अइनीं आ हर तरह के सलाह देके सम्मेलन के सफल बनवनीं।

एह सन्दर्भ के एगो बात मन परता। स्मारिका प्रकाशन का क्रम में हमरा मन में आइल जे पहली मार्च १९७७ के भोजपुरी संसार के जवन 'क्षेत्रीय साहित्य सम्मेलन' के पहिलका अधिवेशन आचार्य बलदेव उपाध्याय का अध्यक्षता में सीवान में भइल रहे तवना के अध्यक्षीय भाषण आ दिसम्बर १९४७ में राहुल जी का अध्यक्षता मे ओकर दूसरका अधिवेशन गोपालगंज में भइल रहे तवनो के अध्यक्षीय भाषण स्मारिका में दीं। चिन्ता ई रहे जे भाषण के प्रति कहवाँ मिली। बहुत खोजला का बाद जब ना मिलल तब हम चौबेजी का लगे चिट्ठी लिखनीं। चिटठी पावते दूनू भाषण के प्रति लेके चौबेजी सीवान चलि अइनीं। अब हमरा खुशी के ठेकान ना रहे। इहाँ के एह बड़प्पन के हम कबो भुला ना सकिले।

बातचीत के सिलसिला शुरू भइल त उहाँ का कहनीं जे भाषण के प्रति त हम देबि बाकी हैण्डनोट लिखाइब। हम चकित हो गइनीं उहाँ के एह भाषणन का प्रति संचय के मोह देखि के। हम हैण्डनोट लिखनीं आ दूनूँ भाषण लिहनीं। अधिवेशन

का अवसर पर हम दूनूँ भाषण लवटवनीं त उहाँ का हैण्डनोटो वापस करत कहनीं जे अब हमरा भाषण के प्रति मिलिए गइल त हैण्डनोट काहें राखीं ?

एकरा बाद त संपर्क बढ़त गइल आ चिट्ठी-पत्री होखे लागल। हमरा लगे केहू एक व्यक्ति के एक सौ पचास से ऊपर चिट्ठी बाटे त चौबेजी के।

१९८० में एगो सेमिनार में शामिल होखे खातिर वाल्मीकि नगर जाये का क्रम में हम चौबेजी के दर्शन करे उहाँ का घरे गइनीं। जमीन्दारी ठाट-बाट त रहवे कइल बाकी ई हमरा खातिर कवनो आकर्षण के विषय ना रहे। चौबेजी के निजी पुस्तकालय के जब दर्शन कइनीं त बुझाइल जे एह मनीषी में पुस्तक संग्रह के केतना चाह बा तबे ठीक से समझ में आइल जे इहाँ का काहें हैण्डनोट लिखवले रहनीं। सुधा, माधुरी, विशाल भारत, मतवाला, फॉकलोर, लोकायन आदि प्राचीन पत्रिकन के एक-एक वर्ष के सिलसिलेवार सजा के, जिल्द मढ़वा के चौबेजी रखले बानीं। कई हजार पुस्तकन के त कवनो बाते नइखे। एह पुस्तकन में प्रधानता लोक साहित्य के बा।

अइसन चौबेजी का पाँव में साधारण जूता चाहे चप्पल, खादी के ओछ धोती, बदन में खादिए के कुर्त्ता, आँख पर मामूली फ्रेम के चश्मा आ माथ पर गाँधी टोपी, एह भोजपुरिया वेशभूषा में चौबेजी सादा जीवन उच्च विचार के साक्षात् प्रतिमूर्ति बानीं।

लोकभाषा, खास करके भोजपुरी का एह पहरुआ के जनम ता० ४ दिसम्बर १९१२ ई० में आपन ममहर के गाँव साढ़ाभर जिला मुजफ्फरपुर में भइल। बाबूजी स्व० भरथरी चौबे एगो संपन्न किसान रहनीं। चौबेजी ओह गृहस्थी के अपना जीविका के साधन मान लेले बानीं।

चौबेजी के प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में शुरु भइल आ मोतिहारी जिला स्कूल से १९३२ ई० में प्रवेशिका परीक्षा पास कइनीं। छात्रवृत्ति मिलल बाकी आगे पढ़ ना सकनीं। हँ टंकन कला आ आशुलिपि के प्रशिक्षण पाके अपने १९३४ से १९४८ ई० तक मोतिहारी समाहरणालय में किरानी के काम कइनीं। बाद में त्याग-पत्र देके आपन खेती-बारी करे, देखे लगनीं।

चौबेजी के सांस्कृतिक भाषा विज्ञान का पढ़ाई के प्रेरणा स्व० शरच्चन्द राय (रांची) का पुस्तक से मिलल। लोककथा संकलन के प्रेरणा श्रीलाल बिहारी दे का किताबन से मिलल। एही तरे लोककथा आ गीत के सरस अध्ययन के पद्धति खातिर स्व० डा० वैरियर एल्विन का किताबन से आ लोकगीतन के अध्ययन के प्रेरणा मि० डब्ल्यू० पी० आर्चर का किताब से मिलल।

चौबेजी स्वाध्यायी स्वभाव के त हइये हयीं, लोकभाषा के अध्ययन करेवाला विद्वान सभसे मिलल-जुलल इहाँ के मुख्य काम रहे। अइसन विद्वान सभ में डॉ०

वासुदेवशरण अग्रवाल (वाराणसी); श्री कृष्णानन्द गुप्त (झाँसी), स्व० बनारसी दास चतुर्वेदी, स्व० शिवपूजन सहाय, स्व० श्री रामधारी प्रसाद (विशारद), स्व० उदयनारायण तिवारी आदि के नाँव आदर से लिहल जा सकेला।

चौबेजी लोकभाषा आ लोक-साहित्य के बहुत बड़ सेवा कइले बानीं। जइसे—

(क) बिहार इन फॉकलोर स्टडीज, डा० एल० पी० विद्यार्थी के साथे सम्पादन (प्रकाशन काल १९७१ ई० कलकत्ता) अंगरेजी।

(ख) बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य-संग्रह (सम्पादक मण्डल में १९७३ ई० मुजफ्फरपुर) भोजपुरी।

(ग) बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी गद्य संग्रह (सह-सम्पादन १९७८ ई०) भोजपुरी।

(घ) भोजपुरी के प्रकाशित ग्रन्थ (अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना १९७६ ई०) भोजपुरी।

(ङ) भोजपुरी साहित्य के कुछ समस्या आ समाधान (अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, तीसरका अधिवेशन के स्वागत समिति सीवान १९७७ ई०) भोजपुरी।

(च) भोजपुरी प्रकाशन के सई बरिस (भोजपुरी अकादमी, बिहार, पटना १९८३ ई०) भोजपुरी।

सन् १९५१ ई० से १९८५ ई० तक के प्रकाशित शोध-निबंध, साहित्य-समीक्षा, लेख, साहित्यिक संस्करण, पुस्तकन के भूमिका आ टिप्पणी के संख्या २४३ से ऊपर, जे हिन्दी, अंगरेजी आ भोजपुरी में बाटे। ई सभ लेख—'प्राच्य मानव वैज्ञानिक' (लखनऊ विश्वविद्यालय), 'भोजपुरी जनपद' (वाराणसी), 'समाज' (वाराणसी), 'लोकवार्त्ता' (टीकमगढ़), 'लोक साहित्य' (जोधपुर), 'ब्रजभारती' (मथुरा), 'परिषद् पत्रिका', 'साहित्य', 'हिमालय', 'समीक्षा' 'अँजोर' (पटना), 'सरस्वती' (प्रयाग), 'माधुरी' (लखनऊ), 'विशाल भारत', 'विश्वमित्र' (कलकत्ता), फॉकलोर ह्यूमन इवेट (कलकत्ता), 'भारतीय विद्या' (बम्बई), 'माटी के गमक' (सीवान), 'जोखिम' (मोतिहारी) आदि में प्रकाशित बाटे। एह में एगो लेख 'मगही ककहरा' पर बाटे जवन 'विहान' (पटना) में छपल रहे। इहाँ के पहिलका लेख १९४१ में छपल रहे।

भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति आदि पर पटना रेडियो स्टेशन से १९६५ से लेके आजु ले प्रायः ६५ से ऊपर वार्त्ता हो चुकल बाटे जवना में से कुछ के प्रकाशन हो गइल बा।

(क) भारत सरकार के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का वैज्ञानिक आ

तकनीकी शब्दावली के अन्तर्गत 'साहित्य समीक्षा' शाखा के वार्त्ता विशेषज्ञ समिति सदस्य (सन् १९६५ ई० से १९६९ ई० तक)।

(ख) बिहार विश्वविद्यालय के भोजपुरी पाठ्यक्रम समिति के सदस्य (१९७१ ई० से १९७२ ई० तक)।

(ग) मासिक फॉकलोर (कलकत्ता) के 'करेण्ट इण्डियन प्रेस' के स्तम्भ के नियमित लेखक (१९६० ई० से १९६६ ई० तक) जवना में भारतीय भाषा में प्रकाशित लोक साहित्य संबंधी लेखन पर टिप्पणी लिखे के परत रहे।

(घ) कॉपी साइज में प्रायः सात हजार पृष्ठ में भोजपुरी लोक-साहित्य आ लोकवार्त्ता के संग्रह (१९३९ ई० से आज तक)।

(ङ) लगभग सात सौ हिन्दी आ संस्कृत के प्राचीन पोथियन के संकलन बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के भेंट, जवन 'चौबे संग्रह' में सुरक्षित बाटे।

(च) भोजपुरी कोश के निर्माण में लागल बानीं।

(छ) भोजपुरी लोकगीतन आ लोककथा के सम्पादन में लागल बानीं।

(ज) साहित्यकार लोग के सात-आठ हजार चिट्ठियन के संग्रह (१९४१ से आज तक)।

(झ) लोक-साहित्य आ लोक-संस्कृति विषयक भारतीय भाषा आ अंगरेजी में प्रकाशित पुस्तकन के संग्रह आउर पत्र-पत्रिकन के विशाल संग्रह।

(ञ) नया साहित्यकार लोगन के रचनात्मक काम करे के प्रोत्साहन आ शोध छात्र के शोध-कार्य में सहयोग।

(ट) भोजपुरी अकादमी के कार्य समिति, पत्रिका का सम्पादक मण्डल के सदस्य।

(ठ) अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कार्य समिति चाहे प्रवर समिति के प्रारम्भिक काल से सदस्य।

(ड) अंगरेजी फॉकलोर, लोकायन (कलकत्ता), भोजपुरी के 'अंजोर' (पटना), 'जोखिम' (मोतिहारी), 'हिलोर' (आरा), 'भोजपुरी जनपद' (वाराणसी), 'अर्घ्य' (हिन्दी पत्रिका) आदि के पत्र-पत्रिकन के सम्पादक मण्डल में।

(ढ) पुस्तकालय आन्दोलन मे चौबेजी के सराहनीय भूमिका बाटे। नवयुवक पुस्तकालय (मोतिहारी) आजीवन सदस्य, जिला पुस्तकालय संघ (मोतिहारी) के उपाध्यक्ष रहि के अपने पुस्तकालय आन्दोलन के जगजगवले बानीं।

(ण) चौबेजी बिहार रिसर्च सोसायटी, एशियाटिक फॉकलोर सोसायटी, लोकवार्त्ता परिषद् (टीकमगढ़), मिथिक सोसायटी (बंगलोर), भोजपुरी संसद (वाराणसी), क्षेत्रीय भोजपुरी सम्मेलन (सीवान १९४७ ई०), भारतीय हिन्दी

परिषद् (प्रयाग विश्वविद्यालय), भारतीय लोक संस्कृति संस्थान (प्रयाग), बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन (पटना), भोजपुरी भाषा सम्मेलन (पटना), भोजपुरी सेवा संघ, लोक-संस्कृति संस्थान, फॉकलोर सोसायटी (कलकत्ता), आ नागरी प्रचारिणी सभा (वाराणसी) के सदस्य बानीं।

(त) चम्पारण जिला का खण्डहर से प्राप्त सामग्री पटना संग्रहालय के भेंट कइले बानीं।

चौबेजी के साहित्य सेवा खातिर अनेक संस्थन से सम्मान मिलल बाटे। एह संस्थन में भोजपुरी साहित्य मण्डल (बक्सर) १९६६ में, भारतीय नृत्यकला मन्दिर (पटना) १९६७ में, भोजपुरी साहित्य परिषद् (जमशेदपुर) १९६७ में, सिंहभूमि जिला भोजपुरी समाज (जमशेदपुर) १९७३ में, बिहार सरकार के राजभाषा विभाग, भोजपुरी भाषा सम्मेलन आ लोकभाषा समाज अपने के सम्मानित कइले बा। एकरा अलावे सीवान जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन (१९७४ ई०) के उद्घाटन अपने कइले रहनीं। ई उद्घाटन भाषण 'भोजपुरी के कुछ समस्या आ समाधान' पुस्तक में छपल बाटे। सन् १९५९ ई० में बिहार राष्ट्र-भाषा परिषद् वार्षिकोत्सव का अवसर पर 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' विषय पर निबंध पाठ करे के नेवता देले रहे आ अपने निबंध पाठ कइले रहनीं। 'भोजपुरी अकादमी' (पटना) ४ फरवरी १९७९ ई० के एगो शानदार सभा में अपने के सम्मानित कइलस। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना नउआँ (राँची) अधिवेशन (२६·२७ अक्तुबर, १९८५) के अध्यक्ष चौबेजी के बना के सम्मान देहलस। लोकभाषा के सर्वश्रेष्ठ विद्वान डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय अपना माताजी का नाम पर चौबेजी के लोकभाषा साहित्य सेवा खातिर शान्ति निकेतन (बंगाल) का आयोजित अधिवेशन में १९८९ में सम्मान पुरस्कार दिहनीं।

एह घरी अपने भोजपुरी के सच्चा पहरुआ का रूप में पुस्तक आ पत्रिका का माध्यम से आ चिट्ठी के तत्काल उत्तर दे के अपना जागरूकता के परिचय देते बानीं, जहाँ-तहाँ लोकभाषा सम्मेलन आ साहित्यिक गोष्ठियन में अपना उपस्थिति के अलख जगावतानीं।

भगवान से प्रार्थना बा जे अपने के शतायु बनावस कि भोजपुरी-सेवा के माध्यम से राष्ट्र के सेवा करत रहीं।

शत शत प्रणाम।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार

श्री सन्त कुमार वर्मा

"इस सृष्टि में ऐसी संज्ञाओं की कमी नहीं है, जो अपनी संज्ञा-विहीनता के बूते पर इस मुहावरे को मुखरित करने को मजबूर करें कि 'आंख के अन्धे नाम नयन सुख' मगर कुछ ऐसी संज्ञाओं का अस्तित्व भी इस संसार में वर्त्तमान है, जो स्वनामधन्यता के सार्थक परिवेश में पलती हैं, पनपती हैं, परवान चढ़ती हैं और प्रभावित करती हैं।

श्री सन्त कुमार वर्मा, जिन्हें हम लोग 'सन्त बाबू' कहते हैं, अपने दोनों ही नामांशों के साथ सही रूप में सन्तुलित हैं। स्वभाव से 'संत' और आजीविका से 'बाबू' अर्थात् साहित्यिक प्रवृत्ति के मानवीय तत्वों की उदात्तता ने उन्हें 'सन्त' की प्रकृति दी है और पेशे से वकालत के द्वारा 'बाबू' बना दिया है।"

ई उद्‌गार ह प्रमुख साहित्यकार आ साप्ताहिक 'जनजीवन' के सुयोग्य सम्पादक श्री ब्रजकिशोर नारायण जी के। जे चन्द शब्दन में श्री सन्त कुमार वर्मा के व्यक्तित्व के मनोरम चित्रण कइले बाड़ें।

वर्माजी के पिता श्री रसिक बिहारी शरण के विआह मुजफ्फरपुर जिला के कुरहनी थाना के भगवानपुर गाँव के श्री वासुदेव नारायण के लइकी श्रीमती रामज्योति देवी से भइल जे अपना पिता के सन्तानन में सबसे बड़ रही। वासुदेव बाबू के तीनों लड़िकन में श्री रामधारी प्रसाद 'विशारद' कर्मठ स्वतंत्रता सेनानी आ बिहार के प्रमुख साहित्यकार रहीं। इहाँ का बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक सदस्य के साथे-साथ लम्बा अरसा तक एकर प्रधानमंत्री आ एकर बीसी अधिवेशन के अध्यक्षतो कइनीं।

वर्माजी के जन्म अपना ममहरे में ११ फरवरी, १९१४ ई० के भइल। अपना सात भाई-बहिन में इहाँ का सबसे बड़ बानीं।

अपना नाना-नानी के संतानन के पहिला संतान भइला के नाते वर्माजी अपना ननिहाल में बहुत दिन तक रह गइनीं आ ओह परिवार के समूचा लाड़-प्यार के पहिलका भागीदार भइनीं। एह परिवार के साहित्यिक वातावरण में पलइला-पोसइला से इहाँ में जे साहित्यिक अंकुर जामल ऊ समय पाके धीरे-धीरे फरल आ फुलात गइल। बिहार के प्रमुख साहित्यकार लोगन के आगमन उहाँ समय-समय पर

होत रहे, जेमें सर्वश्री आचार्य शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष वेनीपुरी, पीर मुहम्मद 'मुनीश', रामधारी सिंह 'दिनकर', मथुरा प्रसाद दीक्षित, छविनाथ पाण्डेय, ललित-नारायण सिंह 'नटवर' आदि नाम के विशेष चर्चा कइल जा सकेला। एह महान साहित्यकारन के निकट सम्पर्क में आवे के अवसर वर्माजी के पहिले-पहिल ममहरे में मिलल।

वर्माजी के प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा के श्रीगणेश अपना गाँव दिघवलिया में, माध्यमिक शिक्षा सीवान, छपरा आ कलकत्ता में आ उच्च शिक्षा दयालबाग आ इलाहाबाद में भइल। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी० ए० आ एल-एल० बी० कइला के बाद इहाँ का सीवान में वकालत करत बानीं।

सन्त बाबू विद्यार्थी जीवने से राष्ट्रीय आन्दोलनन में दिलचस्पी लेत आ रहल बानीं। सन् १९२९ से ही इहाँ का खादी पहिरे लगनीं जे आजो यहाँ से चिपकल बा। गाँधावादी भइला के नाते इहाँ के जीवन बहुत सादा, स्वभाव बहुत सरल आ विचार बहुत ऊँचा बा। १९४२ के राष्ट्रीय आन्दोलन के सिलसिला में १३ अगस्त के शहीद सराय गोलीकाण्ड के बाद इहाँ पर वारन्ट भइल बाकिर गिरफ्तार ना हो सकनीं। एही तरे नमक सत्याग्रह में इहाँ के गिरफ्तारी भइल रहे पर १०-११ मील चलाके रास्ते में वारहो सत्याग्रही के साथ इहाँ के रिहा कर दिहल गइल।

विद्यार्थी जीवने से वर्माजी में साहित्यिक अभिरुचि पावल जात रहे। इहाँ के साहित्यिक जीवन के शुरुआत कवि के रूप में भइल जे महाविद्यालय आ विश्व-विद्यालय के वातावरण में रहके आउर प्रौढ़ होत गइल।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में जब इहाँ का कानून के छात्र रहीं तवे इहाँ के 'महादेवी वर्मा' नामक आलोचनात्मक कृति प्रकाशित भइल। ई पुस्तक महादेवीजी पर लिखल पहिलका आलोचना–पुस्तक रहे। ई एतना प्रशंसित भइल कि एहसे उत्साहित होके इहाँ का लेखनकार्य में लग गइनीं। इहाँ के लिखल एक दर्जन से ज्यादा पुस्तक प्रकाशित बा जवना में महादेवी वर्मा का अलावे—

१. घाघ और उनकी कहावतें	—	अध्ययन संग्रह
२. 'शाद' आजोमावादी	—	सम्पादन
३. भक्ति बोध	—	सम्पादन
४. मौलना मजहरुल हक	—	जीवनी
५. वावू व्रजकिशोर प्रसाद	—	जीवनी
६. भक्तवर रामाजी महाराज	—	जीवनी
७. नवज्योति	—	सह-सम्पादन
८. बाबू	—	जीवनी

'बाबू' राजेन्द्र बाबू के जीवनी भोजपुरी में लिखल १९७७ में प्रकाशित भइल। इहाँ ई कहल असंगत ना होई कि इहाँ के अधिकांश ग्रन्थ अपना विषय के पहिलका रचना बा।

वर्माजी के अप्रकाशित पुस्तकन में प्रमुख बा—

१. सेवानिवृत्त प्रथम राष्ट्रपति
२. मानस कोश
३. भक्तवर पुजारी जी महाराज जीवनी (भोजपुरी में)
४. स्नेहदीप (काव्य संग्रह)
५. राजेन्द्र जीवन-दर्शन
६. भोजपुरी कहानी संग्रह

एकरा अलावे अनेक पत्र-पत्रिकन आ निबन्ध ग्रन्थन में इहाँ के रचना प्रकाशित भइल बा।

साहित्यकार के अनेक दुर्लभ गुन इहाँ में पावल जाला। साहित्यिक गुटबन्दी से अलग-थलग रहत कवनो साहित्यिक चाहे सामाजिक उत्सव में सबके एक साथ लेके चलेके इहाँ का हर सम्भव कोशिश करीलें। पदलोलुपता के कबो शिकार इहाँ का ना भइनीं तबो जवन पद इहाँ का अनायासो मिल जाला ओकरा मर्यादा के गौरव-पूर्ण ढंग से निभावे के हमेशा कोशिश करीलें।

वर्माजी सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सीवान जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन आ सीवान जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष रह चुकल बानीं। दीर्घकालीन साहित्यिक सेवा से प्रभावित होके सीवान-गोपालगंज जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ओर से भोरे अधिवेशन १९७५ में आ बिहार सरकार के राजभाषा विभाग का ओर से पटना में इहाँ का सम्मानित कइल जा चुकल बानी। एकरा अलावे सीवान जिला पत्रकार संघ अपना अधिवेशन में इहाँ के सम्मानित कर चुकल बा। इहाँ का अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के प्रवर समिति के लगातार तीन सत्र तक आ पुरस्कार निर्णायक समिति के सदस्य रह चुकल बानीं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में इहाँ के विशेष योगदान रहल बा। सीवान से प्रकाशित दूगो साहित्यिक मासिक पत्र 'आगमन' आ 'युगसंदेश' के इहाँ का प्रधान सम्पादक रह चुकल बानीं। एकरा साथे करीब ४० बरिस तक लोकप्रिय 'आज' के स्थानीय संवाददाता रह चुकल बानीं।

इहाँ एगो घटना के चर्चा कइल असंगत ना होखी। एक दफे भारत के पहिलिका राष्ट्रपतिजी अपना घरे जीरादेई आइल रहीं। सीवान साहित्य परिषद् के एगो प्रति-

निधिमण्डल परिषद् के वार्षिक अधिवेशन के शुभकामना सन्देश लेवे खातिर उहाँ से जीरादेई में मिले गइल। राष्ट्रपति जी साहित्य परिषद् के गतिविधि के जानकारी पवला के बाद बहुत दुःख के साथ कहनीं कि बिहार के राष्ट्रीय जागरण में मौलाना मजहरूल हक साहब आ बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद के महत्त्वपूर्ण योगदान रहे बाकिर कवनो लेखक एह लोगन के जीवनी लिखेके प्रयास ना कइल। अगर साहित्य-परिषद् एह काम के कर पाइत तब हमरा बड़ा खुशी होइत।

प्रतितिधिमण्डल उहाँ के एह सलाह के आदेश मानके स्वीकार कर लिहल। बाद में वर्माजी से दूनो महापुरुषन के जीवनी लिखवा के साहित्य परिषद् का ओर से प्रकाशित करावल गइल आ ८ मई, १९६२ के राष्ट्रपति-भवन में राष्ट्रपतिजी के समर्पित कइल गइल। पुस्तक समर्पण करे के अवसर पर साहित्य परिषद् के जवन प्रतिनिधिमण्डल दिल्ली गइल रहे, उनकर नाम रहे सर्वश्री मुहम्मद युसुफ एम० पी०, नन्द कुमार, इन्द्रबिहारी शरण आउर साहित्य परिषद् के उपाध्यक्ष आ पुस्तकन के लेखक वर्माजी आ परिषद के मंत्री तथा एह पंक्तियन के लेखक अक्षयवर दीक्षित।

राष्ट्रपति पद से सेवानिवृत्त भइला का बाद पूज्य बाबू दूनो जीवनी के पढ़वा के सुनला के बाद एतना प्रभावित भइनी कि वर्माजी के बुलाके अपना निजी सचिव के रूप में अपना साथे रख लेहनीं। लगभग छः महीना तक इहाँ का उहाँ के साथ रह पवले रहनीं कि बाबू स्वर्गवासी हो गइनीं। तबो एह सुनहला अवसर के सदुपयोग इहाँ का प्रतिदिन के डायरी लिख के कइले बानी। सीवान लौटला पर इहाँ का ओह डायरी के आधार पर एगो पुस्तक लिखनी, जेकर नाम बा सेवानिवृत्त प्रथम राष्ट्रपति। एह पुस्तक में आउर बात के अलावे बाबू के मनोरम व्यक्तित्व के अनुपम झाँकी पावल जाला।

आपन अध्ययन खतम कके सन्त बाबू जब सीवान अइनी त ई देखके इहाँ का बहुत दुख भइल कि इहाँ कवनो साहित्यिक संस्था नइखे। अपना मित्र मण्डली से एह बारे में राय-विचार होते रहे तब तक सीवान के नवगठित डी० ए० वी० कॉलेज में इहाँ के पूर्वपरिचित श्री कलक्टर सिंह 'केसरी' जी के पदार्पण भइल। फेरू का रहे ? तुरन्ते सबका सहयोग से साहित्य परिषद् के स्थापना भइल। एकर प्रथम अध्यक्ष केसरीजी आ प्रथम प्रधान सचिव वर्माजी बनावल गइनी। एही तरे प्राचार्य डा० जे० एल० शर्मा आ श्री गदाधर प्रसाद श्रीवास्तव वकील के उपाध्यक्ष बनावल गइल।

वर्माजी अपना प्रधान मंत्रित्वकाल में पहिले-पहिले साहित्य परिषद् के मंच से तुलसी जयन्ती मनावे के शुरुआत कइनीं जे अब इहाँ के सब शिक्षण-संस्थन में

मनावल जा रहल बा। तुलसी जयन्ती के अलावे एह मंच से प्रेमचन्द जयन्ती, भारतेन्दु जयन्ती, निराला जयन्ती, प्रसाद जयन्ती समय-समय पर मनावे के आयोजन होखे लागल। इहे ना, एह जयन्तियन के अवसर पर निबन्ध, भाषण आ कविता प्रतियोगिता के आयोजनो कइल जाय, छात्र के इनामो दिहल जाय।

इहाँ एक बात के चर्चा क दिहल असंगत ना होई। एकरे मंच से आयोजित राजेन्द्र जयन्ती का अवसर पर पहिले पहिल केसरीजी आपन प्रसिद्ध कविता 'जीरा-देई' सुनवले रहनीं।

साहित्य परिषद् के निमंत्रण पर सीवान में सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सातवाँ अधिवेशन श्री राजवल्लभ सहाय के अध्यक्षता में मार्च १९४७ में भइल जेकर उद्घाटन कइनीं आचार्य शिवपूजन सहायजी। एकरा साथे समूचा भोजपुरी क्षेत्र में पहिले पहिल भोजपुरी के साथे साहित्य शब्द लगा के भोजपुरी साहित्य सम्मेलन श्री बलदेव उपाध्यायजी के अध्यक्षता में भइल जेकर उद्घाटन कइनी बिहार के माननीय मंत्री श्री जगलाल चौधरी जी। एह सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष रहनीं श्री गदाधर प्रसाद श्रीवास्तव आ वर्माजी स्वागत मंत्री रहनीं।

एकरा बाद त साहित्य परिषद के निमंत्रण पर जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन आ जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आयोजन के जे सिलसिला जारी भइल ऊ कई दशक तक जारी रहल। एह अधिवेशनन के सफलता में वर्माजी के महत्त्वपूर्ण योगदान रहल।

एही तरे अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन डा० भगवतशरण उपाध्याय के अध्यक्षता में सीवान में भइल त वर्माजी ओकर उपस्वा-गताध्यक्ष बनावल गइनीं। एह अवसर पर स्वागत समिति का ओर से जे स्मारिका निकालल गइल ओकर प्रधान सम्पादक इहें का रहीं। एकर उपयोगिता आ महत्ता के लोहा सब लोग मानल। ई पहिला अवसर रहे जब कवनो भोजपुरी सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर एतना उपयोगी स्मारिका निकालल गइल होखे।

सीवान नगर के सर्वमान्य साहित्यकार होखे का साथे-साथे राजनीतिक आ सामाजिक कामो में इहाँ में उहे लगन पावल जाला। इहाँ का लगातार ९-१० बरिस तक सारन जिला बोर्ड के शिक्षा समिति के प्रभावशाली सदस्य रह चुकल बानीं। सीवान नागरिक संघ के करीब एक दशक तक प्रधान मंत्री आ कुछ साल तक उपाध्यक्षो रह चुकल बानीं। राजनीतिक क्षेत्र में इहाँ के योगदान के चर्चा पहिले हो चुकल बा।

करीब १९–२० साल पहिले सीवान में अखिल भारतीय मानस प्रचार समिति के शाखा खुलल जेकर वर्माजी संस्थापक सदस्य बानीं। अपना प्रचार मंत्रित्वकाल में

इहाँ का नगरे में ना सुदूर देहातो में एकर शाखा खोलववले बानीं आ समय-समय पर एकर निरीक्षणो करीलें। एह पुनीत काम के इहाँ का साहित्य-प्रचार-प्रसार के अंगे मानीलें। एइमें इहाँ के अटूट निष्ठा देखल जाला। इहाँ के बरावर ई चेष्टा रहेला कि शिक्षण-संस्था सब में एकर शाखा खोलल जाव ताकि छात्रन में भाषा के समुचित ज्ञान आ अनुशासनबद्धता आ जाय।

वर्माजी एगो अइसन शिक्षित परिवार के सदस्य बानी जेकरा तुलना में बहुत कम परिवार नजर में आवत बा। इहाँ का परिवार में इहाँ का भवह (अनुज पत्नी) श्रीमती शैलजा कुमारी श्रीवास्तव भोजपुरी के विशिष्ट साहित्यकार रहली। इनकर लिखल 'चिन्तनकुसुम' (भोजपुरी निवन्ध संग्रह) अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का 'चित्रलेखा पुरस्कार' १००१ रु० से सम्मानित हो चुकल बा। ई बहुत नीमन कवयित्री आ कथा साहित्यकारो रहली।

वर्माजी के शुभ विवाह उत्तर प्रदेश के बलिया जिला के बालूपूर ग्राम निवासी श्री राय यदुनन्दन प्रसाद जी के वेटी श्रीमती लक्ष्मी देवी से ८ जुलाई १९३४ में भइल। इहाँ के एगो पुत्र श्री प्रेम कुमार आ एगो पुत्री श्रीमती चन्दा कुमारी बाड़ी। पुत्र श्रीनगर सीवान के व्रजकिशोर उच्च विद्यालय में विज्ञान शिक्षक आ पुत्री विद्या भवन महाविद्यालय सीवान में मनोविज्ञान विभाग में प्राध्यापिका बाड़ी।

एह तरे हम पावत बानीं कि वर्माजी साहित्य के सेवा साहित्य-रचना आ साहित्यिक संस्थानन के गठन करके--दूनो ढंग से कर रहल बानीं। इहाँ का धर्म आ जाति के बन्धन ना मानीं। एह अर्थ में इहाँ का सच्चा समाज सेवियो बानीं। इहाँ के मित्र-मण्डली में सब धर्म आ जाति के लोग पावल जाला। एही से कहल जाला कि अपने का सर्वधर्म समन्वयबादी बानीं। अबहीं वर्माजी से वहुत कुछ उम्मीद बा।

भोजपुरी के अप्रतिम कहानीकार
श्री ईश्वरचन्द सिन्हा

बात १९७७ ई० अक्टूबर महीना के हवे। सम्मेलन के तिसरका (सीवान) अधिवेशन होखेवाला रहे। हम स्वागत मंत्री रहनीं। हमरा ई साध रहे जे केहू कवनो पद पावेवाला विद्वान अनुपस्थित मति होखे पाओ। एही से हम खाली राह खर्च सबका लगे अगवढ़िए भेजे लगनीं। ओह ऐतिहासिक अधिवेशन में चार चांद लगावेवाली स्मारिका बनारस से छपत रहे। एही काम से हम बनारस गइनीं त सोचनी जे डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय आ श्री ईश्वरचन्द सिन्हाजी से भेंट कके राह खर्चो देले चलीं। जब दूनूँ महाशय से आपन प्रस्ताव रखनी त साफे इनकार। सिन्हा साहब त व्याख्या करत कहनीं—जे भोजपुरी के अबहीं देवे के जरूरत बा ओकरा से लेवेवाला लोग भोजपुरी का बढ़त गोड़ में टांगी मारी। ऊ भोजपुरी सेवक धन्यवाद के पात्र बा जे सम्मेलन करावे के चाहता। एगो त सम्मेलन करावेवाला लोग पर तरह-तरह के बोझ परि जाला। ओइमें आहूवाला लोग राह खर्च लेवे लागी तब त केहू सम्मेलन करावे के नावें ना ली। ई कहत हमरा ओर देखत आगे राखल रुपया उठा लेबे के इशारा कइनीं।

अइसन त्यागी भोजपुरी सेवक श्री ईश्वरचन्द सिन्हा के जनम वाराणसी के ईश्वरगंगी मुहल्ला में ६ जुलाई, १९१४ ई० में भइल। अपने के पिता श्री कपूर-चन्दजी प्रसिद्ध वकील आ जमीन्दार रहनीं ओह समय के परिपाटी के मोताबिक सिन्हा साहेब के पठन-पाठन उर्दू आ फारसी में शुरू भइल। एकरा बाद अपने हाई स्कूल में दाखिल भइनीं बाकिर १९३० के आजादी के लड़ाई में कूद पड़ला से आगे के पढ़ाई अचानक बन्द हो गइल।

सिन्हा साहब बचपने से राष्ट्रीय आन्दोलन के जानल बुझल आ नेता लोगन के भाषण सुने में बहुत दिलचस्पी लेत रहनीं। एह दिलचस्पी लेहला के फल ई भइल कि स्कूल छोड़ १९३० में अपने सक्रिय राजनीति में आ गइनीं आ १९५१ तक ओह-में जी जान से रमल रहनीं। एह से अपना क्षेत्र के जानल मानल प्रान्तीय कार्यकर्त्ता आ बाद में प्रान्तीय नेता के रूप में आदर-सम्मान पावे लगनीं। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेहला का ओजह से १९३० के आन्दोलन में दू दफे आ १९४१ आ १९४२ में एक-एक दफे जेल जाये के पड़ गइल।

१९३० में कांग्रेस का ओर से छिप-लुक के एगो दैनिक अखबार 'रणभेरी' साइक्लोस्टाइल पर छाप के निकलत रहे जेकर समाचार संग्रह के भार सिन्हा साहेब पर आ गइल। एह काम के अपने का एतना लगन से कइनीं जे 'रणभेरी' के महत्त्व बढ़ गइल आ अपने के अभिरुचि पत्रकारिता का ओर जागि गइल जे आजुओ ओही रूप में कायम बा।

१९३२ में उर्दू 'हमदम' के संवाददाता बनिके सिनहा साहब पत्रकारिता का जीवन में प्रवेश कइनीं। एकरा साथे विभिन्न पत्र-पत्रिका में फुटकर लेखो लिखे लगनीं जेइसे लेखक के पाँत में अपनहूँ के गिनती होखे लागल।

आचार्य नरेन्द्रदेव के देखरेख में प्रकाशित समाजवादी साप्ताहिक पत्र 'हिन्द केसरी' के अपने का सम्पादक बनावल गइनीं बाकिर सरकारी कोपभाजन भइला का ओजह से जब ऊ बन्द हो गइल तब वाराणसी से निकले वाला दैनिक 'सन्मार्ग' के विशेष संवाददाता के हैसियत से काम कइनी जेइसे अपने के सुजश फइले लागल।

मार्च १९५० में सिन्हा साहब प्रमुख हिन्दी दैनिक 'आज' में आ गइनीं आ अप्रैल १९७१ तक 'आज' का कई विभागन में सेवारत रहनीं। एइजा अपने का मुख्य संवाददाता, विशेष संवाददाता, समाचार सम्पादक, आ सहायक सम्पादक के महत्त्वपूर्ण पदन पर सफलतापूर्वक कार्यरत रह के पत्रकारिता का क्षेत्र में आपन एगो भारी भरकम जगह बना लेहनीं।

'आज' से अवकाश ग्रहण कइला का बाद १९७२ में वाराणसी से प्रकाशित नया दैनिक-पत्र 'जनवार्त्ता' के मित्र-मण्डली आ सहयोगी लोगन के आग्रह पर सिन्हा साहब एकर प्रधान सम्पादक के भार उठवनीं आ एकरो के लोकप्रिय बनावे में कवनो कोर-कसर उठा ना रखनीं बाकिर वृद्धावस्था आ स्वास्थ्य में गिरावट आवत देखके १९८० में प्रधान सम्पादक के पद से अवकाश ले लिहनीं। बाकिर आजुओ परामर्श-दाता का रूप में काम करतानीं।

'आज' के सेवाकाल में सिन्हा साहब भोजपुरी का ओर आकर्षित भइनीं आउर भोजपुरी विद्वत् मण्डली से भाषा के रूप में स्वीकार करावे में पूरा मेहनत कइनीं। सैकड़ों प्रतिभाशाली नवयुवकन के भोजपुरी में लिखे खातिर प्रोत्साहित कइनीं आ भोजपुरियो लेख-कविता के प्रकाशन 'आज' में शुरू कइनीं। एहसे भोजपुरी के पक्ष में एगो अच्छा वातावरण तइयार हो गइल आ भोजपुरी लेख आ कविता लिखाये लागल। आपन मित्र आ सहयोगी डा० स्वामीनाथ सिंह के प्रोत्साहित कके 'भोजपुरी संसद' नामक संस्था के अपने गठन करवनीं। एकर फल ई भइल जे १९६४ आ १९६५ में वाराणसी में 'भोजपुरी साहित्य और संस्कृति' के जे विशाल सम्मेलन भइल ऊ कबो भुलावल ना जा सके।

एतने ना भोजपुरी संसद से प्रकाशित 'भोजपुरी कहानियाँ' मासिक पत्रिका में समय-समय पर सिन्हा साहब कहानी देवे लगनीं जेकर संग्रह 'गहरेबाजी' का नाम से प्रकाशित बा। एही एगो संग्रह से कहानीकार का रूप में सिन्हा साहब आपन एगो महत्त्वपूर्ण जगह बना लेले बानीं। एह सन्दर्भ में ई कहे में तनिको सन्देह नइखे जे सिन्हा साहब का लगन आ परिश्रम के फल रहे जे 'आज' में चतुरी चाचा के चिट्ठी नियमित छपे लागल आ ओकर लेखक डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' 'चतुरी चाचा' का रूप में विख्यात हास्य लेखक हो गइलें। ई चिट्ठियो अइसन रहे जे 'आज' के डेग नगर से गाँव का ओर बढ़े लागल। कुछ वरिस का बाद चतुरी चाचा के चिट्ठी जब बन भगइल तब डॉ० विवेकी राय 'मनबोध मास्टर की डायरी' नाम से स्थायी कालम लिखे लगलें। ओहिजा से डाक्टर साहब के नाँव पसरल आ अब त भारत के सुख्यात लेखक का रूप में डाक्टर साहब के नाँव लियाता।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (१९८२) का सातवाँ अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण में भोजपुरी नाँव कब से ? ई बतावत सिन्हा साहब कहतानीं—

'भाषा का रूप में एकर (भोजपुरी) प्रयोग कब से शुरू भइल, एकर चर्चा डॉ० भोलानाथ तिवारी भोजपुरी अकादमी पटना का तिसरका वार्षिकोत्सव समारोह (२ मई ८२) का अध्यक्षीय भाषण में कहले बाड़न। उनकर खोज बा कि "एकर नाँव मुगलशासन का अन्तिमकाल से 'भोजपुरिया' मिलेला। सन् १८८९ में लिखल 'शेर मुताखरीन' में ई शब्द आइल बा। ओह वाक्य के भोजपुरी अनुवाद होई, 'एगो सिपाही भोअपुरिया में कहलसि कि एतना शोर मत मचाव।" डॉ० तिवारी का कहनाम का मोताबिक सन् १८६८ में प्रसिद्ध भाषाशास्त्री जान बीम्स पहिले-पहिले एह बोली खातिर 'भोजपुरी' शब्द के प्रयोग कइलें। एकर अर्थ ई भइल कि प्राचीन काल का सरहपा से लेके गुरु गोरखनाथ तक का सिद्ध-साहित्य में कबीरदास से लेके भीखा गुलाल तक का सन्त साहित्य में आ लोकसाहित्य में सोहर, फगुआ आ संस्कारगीतन आदि से लेके सोहनी-रोपनी का गीतन में जवन बेनाम भोजपुरी भाषा चुपचाप आपन झण्डा बुलन्द कइले चलि आवति रहे ओकर उन्नीसवीं शताब्दी का अन्तिम चरण में विधिवत नाँव धरा गइल आ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बीम्स साहेब का पोथी 'रायल एशियाटिक सोसाइटी' का जर्नल भाग तीन में उद्घाटन हो गइल। सिर्फ बीम्स साहब ना, जार्ज ग्रियर्सन, विलियम क्रुक, ह्यूज फ्रोजर, आ ए० जी० शिरेफ वगैरह विदेश के अंग्रेजी विद्वान लोग एह भाषा के खूब उठवले बाड़न। ग्रियर्सन साहब त एकरा पर एकदम लट्टू हो गइल रहलन। आल्हा, बिजयमल आ गोपीचन्द का गीतन के भोजपुरी का अमर साहित्य का रूप में अपना कपार पर बइठा लेले बाड़न।"

अपना ओही अध्यक्षीय भाषण में भाषा सम्बन्धी गुत्थी सुलझावत इहांका कहतानी—

'अब हम रउआ सभे के ध्यान एह ओर आकर्षित कइल चाहत बानी कि कवनो भाषा के असली ताकत का होले ? जाहिर बा कि उच्चकोटि के ठोस, गम्भीर स्तरीय आ जीवन का विविध कोनन के उजागर करत प्रचुर मात्रा में प्रस्तुत ऊ जनजीवन के प्रेरित अनुरंजित करेवाला मौलिक साहित्ये होला जवन कवनो भाषा के असली ताकत होला। ई साहित्य अकेले बाहर आ भीतर दूनो तरह के शक्ति होला। इहे कवनो भाषा के, जवन बोली का रूप में कोना अन्तरा में परलि बा, मानक भाषा बनाके उछालि देला।

मैथिली, व्रज आ अवधी भाषा एकर उदाहरण बा। हालत ई बा कि भोजपुरी का मोकाबिला में व्रज आ अवधी रुद्ध आ अधूरी भाषा बाड़ी सँ काहे कि ओह में गद्य साहित्य नइखे। गद्य रचना बिना कवनो भाषा जीवन्त ना हो सकेले। एही कारण से गद्य के कवियन के कसौटी कहल गइल। सौभाग्य बा कि भोजपुरी एह कसौटी पर अवले खरा उतरति जात बा आ पूर्ण शक्तिशाली जीवन्त भाषा के लक्षण ओकरा में धीरे-धीरे उभरत जात बा। अइसना 'कड़ेर' भाषा के मान्यता के रोकि सकेला ?'

भोजपुरी प्रकाशित रचना

'गहरेबाजी' में भोजपुरी के चउदहगो कहानी बाड़ी सन। भले ही सिन्हा साहब के ई पहिलका संग्रह हवे, बाकि शिल्प का आँखि से देखला पर बुझाता जे बड़ा मजल हाथ के ई कुल्हि रचना बाड़ी सँ। चउदहो कहानी पढ़ला का बाद बुझाता जे अब तक ले जेतना तरह के कहानी लिखाइल बाड़ी सँ ओह सभ के नमूना रूप में ई एक-एक गो बाड़ी सँ। शिल्प का आधार पर एकनीके बँटवारा एह ढंग से कइल जा सकेला।

(क) कहानी के शुरुआती रूप—

१. लोककथा—बनिया के बेटा

२. पुराणकाल के कथा—वासना

(ख) प्रेमचन्द का पहिले—

१. सामाजिक नीति कथा — गांव के पैड़ा में

२. जासूसी कहानी — छात्र नेता के हत्या

(ग) प्रेमचन्द युग के कहानी—

१. आदर्शवादी कहानी — बहिन क हक

२. आदर्शोन्मुख यथार्थवादी — कहाउत पुरान हो गइल

३. रोमेन्टिक — भैरवी क साज
४ ऐतिहासिक — अब्दुल हमीद
५. हास्य व्यङ्ग्य — चेयरमैनी क चुनाव

(घ) प्रेमचन्द का बाद के कहानी—
१. यथार्थवादी — बासमती चाउर
२. आंचलिक — गहरेबाजी
३. रेखाचित्रात्मक — पुरुषारथ

(ङ) आधुनिक कहानी—
१. नयी कहानी — राधा गावत है
२. अकहानी — दसखत

भोजपुरी विकास मण्डल सीवान १९८२ में कथा साहित्य पर आपन पहिलका पुरस्कार 'गहरेबाजी' के देहलस। पुरस्कार लेबे खातिर सिनहा साहब उचित समय पर जब ना अइनीं तब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कार्य समिति के एगो बैठक पराड़कर भवन वाराणसी में भइल। मण्डल का सचिव का हैसियत से ओही अवसर पर हम पुरस्कार के राशि सिन्हा साहब के दीहनीं। कार्यसमिति का सदस्य लोगन के सेवाभार भोजपुरी संसद का ऊपर रहे। सिन्हा साहब पुरस्कार के राशि तुरंते भोजपुरी संसद के सचिव का हाथ में सौंप दीहनीं आ कहनीं जे एह पुरस्कार के हकदार भोजपुरी संसद वाराणसी वा। उहे नु पहिले 'भोजपुरी कहानियाँ' में हमरा कुल कहानियन के छपलस।

प्रकाशित हिन्दी रचना

'जन भावनाएँ' नाँव से १९६२ ई० में ज्ञानमण्डल वाराणसी से एगो हिन्दी पुस्तक छपल। एइमें चीनी आक्रमण का विरोध में सिन्हा साहब के लिखल अग्रलेखन के संग्रह बाटे। २ नवम्बर १९६२ से दिसम्बर १९६३ तक चीनी आक्रमण का सन्दर्भ में जबले लोहा गरम रहे, सिन्हा साहब रोजे एगो अग्रलेख लिख देत रहनीं। ओही सबके संग्रह ई किताब हवे।

भगवान से हमार इहे विनती वा जे सिन्हा साहब युग-युग जीं आ भोजपुरी के सेवा तन-मन-धन से करत रहीं।

अनुपम भोजपुरी प्रेमी आ जननेता
श्री केदार पाण्डेय

श्री पांडेयजी से हमरा पहिलका दर्शन भइल १९६५ ई० में सीवान नगर के पं० सरस्वतीदीन पांडेय (सुप्रसिद्ध अधिवक्ता, आ अँग्रेजी, संस्कृत तथा हिन्दी के जानल-मानल विद्वान) का सुपुत्री का वैवाहिक उत्सव का अवसर पर, जब शिष्टाचार सभा में पांडेयजी के प्रायः आधा घंटा के विवाह विषय पर सारगर्भित भाषण भइल। ऊ भाषण हमरा बड़ा नीमन लागल। तब बुझाइल जे केदार पांडेयजी खाली मजदूरन के चाहे राजनैतिक नेते नइखीं एगो मजिगर अध्ययनशील विद्वानो बानीं। सामान्य कद, गोर चेहरा, दमकत मुखाकृति, खादी का धोती कुर्त्ता से तोपाइल देह, केतना आकर्षक व्यक्तित्व रहे। पोशाक का सादगी से ई बुझात रहे जे खान-पान आ रहनो सहन में सादगी होइबे करी। सादगी में ईमानदारी आ कर्मठता रहबे करेला।

ओह बारात में पांडेयजी एह से आइल रहनीं जे भोजपुरी के भगीरथ आचार्य महेन्द्र शास्त्री के अनुज श्री रामजी पांडेय (व्याख्याता हिन्दी विभाग, राजेन्द्र कालेज, छपरा) के जेठ बेटा श्री अशोक कुमार पांडेय (आई० ए० एस०) पांडेय जी के आपन दामाद हउअन आ अशोक बाबू के अनुज श्री अनिल कुमार पांडेय (आई० पी० एस०) के शादी होखे आइल रहे जवना बारात में पांडेयजी के पदार्पण भइल रहे।

पं० सरस्वतीदीन पांडेय (वकील साहब) कीहाँ छोट-मोट उत्सव पर साहित्यिक सांस्कृतिक जमघट होते रहत रहे। ऊ त बेटी के बियाहे रहे। दूनू ओर के विद्वान जुटल रहलें। शिष्टाचार सभा जमल रहे। गद्य-पद्य के रसधार बहत रहे। बाकी सबके आँख श्री केदार पांडेयजी के ओर अँटकल रहे जब पांडेयजी 'विष्णु स्वरूप पर महोदय' के इयादि क के विवाह के आठो भेद के व्याख्या कइनीं आ हमनीं कीहाँ प्रचलित बिवाह के ब्रह्म-विवाह के रूप देहनी त बुझाइल जे एह मनीषी में कतना अध्ययनशीलता बाटे। सभा के संचालन हम हीं करत रहनीं आचार्य महेन्द्र शास्त्री का आदेश से। प्रायः पाँच घंटा सभा जमल रहे जे आजु सबसे बड़ उपलब्धि भइल कि श्री पांडेयजी के पहिलका दर्शन भइल।

१९७२ ई० में जब पांडेय जी मुख्यमंत्री भइनीं आ बिहारी शिक्षा-परीक्षा के कदाचार मिटवनीं त पांडेयजी के मौलिक कारयित्री प्रतिभा के दर्शन मिलल। नीचे से ऊपर तक सब परीक्षा में—जवन कदाचार सीमा पार क गइल रहे तवन

पांडेयजी का मुख्य मंत्रित्वकाल में एकदम खतम हो गइल रहे । बाकी ऊ हालत एके दू बरिस ले रहे । फेनूँ त कदाचार अपना सिंहासन पर बइठि के राज करे लागल ।

अपना मुख्यमंत्रित्वकाल में पांडेयजी एगो अउरी ऐतिहासिक काम कइनीं । बड़-बड़ जिलन के तूरि के छोट-छोट जिला बनावे के काम पांडेयजी का कर्मठता से भरल मौलिक विचार देन रहे जवन प्रशासनिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व के काम रहे ।

अइसन पांडेयजी के जनम चम्पारण जिला का तौलहा गाँव में ९ दिसम्बर १९१६ ई० में श्रीमान् रामफल पांडेयजी का धर्मपत्नी से चउथा बेटा का रूप में भइल । अपने के प्रारम्भिक शिक्षा घरे पर शुरू भइल, माध्यमिक परीक्षा राज हाई स्कूल बेतिया से, इन्टर मुजफ्फरपुर कालेज से आ एम० एस-सी० तथा एल-एल० बी० के परीक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पास कइनीं । विद्यार्थी जीवने से पांडेयजी में नेतृत्व-भावना काम करत रहे ।

जे अध्ययनशील ना रहीं ऊ विद्वान ना हो सके । जे विद्वान होई ओकरा में ज्ञान के क्रिया का धरातल पर उतारे के सही क्षमता होइबे करी । तबे नूँ ऊ विद्वान होई । 'यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान् ।' सामाजिक क्षेत्र होखे चाहे राजनीतिक क्षेत्र, सांस्कृतिक क्षेत्र होखे चाहे साहित्यिक क्षेत्र होखे हर जगह पांडेयजी के विद्या-व्यसनी रूप झलकत रहे । एह तरे विज्ञान के विद्यार्थी रहलो पर विज्ञान तक ले पांडेयजी के ज्ञान सीमित ना रहे । दर्शन, इतिहास, अध्यात्म साहित्य आदि विषयन पर पांडेयजी के मौलिक विचार सुने के जेकरा अवसर मिलल बा ऊ मानेला जे पांडेयजी स्वाध्यायी स्वभाव के रहनीं । एही से अंग्रेजी चाहे हिन्दी में धारा-प्रवाह आ तथ्यपूर्ण भाषण देबे में माहिर रहनीं ।

पांडेयजी ईश्वरवादी रहनीं—गीता का कर्मयोग के आस्थावान पुजारी । तबे नूँ यज्ञ, पूजापाठ, आराधना-उपासना के ओर उहाँ के पूरा झुकाव रहे ।

सामाजिक व्यक्तित्व में जवन गुन चाहीं पांडेयजी में ऊ गुन कूटि-कूटि के भरल रहे । केहू अगर बीमार परि जाव त पांडेयजी पहुँचि के ढ़ाढ़स देत रहनीं । अइसनो होत रहे जे बियाह के नेवता कई दिन कई जगह से आ जात रहे तबो अबेर सबेर सब जगह पहुँचते रहनीं । बिहार के एगो कमी बा—राजनीतिक लोग में जातीयता । पांडेयजी जातीयता से ऊपर उठि के सब काम करत आ सब बात सोचत रहनीं ।

पाण्डेयजी के राजनीतिक जीवन १९४२ से शुरू भइल । महात्मा गांधी के 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' के एतना प्रभाव पाण्डेयजी का मन पर परल जे उहाँ का परिवार में केहू राजनीतिक व्यक्ति ना भइलो पर बयालिस का आन्दोलन में डट के काम कइनीं, जेलो गइनीं । रामनगर राजा का बकास्त जमीन के लेके थारूअन में

व जागरन के लच्छन देखनीं इहाँ का थारूअन के नेतृत्व कइनीं, आन्दोलन चलवनीं । यश के भागी भइनीं । एहिजा से पाण्जेयजी राजनीति में आगे बढ़नीं ।

१९४५ ई० से पाण्डेय जी मोतिहारी में वकालत शुरू कइनीं । कुछुए बरिस का द तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह जी का इशारा पर पटना जाके वकालत करे नीं । एहिजा उहाँ का नेता सभ का साथे रहे के चस्का लागल । १९५२ का आम नाव में पाण्डेयजी वगहा क्षेत्र से बिहार विधानसभा के सदस्य चुनल गइनीं । ९५७ में फेनूँ ओहिजा से चुनि के विधानसभा में गइनीं । १९६२ का चुनाव में ण्डेयजी विफल हो गइनीं । १९६७ से तथा बाद का सभ चुनाव में पाण्डेयजी तन क्षेत्र से बराबर जीतत रहनीं आ १९८० ई० तक विधानसभा के सदस्य नल रहनीं ।

प्रशासन का क्षेत्र में पाण्डेयजी उद्योग आ प्रावैधिक शिक्षा के उपमंत्री रहनीं । ९७१ में नदी-घाटी योजना के मंत्री बनावल गइनीं । १९७२ में सामान्य निर्वाचन बाद अपने मुख्यमंत्री बनावल गइनीं । मुख्यमंत्री का रूप में २ जुलाई १९७३ क एह प्रतिष्ठित पद पर रहनीं । १९८० में बेतिया लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से तवीं आ केन्द्र में रेलमंत्री बनावल गइनीं आ बाद में सिंचाई मंत्री ।

पाण्डेयर्जा अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सम्मानित सदस्य रहनीं । कई रिस ले बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष रहनीं । बिहार विधान मण्डल ांग्रेस पार्टी के सचिव आ मुख्य सचेतक का रूप में अपने उल्लेखनीय भूमिका नबहनीं ।

एह तरे राजनीतिक क्षेत्र में प्रशासनिक पद पर रहिके इहाँ का आपन अपूर्व मता, बेजोड़ कार्य संचालन से योग्यता आ एकनिष्ठ जन-सेवा का भाव से भरल हनीं । तबे नूँ बिहारे ना, भारतो का इतिहास में इहाँ के नाँव अमर रही ।

पाण्डेयजी में छात्र-जीवन से साहित्यिक अनुराग देखल जात रहे । मोतिहारी में ब वकालत करत रहनीं तब 'भारतीय साहित्य-संघ' के मंत्री रहनीं । १९६२ में हसी में जब चम्पारण जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन भइल त हाँ का ओकर स्वागताध्यक्ष रहनीं । इहाँ का स्वागताध्यक्षता में सम्मेलन खूब सफल इल । १९६५ ई० में वाराणसी में, भोजपुरी संसद के वार्षिकोत्सव रहे । दूसरका दिन का खुला अधिवेशन के उद्घाटन करत पाण्डेयजी कहले रहनीं—'भोजपुरी का विकास से हिन्दी के कवनो तरह से क्षति नइखे । ज्ञान-विज्ञान के पुस्तक हिन्दी में लिखाये के चाहीं आ प्रचार वाला साहित्य भोजपुरी में ।' १९७६ ई० में पाण्डेयजी का वजह से 'चम्पारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन' आ 'संस्कृत सम्मेलन' भइल

रहे। १९७३ ई० में 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के गठन भइल त तदर्थ समिति के अपने अध्यक्ष बनावल गइनीं। ओह सम्मेलन के प्रारम्भिक खर्च पाण्डेयजी अपना ऊपर ले लिहनीं। ओह सम्मेलन के दूसरका अधिवेशन आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का अध्यक्षता में पटना में भइल। अपने ओकर स्वागताध्यक्ष रहनीं। ओही बरिस में अपने का अध्यक्षता में गैर सरकारी 'भोजपुरी अकादमी' के गठन भइल। अकादमी का देखरेख में 'भोजपुरी समाचार' निकलल। बाद में एह 'भोजपुरी अकादमी' के बिहार सरकार ले लिहलस। अकादमी के पहिलका ग्रन्थ 'कालजयी कुँअर सिंह' छपल त अपने कवि डॉ० सर्वदेव तिवारी 'राकेश' के एक हजार एक रुपया के नगद पुरस्कार देहनीं। अकादमी का वार्षिकोत्सव में भाग लेके अपने ओकर इज्जत बढ़वनीं। 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' का 'अमनौर' अधिवेशन में सामिल होके अपने अपना साहित्य प्रेम के परिचय देहनीं। श्री पाण्डेयजी द्वारा संचालित 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' 'आ भोजपुरी अकादमी' आजुओ नीक तरह से भोजपुरी के सेवा कर रहल बाटे।

जनम का बाद मरनि जरूरी ह। श्री पाण्डेयजी २५ मार्च १९८३ के ११ बजे दिन में वेलिंगडन अस्पताल दिल्ली में परलोक सिधार गइनीं। ५ अप्रैल १९८३ ई० के अपने के श्राद्ध अपने गाँव में सम्पन्न भइल। अपने के जेठ बेटा डा० मनोज कुमार पाण्डेय सब क्रिया पूरा कइलन। अपने के मित्र, सगा-सम्वन्धी, भाई-वन्धु, प्रशासक, अधिकारी, केन्द्र आ राज्य के अनेक मंत्री आदि सभन आइले रहे, मुख्यमंत्री डॉ० जगन्नाथो मिश्र जी आ गइल रहनीं। एह तरे करीब दस हजार लोग श्राद्ध में श्रद्धान्जलि देबे आइल रहे।

प्रकाशित—भोजपुरी भाषा सम्मेलन
पत्रिका के स्मृति अंक
१९८५

एगो जीवन्त व्यक्तित्व

समादरणीय लक्ष्मण पाठक 'प्रदीप'

कहल गइल बा जे चौरासी लाख योनि में आदमी के जनम बड़ा दुर्लभ बाटे। दमी के जनम पवलो पर जीये के ढंग केहू-केहू का आवेला। अइसे त सभे जियवे ला। केहू मोटरी बनि के जिएला आ ओह मोटरी के दोसरे केहू ढोएला। केहू -रंग में फँसल बीतल आ आवेवाला समय के परवाह ना कर के खाली वर्तमाने बारे में सोचत-हँसत-खेलत आपन जिनिगी जीयत रहेला। आ, केहू अपना जिनिगी आपन जीवन त बनइबे करेला, दोसरो के जीवन निर्माण का चिन्ता में परल ला आ कर्मयोगी बनि के जीवन जिएला। स्व० लक्ष्मण पाठक 'प्रदीप' तिसरके ह के जीवन जीएवाला सचहूँ एगो कर्मयोगी रहनीं।

'प्रदीप जी' बिहार प्रान्त के पच्छिमी छोर पर अटट भोजपुरी क्षेत्र में बसल नरिया गाँव के निवासी रहनीं। पिता पं० परमहंस पाठक का घरे श्रीमती की देवी का कोख से इहाँ के जनम १ जुलाई १९१७ ई० में भइल। प्रदीप जी लौता बेटा रहनीं। यथा समय श्रीमती पानमती देवी से बियाह भइल आ इहाँ देह से सुरेश, हरेश दूगो होनहार बेटन के जनम भइल। अब प्रदीप जी का र्गिय भइला का बाद एही दूनू बेटन का ऊपर घर के भार बाटे। अइसे परिवार टा-पतोह-पोता-पोती सब भरल बाटे।

प्रदीप जी के प्रारम्भिक शिक्षा लोअर स्कूल मुशहरी, सोहनरिया पाठशाला आ विद्यालय खुरहुरिया में भइल। उच्च विद्यालय के शिक्षा जी० ए० उच्च लय कटेया आ उच्च विद्यालय रामपुर अटौली में पवनीं।

छात्रावस्था में बड़ा मेधावी रहला से शिक्षक सभ के कृपापात्र त रहबे कइनीं, प्रिय आ सुयोग्य प्रधानाध्यापक सकल सिन्हा के वरदहस्त अपने का ऊपर परल। हा जी का सादा जीवन उच्च विचार के प्रभाव प्रदीप जी पर खूब ढंग से परल छात्रे जीवन से एह रंग में रंगा गइनीं जवन जीवन का अन्तिम समय तक कायम । अटौली हाई स्कूल में छात्रन का प्रतिभा के बिकास खातिर कइगो कार्यक्रम नाध्यापक जी चलावत रहनीं जवना में वर्ग-पत्रिका (हस्तलिखित) निकालल काम रहे। ई काम छात्र प्रदीप जी का मन का अनुकूल रहे। इहाँ का आपन य तैयारी का साथे ओह काम में जुट गइनीं आ वर्ग-पत्रिका खूब सजधज के लवे ना कइल प्रकाशितो होखे लागल। कबो कहानी विशेषांक त कबो कविता

विशेषांक । एह तरह से वर्षभर में दूगो, तीन गो पत्रिका प्रकाशित होखे लागल। एही विशेषता का कारन प्रदीप जी प्रधानाध्यापक जी के विशेष कृपापात्र बनि गइनीं जवन शकल सिन्हा जी जिनिगी भर निबहनी ।

प्रवेशिका पास कइला का बाद इहाँ का सी० टी० कके शिक्षक रूप में पहिले पहिल चाँदपुरा (मशरख) में काम शुरू कइनीं । १९३३ से १९३८ तक एह विद्यालय में, रहि के १९३८ इशवीये में जी० ए० उच्च विद्यालव कटेया में आ गइनीं । एही बिद्यालय से १९७८ ई० में सेवा निवृत्त भइनीं ।

प्रदीप जी बहुत साधारण घर में जनमल रहनीं बाकी घर का लगे के नौकरी मिलल त घरो गृहस्थी सरिहार लेहनीं । साथे-साथे आइ० ए०, बी० ए० आदि इम्तहान पास कइनीं आ एगो सम्मानित शिक्षक तरे जिनिगी जीए लगनीं ।

दैनिक 'आर्यावर्त्त' के संवाददाता हो गइला से अउरी प्रतिष्ठा बढ़ गइल । अब 'सी० टी० पण्डित' ना रह गइनीं । गँवें-गँवें जिला जवार का साहित्यिक सामाजिक कार्यकर्त्ता लोग से चाहे धनी-मानी लोग से सम्पर्क बढ़ल, नेवतो हंकारी होखे लागल। अपने का अपना कीहाँ लोग के बोलावे के एतना शौक रहे जे एक-एक दिन में तीस तीस कोस सायकिल चला के दस-दस गो नेवता पूरा क लेत रहनीं । कहत रहनीं जे जवले हम ना जाइबि तवले हमरा कीहाँ लोग कइसे आई । इहे कारन रहे जे जब इहाँ कीहाँ कवनो जग-परोजन परे त एतना लोग आवे जाये जइसे कबनो मेला लागल होखे । अइसन सामाजिक प्रतिष्ठा बहुत कम लोग का मिलेला ।

अपने का शिक्षक जीवन में एगो अउरी मोड़ आइल रहे । १९५६ ई० में हाई स्कूल मच्छरगाँवा (चम्पारन) में प्रधानाध्यापक के पद मिलल रहे । बाकी अपने रह ना पवनीं । गइला का थोरे दिन का बाद एतना जोर के टायफायड हो गइल जे ऊ पढ़ल छोड़ के फेनू अपना स्कूल में चलि अइनीं ।

प्रदीप जी के साहित्य-साधना छात्रावस्था से रामपुर अटौली से शुरू भइल आ ऊ क्रमश: विकसित होत गइल । ऊ साहित्यिक विकास अपने तक सीमित ना रहल। छात्र सभ में साहित्यिक भावना जगावे खातिर अपने भाषण कला, काव्य कला, निबन्ध लेखन चाहे मानस अन्त्याक्षरी-प्रतियोगिता में भाग लेवे खातिर उकसावत रहत रहनीं । अपने के ई कार्यक्रम शिक्षक वृत्ति से हटला का बादो कायम रहे। एही के फल रहे जे कटेया भोरे में अनेक साहित्यकार त पैदा भइबे कइलें जे साहित्यकार ना हो सकल से साहित्य प्रेमी बनि गइल, तबे नूं एह क्षेत्र के श्रोता कवि सम्मेलन में रात-रात भर बइठले रह जालें । अपने आचार्य महेन्द्र शास्त्री का लीक पर चलि के क्षेत्र में हरदम साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजन करत रहत रहनीं । एह से अपने के प्रतिष्ठो बढ़ते रहे ।

एकरा अलावे अपने के समाज-सेवा बड़ा महत्वपूर्ण रहे। तवे नू साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थन के जनम देत रहनीं। एह संस्थन में बौद्धिक विकास मण्डल, भोरे आ सांस्कृतिक विचार मंच कटेया के नाँव लिहल जा सकेला। जिला स्तरीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन में अपने के देन महत्वपूर्ण बाटे। बौद्धिक विकास मंडल भोरे के अपने दू हजार रुपया के दान दिहनीं त मण्डल के कार्य समिति ओह रुपया के बैंक में फिक्स डिपोजिट क देहलस आ ओकरा व्याज से 'प्रदीप-पुरस्कार' के योजना बनवलसि। जवना का तहत दूगो छात्रन के प्रथम, द्वितीय-पुरस्कार, कला आ साहित्य प्रतियोगिता कराके सालेसाल दिआए लागल।

प्रदीपजी राष्ट्रीय भावना से भरल व्यक्ति रहनीं। चीनी आक्रमण का दौरान अपने के लिखल सैंकड़न गो हिन्दी भोजपुरी कविता-गीत गाँव-गाँव में प्रचारित हो गइल। अइसन कवितन के संग्रह 'रणभेरी' प्रकाशित भइल। एह 'रणभेरी' पर तत्कालीन राष्ट्रपति के आशीर्वादो मिलल रहे।

वर्त्तमान कुण्ठाग्रस्त समाज में कुछ खासे लोग के पौ बारह बाटे। ढेर लोग त शोषित तिरस्कृत जीवन जीए खातिर बाध्य हो रहल बाटे। जे जेतने ईमानदार आ आत्मगौरवी बाटे ओकरा ओतने दुख झेले के परता। अइसन समाज के चित्र प्रदीपजी का एगो कविता में उभरल बाटे। देखीं ना—

सेवा-त्याग-तपस्या सपना,
अब त खाली अपना-अपना
बाटे सिर्फ बाज के बाजी,
फीका-मुल्ला, पण्डित, काजी।

सामयिक प्रसंग का सन्दर्भ में प्रदीपजी बड़ा मुखर हो जात रहनीं। 'रक्षा-बन्धन' हिन्दू के एगो महत्त्वपूर्ण पर्व हवे। एह पर्व से संवद्ध हिन्दी में एगो बानगी देखीं—

वेद मंत्र सम्पृक्त सूत्र सचमुच है रक्षा बन्धन।
रक्षा सूत्र यही धारण कर इन्द्र लिए अभिनन्दन ।।
श्रावण-पूनम रक्षा-बन्धन-उत्सव की छवि न्यारी।
भाई की दाहिनी कलाई शोभित होती प्यारी ।।
बहन प्रमुदिता बन्धु हाथ में बाँधा करती राखी।
रक्षण के हित विनय सुनाती वेद, इन्द्र दे साखी ।।

अइसन फुटकर ढेर कविता सारण सन्देश में प्रकाशित बा। ऊ दिन कब आई जब प्रदीपजी के समूचा रचना एक जगह संगृहीत होई। प्रदीपजी के रचनन में

'ठहाका' 'बालगीत माला', मानस अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता आदि किताब प्रकाशित बाड़ी सँ। एह किताबन में क्रमानुसार रचना संगृहीत बाड़ी सँ।

प्रदीपजी बिहार सरकार का राजभाषा विभाग से १९७९ ई० में वरिष्ठ हिन्दी सेवी का रूप में सम्मानित कइल गइनीं।

राजकीय संस्था भोजपुरी अकादमी पटना का ओर से १९८२ ई० में ताम्रपत्र आ एक हजार रुपया के नगद पुरस्कार भोजपुरी सेवा खातिर मिलल। सिंहभूमि जिला भोजपुरी समाज जमशेदपुर, सीवान गोपालगंज जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भोजपुरी भारती ढोढ़स्थान (सारन) का ओर से प्रदीपजी सम्मानित हो चुकल रहनी हँ।

कवनो व्यक्ति के पहचान ओकरा व्यक्तित्व से होला। एह कसौटी पर उहाँ का खरा उतरत रहनीं हँ। जीवन भर सादा जीवन उच्च विचार के भाव मन में जगवनीं, कर्म से एही भाव के पोसनीं। मधुर वाणी, अतिथि सत्कार, सबसे मिलल जुलल आ राहो चलत आदमी के नीमन बात बतावल उहाँ के रोजनामचा रहे। लिखल पढ़ल आदमी यदि कवनो बाउर बात चाहे गलत वाक्य बोल दे त उहाँ का बौखला जात रहनीं। एतने ना, अपना विवेक से कुछ पुरान परम्परा के अपना जीवन से हटा देले रहनीं। खास कके अइसन परम्परा के जवना से मानवता का धक्का लागत रहे। एह से ई कहल जा सकता जे प्रदीप जी लकीर के फकीर ना रहनीं।

प्रदीप जी खातिर केहू दुश्मन न रहे। तवे नूँ कवि सम्मेलन खतम कके अगर सायकिल से एको-दू बजे रात के चल के घरे पहुँच सकत रहनीं त ओह निसबत रातो में चल देत रहनीं। एतना इहाँ में आत्मविश्वास रहे। इहाँ में मानवता भरल एगो अउरी विशेषता रहे—अगर केहू जरूरतमन्द आदमी कीहाँ अतिथि आ जाय त अपना घर से उचित सामान लेके, छिपा के ओकरा घरे दे आवत रहनी। इहाँ का हरदम कहतो रहीं—"वैष्णव जन तो नेणे कहिए, पीर पराई जाणे रे।" अउरियो कुल कई गो विशेषता इहाँ में रहे—घर दुआर जबे कवनो कारन से गन्दा हो जाय त खुरपी, कुदारी चाहे खरहरा से तुरन्त साफ क देत रहनीं। दुआर पर का पशुअन के खूब मन से सेवा कके ओह सबका पीठ पर हाथ फेरत रहत रहनीं। लावारिस कुकुरन के हरदम खिआवत रहत रहनीं केहू जो अइसन कुकुर के मारे दउरे त इहाँ का मना क देंत रहनीं। एह से ई बुझाता जे उहाँ खातिर सब प्रानी एके समान रहे। एक ही तरह से सब प्रानी एके समान रहे। एक ही तरह से सब प्राणी से दयालुता भरल व्यवहार करत रहत रहनीं।

प्रदीपजी सादा धोती, कुर्त्ता आ एगो चादर देह पर राखत रहनीं। कबो केहू लाचार आदमी के देखीं त चादर उतार के दे देत रहनीं। ई सब त्याग कवनो स्वार्थ का बस ना होत रहे। त्याग उहाँ का स्वभाव में आ गइल रहे।

प्रदीपजी गरीब छात्रन से ट्यूशन फीस त लेते ना रहनीं बल्कि प्रतिभाशाली गरीब छात्रन के धनी मानी मित्र लोग से सहायता करा देत रहनीं। एह तरह से प्रदीपजी विद्यादानी का रूप में विख्यात रहनीं।

अइसन प्रदीपजी १९७९ ई० से मरे का दिन ३० नवम्बर १९८८ ई० तक साप्ताहिक 'सारण सन्देश' के सेवा कइनीं। प्रदीपजी का आवे का पहिले 'सारण सन्देश' भाषा आदि का दृष्टि से बड़ा हीन लागत रहे बाकी प्रदीपजी का आगमन से एकरा कलेवर में निखार आ गइल। एह साप्ताहिक पत्र के नौ बरिस तक जमि के सेवा करे के श्रेय अकेले पाठक जी जइसन उदारमना व्यक्ति के दिहल जा सकता। पाठकजी के कर्मठता, उदारता हमनी सभ केहू के अनन्त काल तक प्रेरणा देत रही।

विशिष्ट विद्वान आ भोजपुरी प्रेमी

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, पालि, बंगला, उर्दू, अंग्रेजी, रूसी आ फ्रांसिसी भाषा के मर्मज्ञ विद्वान, लेखक आ आचोलक, बिहार आ पटना विश्वविद्यालय में काफी अरसा ले विभागाध्यक्ष, दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय आ पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, अन्तर विश्वविद्यालय समिति के पूर्व अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुवाद आयोग द्वारा नियुक्त हिन्दी के पहिलका नेशनल फेलो, बिहार हिंदी ग्रन्थ एकादमी के पूर्व अध्यक्ष आचार्य श्री देवेन्द्रनाथ शर्मा के जनम गोपालगंज जिला के कृतपुरा गाँव में ७ जुलाई १९१८ ई० के एगो धर्मनिष्ठ ब्राह्मण परिवार में भइल। अपने के पिता पं० शिवशरण शर्मा जी भारतीय संस्कृति आ सभ्यता के अनन्य उपासक आ समर्थक रहीं। अइसन कुल में जनमेवाला आ अइसन पवित्र वातावरण में पलेवाला एह बालक के मुखमंडल पर बचपन से एगो अइसन तेज पावल गइल जेसे ई तबे मालूम होत रहे कि ई आगे चलके माँ भारती का साथे अपना कुल-खानदानो के नाम उजागर करी।

अपना पिताजी के देखरेख में प्रारम्भिक शिक्षा पवला के बाद शर्माजी मोतिहारी के गौरीशंकर मिडिल इंगलिश स्कूल से मिडिल, जिला स्कूल मोतिहारी से मैट्रिक आ उच्च शिक्षा पटना कालेज में पवनीं, जहवाँ से सन् १९४१ ई० में संस्कृत में एम० ए० कइनीं। बीच-बीच में संस्कृत के परम्परागत परीक्षो स्वतन्त्र रूप से देत गइनीं। ५ अगस्त १९४३ ई० में इहाँ के नियुक्ति पटना कालेज के संस्कृत विभाग में प्राध्यापक के पद पर भइल। तबो इहाँ के जिज्ञासा समाप्त ना भइल आ प्राध्यापक के कार्यभार ढोवतो इहाँ का १९४४ ई० में हिन्दी में एम० ए० कइनीं आ ओही साल संस्कृत के आचार्यो परीक्षा पास कर लेहनीं। एह तरे इहाँ के ग्यान के क्षेत्र विस्तृत होत गइल।

शर्माजी 'विद्या ददाति विनयम्' के साक्षात् नमूना रहनीं। आचार-व्यवहार के विनम्रता, कार्य-सम्पादन के कुशलता आ बोलचाल के मधुरता के मणि-कांचन संयोग से बनल अपने के व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक आ मनोरम रहे। अपनापन के जइसन स्नेहसिक्त भाव इहाँ में पावल जाला ओइसन इहाँ के स्तर के बिरले केहू विद्वान में पावल जाला। एक से एक समर्थ विद्वान मिल सकेलें, एक से एक कर्त्तव्यपरायण आ सिद्धान्तनिष्ठ व्यक्तियो पावल जा सकेलें आ व्यवहार-कुशल आदमी के त आज भर-

भारे बा, बाकिर अइसन आदमी मिलल असम्भव त ना बाकिर कठिन जरूर बा जे धुरन्धर विद्वान, कर्त्तव्य-परायण, सिद्धांतनिष्ठ आ व्यवहारकुशल के साथे-साथे सच्चा मानव भी होखे। शर्माजी के इहे विलक्षण गुण इनका व्यक्तित्व में आउर निखार ला देले रहे।

शर्माजी यूरोप, एशिया आ अफ्रीका के कई देशन के यात्रा कर चुकल रहनीं। सन् १९५२ ई० में दू साल खातिर इंग्लैंड गइनीं, जहाँ रहके भाषा विज्ञान आ रूसी भाषा के गम्भीर अध्ययन कइनीं। द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का अवसर पर हिन्दी के प्रतिनिधि बन के मारिशस गइनीं। १९७८ में पूर्वी जर्मनी आ रूस के यात्रा कइनीं आ एह क्रम में उहाँ के भाषा साहित्य के मनन-चिंतन के साथे-साथ ओह देशन के विशिष्ट विद्वानन से मिलके ओह भाषा के जानकारी त पइबे कइनीं आ हिन्दी आ संस्कृत साहित्य के पांडित्यपूर्ण व्याख्या कके ओह लोगन के मन मोह लेहनीं। लेनिनग्राद (सोवियत संघ) इहाँ के हिन्दी आ भारतीय साहित्य के प्राध्यापक के रूप में आमन्त्रित कइले रहे। एही से पता चलता कि भाषा-विज्ञान आ काव्यशास्त्र के केतना ख्याति-प्राप्त विद्वान रहनीं।

एतना कार्यव्यस्त-जीवन भइलो पर विभिन्न साहित्यिक आ राजकीय संस्था सबके शर्माजी योगदान देत रहनीं। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष, भारतीय हिन्दी परिषद् के १९७१ के ग्वालियर अधिवेशन के आ एकरे १९७४ के आनन्द (गुजरात) अधिवेशनो के अध्यक्ष रहनीं। भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा गठित आलोचना एवं भाषा-विज्ञान के विशेषज्ञ-समिति के, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान आ प्रशिक्षण परिषद्, भारत सरकार के सूचना आ प्रसारण मन्त्रालय के, ऊर्जा मन्त्रालय के हिंदी समिति, आ कृषि मन्त्रालय द्वारा नियुक्त कृषि विश्वविद्यालयन का समीक्षा समिति के, बिहार सरकार के विश्वविद्यालय सुधार समिति आ ओरिएंटेशन एजुकेशन कमिटी के सदस्य रहनीं। अपने का मंगला प्रसाद पुरस्कार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुरस्कार आ भारतीय ज्ञान-पीठ पुरस्कार आदि के निर्णायक मण्डल के सदस्य रहनीं। इहाँ का केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वंगीय हिन्दी परिषद, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, बिहार संस्कृत संजीवन समाज, बिहार संगीत नाट्य अकादमी, संस्कृत नाट्यं परिषद्, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन (इलाहाबाद), हिन्दुस्तानी एकादमी, (इलाहाबाद); सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सीवान जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गोपालगंज जिला सम्मेलन आदि संस्था सबसे विभिन्न रूप में सम्बन्धित रहनीं।

शर्माजी करीब दू दर्जन पुस्तकन के रचना आ सम्पादन कर चुकल बानीं। भाषा-विज्ञान पर लिखल अपने के भाषा-विज्ञान की भूमिका, हिन्दी-भाषा का विकास,

हिन्दी भाषा और नागरी लिपि, राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान काफी महत्वपूर्ण ग्रन्थ मानल जाला। समालोचना पर लिखल भामह विरचित काव्यालंकार के भाष्य सहित हिन्दी अनुवाद, कुंतक विरचित वक्रोक्ति जीवितम् के भाष्यसहित अंग्रेजी अनुवाद आ अलंकार मुक्तावली साहित्य के अनमोल निधि बाड़ी सन। समालोचना का क्षेत्र में अपने के साहित्य-समीक्षा, ब्रजभाषा की विभूतियाँ आ हिन्दी कवियों का मूल्यांकन गम्भीर मनन, चिन्तन आ अध्ययन के नमूना बाड़े सन। एही तरे पारिजात मंजरी, बिखरी स्मृतियाँ आ शाहजहाँ के आँसू एकांकी के आउर खट्टा मीठा आ आइना बोल उठा ललित निबन्ध के अपूर्व संग्रह पावल जाला। अपने का आन्तोन चेखव का पन्द्रह गो रूसी प्रतिनिधि कहानियन के 'लॉटरी का टिकट' नाम से हिन्दी में अनुवाद कइले बानीं। एकरा अलावे 'एसेण्ट ऑफ एवरेस्ट' अंग्रेजी पुस्तक के एवरेस्ट का आरोहण नांव से आ साइकोअनेलिसिस एण्ड लिटररी क्रिटिज्म नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ के 'मनोविश्लेषण और साहित्यालोचन' नाम से हिन्दी में सफल अनुवाद कके साहित्य के क्षेत्र में अपूर्व सेवा कइले बानीं।

एकरा अलावे अपने के सम्पादित ग्रन्थन में 'साहित्य निबन्धावली', 'छायावाद और प्रगतिवाद', 'रिचर्डस के आलोचना सिद्धान्त', 'उपन्यास का शिल्प आ शैली' बहुत ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ बाड़े सन।

अइसन गौरवशाली लेखक, चिंतक आ आलोचक के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य, सम्मेलन अपना पांचवा सत्र के अध्यक्ष चुनके उहाँ के गौरव देहलस।

शर्माजी पहिले त राष्ट्रभाषा हिन्दी के बड़ा मनोयोग से साहित्य सृजन कइनीं। एगो समय इहो रहे जब राष्ट्रीय राजनीति के ध्यान में राखत हिन्दी-भाषियन के संख्या में गिरावट रोके खातिर उहाँ का सार्वजनिक वक्तव्य देके भोजपुरी भाषियन से जनगणना में मातृभाषा हिन्दी लिखावे के अपीलो कइले रहीं। बाकिर १९७५ का लगभग मातृभाषा भोजपुरी के बढ़त गोड़ देखि के भोजपुरी के विकास का ओर ध्यान दिहनीं। तबे नू अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ५वाँ अधिवेशन (१९८०) के अध्यक्षीय भाषण में कहले रहनीं—'भोजपुरी के दिन-दिन विकास-प्रसार हो रहल बा, उत्तम से उत्तम कविता, कहानी, उपन्यास निबन्ध रचा रहल बा, कई गो पत्रिका निकल रहल बा। ई बड़ा खुशी आ सन्तोष के बात बा। भोजपुरी साहित्य के प्रगति जतना तेजी आ बढ़िया से हो रहल बा ऊ भोजपुरी भाषी लोग खातिर गर्व आ गौरव के चीज बा। हमरा सामने बहुत रचना आइल जे कवनो भाषा के साहित्य से टक्कर ले सकता। प्रगति का एह गति के कायम रखे के जरूरत बा" भोजपुरी अकादमी का अध्यक्ष का रूप में अपने भोजपुरी के सेवा कइनीं। ओह घरी भोजपुरी के एकरूपता का ओर अपने के ध्यान गइल। एकरा खातिर कबो

भोजपुरी व्याकरण सम्बन्धी गोष्ठी, कबो भोजपुरी वर्तनी सम्बन्धी गोष्ठी करत रहीं आ कबो-कबो हमरो के ओह गोष्ठी में बोलावत रहनीं। प्राचार्य विश्वनाथ सिंह जी ओही वर्तनी गोष्ठी में आपन विचार बनवनीं वर्तनी सम्बन्धी लेख लिखेके। आगे चलिके 'मानक भोजपुरी वर्तनी' पुस्तक श्री सिंहजी लिखनीं। शर्माजी के भोजपुरी का सम्बन्ध में बड़ा व्यापक विचार बनि गइल रहे। उहाँ के एगो लिखित वक्तव्य देखीं—'भोजपुरी सही माने में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा ह। भारत का बाहर फीजी, मोरिशस, ट्रीनिडाड, गायना, सूरिनाम आदि देशन में भोजपुरी भाषी लोग लाखन का संख्या में बा। अइसन भाषा के मान्यता अपने देश में ना होय ई चिंता के बात बा।'

आचार्य शर्माजी के निधन १९९१ ई० का पहिलके महीना में हो गइल। एह निधन से राष्ट्रभाषा के त अपूरणीय क्षति भइबे कइल, भोजपुरियो के लमहर क्षति भइल काहें कि ओ घरी बुझात रहे जे मातृभाषा के समर्थक शर्माजी अब भोजपुरियो में आपन कलम चलाएव।

सरस्वती के लाड़ले

डॉ. रामनाथ पाठक 'प्रणयीजी'

बात १९८५ के ह। भोजपुरी कवि गुरु पं० धरीक्षण मिसिर के दर्शन करे हम गइल रहनीं। ओह घड़ी मिसिरजी ८१ बरीस के हो गइल रहनीं। पिछला चार बरीस से एगो भोजपुरी छन्द-अलंकार सम्वन्धी किताब उहाँ का लिखत रहनीं। ओह किताब के विशेषता ई बा कि कवनो छन्द चाहे अलंकार के लक्षण आ उदाहरण एके पद्य में बा। पुस्तक के वहुत कम अंश वाकी रहे। पुस्तक तइयार भइला का बाद केहू विद्वान भोजपुरी कवि से संशोधन करावे के बात हमरा से मिसिर जी कहनीं। हम सुझाव रूप में डॉ० रामनाथ पाठक प्रणयीजी के नाम लिहनीं। मिसिरजी बहुत खुश भइनी आ प्रणयीजी के पता भेजे के भार हमरे ऊपर दिहनीं। कुछ दिन बाद प्रणयीजी के पता-ठिकाना हम भेज देहनी। मिसिर जी अभी पत्राचार शुरुये कइले रहनीं तबले प्रणयीजी स्वर्गवासी हो गइनीं। एकरा बाद मिसिरजी के जवन चिट्ठी आइल तवना के आसय इहे रहे कि भोजपुरी-जगत में अइसन केहू दोसर विद्वान नइखे लउकत जे पुस्तक के संशोधन कर सके। इहाँ के ई कथन हमरा खातिर प्रेरनादायक बनल आ हम प्रणयीजी के बारे में विस्तार से जाने के कोशिश कइनी आ ओही के प्रतिफल ई लेख बा।

साहित्य-संसार में अइसन कम साधक पावल जालें जे सहज रूप से संस्कृत हिन्दी आउर भोजपुरी में उत्कृष्ट रचना कके आपन विशिष्ट स्थान बना लेले बा आ अपना साहित्यिक-कृति से साहित्य-जगत के चकित-विस्मित कर रहल बा। अइसने कुछ साधकन में स्व० प्रणयीजी के स्थान बा।

प्रणयीजी के जन्म भोजपुर जिला के धनगांव में सन् १९१७ में भइल। पं० इन्द्रजीत पाठक अपने के पिता के नाम आ माता के श्रीमती देवनन्दनी देवी रहे। दू भाई आ एगो बहिन श्रीमती रमता देवी में प्रणयीजी सबसे छोट रहीं। इहाँ के अग्रज पं० यज्ञनारायण पाठक संस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान रहनीं। इहें के देख-रेख में प्रणयीजी के शिक्षा-दीक्षा भइल आ इहें के चरन में वइठ इहाँका आपन चहुँमुखी विकास कइनीं।

कहल जाला कि प्रणयीजी जब बारहे बरीस के रहीं तबे इहाँ का काव्य रचना शुरू कर देले रहनी आ वाराणसी के कवि गोष्ठियन में भाग लेवे लगनी। इहाँ के रचना प्रकृति-चित्रण प्रधान होखे जेकर काफी सरहना होत रहे। पशु-पक्षियन पर

इहाँ का काफी ममता रहे। कहल जाला कि बचपन से इहाँका तोता, मैना, नेवला, बन्दर, कुत्ता, बिल्ली आ चूहा आदि पोस के ओकनी का साथे अठखेलिया करत फिरीं। कुत्ता पर लिखल इहाँ के कविता काफी रोचक बा :—

गोर देह माथा चितकाबर,
गरदन पर लटकल बा झाबर।
भों-भों दिनभर भूंक रहल बा,
कबहूँ भीतर, कबहूँ बाहर॥
अपने घर में दिखा रहल बा, जे बा आपन बूता।
डुला रहल बा पोंछ बइठके दरवाजा पर कुत्ता॥

वाराणसी के साहित्यिक वातावरण प्रणयीजी के काव्य रचना में काफी मददगार भइल। इहाँ कवि-गोष्ठी आ साहित्य-गोष्ठी के दौर आये दिन चलते रहे। एह गोष्ठियन में अपने का हमेशा भाग लीं आ अपना सरस कविता आ गम्भीर भाषण शैली से साहित्य प्रेमी लोगन के आनन्द विभोर करत रहनीं। धीरे-धीरे अपने के प्रसिद्धि बढ़े लागल आ करीब २०-२१ बरीस के उमीरे में इहाँ से निकले वाला प्रमुख समाचार-पत्र 'आज' के इहाँ के लोक-प्रिय कवि आ लेखक बन गइनी। एकरा बाद त बहुतेरे त्रैमासिक आ वार्षिक पत्र-पत्रिकन में इहाँ के लेख आ कविता छपे लागल।

साहित्य-सेवा के साथ-साथ प्रणयीजी अपना अध्ययन में कवनो कोताही ना कइनीं। भले ही इहाँ का भयंकर आर्थिक संकट के दौर से गुजरे के पड़ल आ कुछ दिनन तक जीवन-निर्वाह खातिर छात्रन के पढ़ावे के पड़ल तबो ओहमें कवनो व्यवधान ना पड़ल। अभी साले भर ई काम कर पवले रहनीं कि एहमें अधिक समय बर्बाद होत देख एकरा के छोड़ देहनीं आ फेनू अध्ययन आ साहित्य-सेवा में पूरा जोश-खरोश से जुट गइनीं। कहल जाला कि कबो-कबो फांका करत आ कबो-कबो देवी के प्रसाद पावत इहाँ का आपन जीवन निर्वाह करत गइनीं। एही तरे दुख के पहाड़ ढोअत-लांघत व्याकरणचार्य बन गइनीं।

व्याकरणाचार्य भइला का बाद प्रणयीजी कवनो नोकरी के फिराक में लग गइनीं। एक जगे कुछ उमीदो लागल तब ले एगो दोसर घटना घट गइल। वाराणसी में घूमत-धामत एक दिन कवनो मन्दिर के सामने पचासन कुष्ट रोगिन के देखके इहाँ में दया उमड़ आइल आ इहाँ का सोचे लगनीं कि एह असहायन के केहू देख-भाल करेवाला नइखे बुझात। यहाँ के जनता रोजे गंगा-स्नान करत बा, मन्दिर में जा-जा पूजो-अर्चना करत बा तबो केहू के एह दीनन पर दया नइखे आवत। चिकित्सक लोग धन-जश कमा के नामी-गरामी बन गइल तबो एकनी पर ओह लोगन

के नजर ना पड़ल। प्रणयीजी जइसन अगाध विद्वान मा स्वाभिमानी रहनीं ओइसहीं दया के सागरो रहनीं। रास्ता भर सोचत-विचारत जब अपना डेरा पर अइनीं त निश्चय कर लेहनीं कि अब हमरा आयुर्वेद के गहन अध्ययन कके एह रोग के निदान खोजे के बा।

ई विचार आवते प्रणयीजी आयुर्वेद के अध्ययन शुरू कइनीं आ आयुर्वेदाचार्य बन गइनीं। इहाँ के ई विचार इहाँ के भावी जीवन खातिर बड़ा उपयोगी भइल। एही जा इहाँ के जीवन में नया मोड़ आइल। डुमराँव में 'व्याधि-निवारणार्थ औषधालय' नाम से एक संस्था कायम करके इहाँ का दीन-हीन रोगियन के चिकित्सा करे लगनीं। कुछे माह में इहाँ के यश फइल गइल। डुमराँव स्टेट इहाँ के रसायन शास्त्र के सुपरिडेन्टेन्ट आ वैद्य दूनो पद पर नियुक्त कर देहलस। एही अवधि में इहाँ का 'चरक की चिकित्सा प्रणाली' 'चिकित्सक और चिकित्सा' आउर 'संक्रामक रोगों से कैसे बचें' नामक तीन गो महत्वपूर्ण रचना कके चिकित्सक समाज में आपन महत्त्वपूर्ण स्थान बना लेहनीं आ एही जा से सरकारी सेवा के श्रीगणेश भइल।

सन् १९५२ में सरकारी सेवा में प्रवेश मानिकपुर विद्यालय के प्रधानध्यापक पद पर नियुक्ति से भइल। एकरा बाद १९५६ ई० से सुरहथा के उच्च शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के अनुदेशक के पद पर नियुक्ति भइल। एकरा चार बरीस बाद 'अंचल नायक' के पद पर वेलबर में पदासीन भइनीं। एकरा बाद इहाँ के क्षत्रिय उच्च विद्यालय में हेड पंडित के पद पर काम कइनीं आ फेनू १९६६ ई० में लोक शिक्षा निदेशक इहाँ के बहाली प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी के पद पर क देहलें। एह पद से अवकाश ग्रहण कइला का बाद हरदास जैन कालेज, आरा में इहाँ के संस्कृत-प्राकृत के प्राध्यापक पद पर नियुक्ति हो गइल आ इहें से सन् १९८३ में इहाँ के शैक्षिक सेवा समाप्त भइल।

शैक्षिक सेवा के दौरानो प्रणयीजी चुपचाप बेकार ना बइठनीं। साहित्यक गति-विधि साथे अध्ययन के क्रम जारी रहल। ई सुनके बहुत लोग दाँते अंगुली काट ली कि इहाँका एही अवधि में बिहार विश्वविद्यालय आ मगध विश्वविद्यालय से स्वतंत्र रूप से प्रवेशिका, आई० ए०, बी० ए० आ दू विषय में एम० ए० कइनी। जब एहूसे इहाँका शान्ति ना मिलल त 'संस्कृत नाटकों में जैन नाटककारों का योगदान' विषय पर गम्भीर अध्ययन कके आपन शोधग्रन्थ प्रस्तुत कइनी आ १९७० ई० में पी-एच० डी० के उपाधि से विभूषित भइनी।

प्रणयीजी चाहे जहाँ-कहीं रहनी उहाँ में काव्य के निर्मल स्रोत सुखल ना। उहाँ के काव्य चाहे ऊ कवनो भाषा के होखे सब में एगो नया स्वर आ लिखे के एगो

नया अन्दाज पावल जाला। इहाँ के कविता अइसन-अइसन विषय पर बा जेने अधिकांश कवि लोगन के ध्यान ना जाला। अपना वेजोर आ लोकप्रिय कृति 'सितार' में करुण-रस में सामाजिक चित्रण क के कमाल कर दले बानी। उदाहरण के तौर पर 'चमरा के बिटिया' कविते पर गौर करीं—

"चमरा के बिटिया चरावेली बकरिया रे—
भोर ही बधरिया के ओर।
फटही लुगरिया, फटही कुरूतिया रे—
हथवा में लहठी कठोर॥
+ + +
चउदह के उपरे से बड़ुए उमिरिया रे—
पतरे कमरिया के फान।
हाय! रे गरीबिया जवनिया बा उपजल
आ तबहुँ ना भइलस जवान॥"

थइसे त प्रणयीजी संस्कृतो में वहुत रचना कइले बानीं तवो इहाँ के 'भारत-सुषमा' कविता देवे से हम अपना के रोक नइखी सकत—

"जयति भारतवर्ष देशः
अमर-वीर-यशस्सुमानाम्, वश्यकर कल-कुंकुमानाम्,
सुरभिभिर्भूखण्ड मखिलं मोहयति मदमुग्ध वेषः।
जयति भारतवर्ष देशः

यस्य पदकमलं निकामम्, नव-नृपति-नयनाभिरामेम,
ऊर्मिभिः स्नपयति सुतालैर्भक्ति नम्रो निम्नणेशः॥
जयति भारतवर्ष देशः

आगगन नायस्त-कायः, हेममण्डित-हिमनिकायः।
उत्तरस्यां यस्य खेलति मुकुटमिव पृथुपर्वतेशः॥
जयति भारतवर्ष देशः

सुर-सुलभ-सुषमा-निकेतः, यत्र हरति नकस्य चेतः।
पावनो गाङ्ग-प्रवाहः स्वर्विहस्य विहित-निवेशः॥
जयति भारतवर्ष देशः

यत्र बुद्ध-विरक्ति-गीतम्, गीयते प्रति गृहमतीतम्।
यत्र कृष्णार्जुन-कथा गीता जयति कर्मोपदेशः॥
जयति भारतवर्ष देशः

यत्र रे, राणा प्रताप:, विहित-रिपुकुल तीव्र ताप: ।
विजयि-शिवराज-प्रबल-पदसैन्य-दलबल-चलितशेष: ॥
जयति भारतवर्ष देश:

पद्मिनीववभूत भूति:, यत्र राजकुल-प्रसूति: ।
विजयतेस्मविजित्य शत्रून् यत्र रे विक्रमनरेश: ।
जयति भारतवर्ष देश:

यत्र कवि गुरु कालिदास:, यत्र हर्ष-कला-विलास: ।
यत्र भवभूतेर्विभूतेर्भाति करुणालय-विशेष: ॥
जयति भारतवर्ष देश:

यत्र तुलसी सूरदासौ-अभवतां वाणी-विलासौ ।
यत्र मीरा, भारतेन्दु:, भूषण: कविकुल दिनेश: ॥
जयति भारतवर्ष देश:

मदन मोहन-मालवीय:, अजनि जनसेवी यदीच: ।
धर्मभारभृतां धुरीणो विहित-नृपनीतिक-गवेष: ॥
जयति भारतवर्ष देश:

यस्य गान्धी सूत्रधार:, स्वर्गतो दिव्यावतार: ।
पृच्छति 'प्रणयी' कविन्द्रान्नास्त्ययं कस्माद्विशेष: ॥
जयति भारतवर्ष देश: ॥

एगो जमाना रहे जब प्रणयीजी कहतफिरी—"राजनीति की अप्सरा यदि साहित्य के देवता को छू देती है तो वह देवता भ्रष्ट हो जाता है", तबो अप्परा के मोह जाल में इहाँ का फसिये जायके पड़ल । १९४२ के तूफानी जमाना रहे । गोरा लोगन के अत्याचार अपना चरम सीमा पर रहे । प्रणयीजी के स्वाभिमानी हृदय इहाँ के ठेलके स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेबे के मजबूर कर देहलस । इहाँ के गिरफ्तारी भइल आ जेल में डाल दिहल गइनी । वर्षों जेल में रहला का बाद जब इहाँ के रिहाई भइल त अपना गाँव पर अइनी । इहों इहाँके मन के शान्ति ना मिलल। अपना पत्नी श्रीमती राधिका देवी से कुछ पइसा लेके वाराणसी चल दिहनी । इहाँ संयोग से राष्ट्रपिता गाँधीजी के आगमन भइल । प्रणयीजी इहाँ के दर्शन करत आपन राष्ट्रीय गीतन के संग्रह उहाँ के भेंट करत उहाँ के आदेश पर कुछ गीतो सुनवनी आ प्रशंसा के पात्र बननी ।

एकरा बाद प्रणयीजी चलचित्र जगत में प्रवेश कर गइनी । 'पिया निरमोहिया', 'बैरी सावन' आदि चित्रन में आपन मधुर गीत दे के ओकनी के जानदार बना देहनी । 'गंगा तोहरी लहरिया' चलचित्र के कथा आ गीतन से अलंकृत कइले बानी जे निर्माणाधीन बा । इहाँ के बहुत सा गीत 'फिलम एशोसिएसन राइटर्स' बम्बई में

इहाँ का नाम से रजिस्टर्ड बा जवना के देखभाल इहाँ के दूनो सुपुत्र श्री विजयचन्द्र पाठक आ श्री प्रेमचन्द्र पाठक कर रहल बा लोग।

सन् १९८७ के अगस्त महीना में प्रणयीजी के दिल के दौरा पड़ल। पटना के इन्दिरा हृदय रोग संस्थान में इहाँ के १४ दिन तक इलाज चलल। इहाँ से अपना साला श्री शिवकुमार मिश्र के क्वार्टर में लावल गइनी। एही हालत में १६ अगस्त के श्री कृष्ण जन्माष्टमी के रात में कृष्ण भगवान के प्रतिमा के दर्शन कइनी आ डेरा प आके चार पंक्ती के रचना कइनी—

'उर मानस में भर बाबा को—
निकला पथ पर कांवरिया।
लेकर गंगा का पावन जल,
चला देवघर कांवरिया ॥'

इहे इहाँ के अन्तिम काव्य रचना रहे आ एही रात के अपना परिवार के शोक-विह्वल क के १० बज के ४० मिनट पर अपने का स्वर्गवासी हो गइनी।

प्रणयीजी दू दर्जन से ऊपर छोट-बड़ पुस्तकन के रचना संस्कृत, हिन्दी आ भोजपुरी में कइले बानी जवना में २७ गो प्रकाशित आ तीन अप्रकाशित बा।

अन्त में प्रणयीजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करत हम भगवान से प्रार्थना करत बानी कि साहित्य के एह अनमोल साधक के नन्दन वन के कुञ्ज कुटीर में स्थान देवे के कृपा करीं।

भोजपुरी के उन्नायक गायक कवि

श्री मोती बी. ए.

१९५५ में जब डी० ए० वी० उच्च विद्यालय सीवान में अइनीं तब १९५६ में तुलसी जयन्ती के चर्चा होखे लागल। हम तत्कालीन प्रधानाध्यापक सम्माननीय श्री बाबूराम पाठकजी से तुलसी जयन्ती का अवसर पर कवि सम्मेलन करावे के बात कहनीं। ओह साल छपरा से कविवर कन्हैयाजी के बोलावल गइल आ उनही से कवि सम्मेलन के शुरूआत भइल। १९५७ से लेके लगभग दस-बारह वरिस तक हर साल मोती बी० ए० के जरूर बोलावल जात रहे। एकरा अलावे कवो आचार्य जानकीबल्लभ शास्त्री के आ कवो श्यामनारायण पाण्डेय के। कवो बाल्मीकि प्रसाद विकट के आ कवो श्यामनन्दन किशोर के। कहे के मतलब जे अउरी केहू कवि बदलत रहे बाकी मोतीजी का स्वरलहरी के सीवान का लोग पर अइसन प्रभाव परल रहे जे दू महीना पहिलहीं से लोग पूछे लागे—मोतीजी आइब नू। लगभग १९७० का बाद जब मोतीजी फिल्मी दुनिया में फँसि गइनी त इहें का स्वर में कविता गावेवाला कवि अनुरागीजी आवे लगनीं। साथे-साथे अउरियो कवि लोग आवत रहत रहे।

एही क्रम में हमरा से आ भाई रामाधार प्रसाद 'अंशुमाली' से मोतीजी का साथे एतना अपनइती हो गइल जे अब त उहाँ का सचहूँ बड़ भाई तरे बुझाइले।

श्री मोती बी० ए० के पूरा नाँव मोतीलाल उपाध्याय ह बाकी ऊ मोती बी० ए० के नाँव से विख्यात बाड़ें। इन्हकर जनम १ अगस्त १९१९ के देवरिया जिला का बरेजा गाँव में पिता पं० राधाकृष्ण उपाध्याय का घरे माताजी श्रीमती कौसिल्या देवी का गर्भ से भइल। उनकर शैक्षिक योग्यता एम० ए०, बी० टी० साहित्यरत्न ह बाकी बी० ए० के उपाधि इनके नाँव के साथ विशेष रूप से जुड़ि गइलि बा।

इन्हकरा काव्य में व्यापक जीवन के प्रति प्रेम आ युग-बोध, दूनू प्रगट भइल बा। एगो उदाहरण देखीं कवनी तरह से इनका प्रेम के व्यापक साधारणीकरण भइल बा—

तृप्ति न दो, दो अमिट पिपासा
सदा बिलखने को दो भाषा
जीवित रहने की अभिलाषा

और दिया संकेत कि जग पर—
तन-मन-धन दूं वार
यह उसका आदेश करूँ मैं
तुमको जग को प्यार !

प्रेम के क्षेत्र में मोतीजी के सौन्दर्य-बोध परिष्कृत बाटे आ विरह के वर्णन बड़ा ार्मिक बा। कवि के दृष्टि आध्यात्मिक ढेर बा। परम चेतना के प्रति उनकर संकेत तना मनोहारी हो गइल बा कि मन ओसे अलग होखल ना चाहेला। एगो उदाहरण प्रसंग में देखे लायक बा—

आइने में जो प्रतिबिम्ब साकार है
कैसे कह दूँ कि—
बाहर निराकार है।
शिव हैं मन में बसे, कहीं बाहर नहीं
गर हैं बाहर—
तो मन है उन्हीं में रमा

मोतीजी के काव्याराधना कवनो स्थल पर हलुक या सस्ता नइखे भइल। ऊ नरन्तर दिव्यता आ पवित्रता के दिशा में अग्रसर होत गइल बा।

दीआ पर भोजपुरी में ऊ लिखतारें—

एगो दीआ जरेला
जवन कहियो ना बुताय
जवन परे ना लखाय
जवन हाटे ना बिकाय
जवन कोन-अतरा सगरे—
अँजोर करेला
एगो दीआ जरेला
एगो दीआ जरेला !

मोतीजी पिछला पचास बरिसन से काव्य साधना में लीन बाँड़ें। इनका गीतिन में ाव्यगत सौन्दर्य के साथ विलक्षण आकर्षण बाटे। एइसन आकर्षण अउर कहीं देखे ना मिलेला। भोजपुरी के एगो दूगो मुक्तक देखीं सभे कवने तरे साधारण प्रतीक उहाँ का जीवन सौन्दर्य उभरले बानी—

प्यार सोना हवे रूप आगी हवे
ए री दूनू के अजबे कहानी हवे
प्यार गलेला जेतना जोह आँखि से
आँसू ना ह, ई सोना के पानी हवे !

एगो त प्रसादजी के 'आँसू' काव्य प्रतिष्ठित बड़ले बा बाकी मोतीजी के ई आँसू ओइमें खोजले कबहूँ ना मिली । प्रसादजी दुर्दिन के आँसू के पीड़ा के घनीभूत अवस्था के द्योतक बनवले बानी । आँसू जवनो-कवनो खास दसा में बरिसेला । मोतीजी के आँसू हरदम चमकेला सोना अइसन । बताईं अइसन आँसू कहाँ मिली, जल्दी !

सत्य एतना निरपेक्ष ह कि सापेक्षता के कवनो स्थिति ओके झुठला ना सकेला । सत्य जवन आत्मसंगत ना होखे त सृष्टि अव्यवस्थित आ अराजक हो उठी । आगी में भा पानी में कवनो हालत में ओके डारि दीहल जाउ, जो साँच रही त साँचे रही । ऊ शूली पर चढ़ा दीहल जाई बाकी झूठ ना होई । एतना गंभीर बात देखी सभे केतना सरल ढंग से मोतीजी अपना एगो मुक्तक में कहत बाड़ें—

तूरि के फेंकि द चाहे मीस मत
तोहरे खातिर करेजा डँहकते रही
चाहे आन्ही बहो, चाहे बिजुली गिरो
फूल ह त बगइचा मँहकते रही ।

भाषा पर मोतीजी के पूरा अधिकार बा । गोरखपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के अवकाशप्राप्त विद्वान रीडर डॉक्टर प्रताप सिंह आ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भाषा पर इनके अधिकार के बात मनले बाड़ें । भोजपुरी, उर्दू, खड़ी बोली हिन्दी एवं अंग्रेजी में गद्य-पद्य लिखला के इनका में समान रूप से प्रतिभा बा ।

सन् १९३९ से १९४४ ले दैनिक अग्रगामी, दैनिक आज, दैनिक आर्यावर्त्त आ दैनिक 'संसार' के सम्पादकीय विभाग में मोतीजी सेवारत रह चुकल बानीं । हिन्दी, भोजपुरी, उर्दू आ अंग्रेजी में प्रकाशित मौलिक आ अनूदित रचना के नाँव देखल जाउ ।

मृगतृष्णा, कवि और कविता, समिधा, कवि-भावना-मानव, अश्वमेध यज्ञ, आँसू डूबे गीत, बादलिका, पायल छम छम बाजे, हरसिंगार के फूल, प्रतिबिम्बिनी, कुछ गीत कुछ कविता, गति के चरण, लाहौर की नहर, तिनका-तिनका शबनम-शबनम (स्मारिका), रश्के गुहर, दर्दे गुहर, राशन की दुकान आ इतिहास का दर्द (निबन्ध संग्रह) ।

सेमर के फूल, मोती के मुक्तक, बन-बन बोलेले कोइलिया, भोजपुरी सॉनेट, तुलसी रसायन आ फुटकर कविता असंगृहीत। अनुवाद—जान ड्रिंक वाटर रचित नाटक—अब्राहम लिंकन आ महाकवि कालिदास रचित मेघदूत के भोजपुरी अनुवाद (छन्द में)।

महाकवि शेक्सपीयर चतुर्दश पदियन (सॉनेट) के पद्यानुवाद जयदेव सिंह सम्पादित हाई स्कूल पोयेट्री के पद्यानुवाद, रबीबेन एजरा (रावर्ट ब्राउनिंग) के गीतमय रूपान्तर, एस० टी० कालरिज के काव्य 'दी हारम ऑफ दी एन्सेंट मैरियर' के पद्यानुवाद, डी० जी० राजेदी कृत 'दी ब्लेसेड डेमोजेल' के हिन्दी अनुवाद पद्य में। भोजपुरी अनुवाद के उल्लेख ऊपर हो चुकल बा। अंग्रेजी में मौलिक रचना—'लव एण्ड ब्यूटी' (काव्य, सॉनेट छन्द में) पद्यमय हिन्दी रूपान्तर के साथ।

आत्मकथ्य धारावाहिक देवरिया के साप्ताहिक पत्र 'जनचक्षु' में डेढ़ बरिस से क्रमवार छपि रहल बा। विभिन्न हिन्दी-भोजपुरी पत्र-पत्रिकन में निबन्ध आ कविता छपेली सँ।

मोती बी० ए० के सम्मान जेतना होखे के चाहीं ओतना ना भइल, ई बाति बराबर कहल जाला बाकी मोतीजी ए बात के स्वीकार ना करेलें। ऊ कहेलें कि यश-कामना आ यश-लोलुपता एके चीजु ह। लोलुपता कामना के भ्रष्ट क देले।

श्रेष्ठ महापुरुषन के, जेकरा में कवनो कमजोरी ना होले, नाम आ यश के प्राप्ति के कामना आखिरी कमजोरी ह। 'मन्दः कवि यशः प्रार्थी' तवनो पर मोतीजी के सम्मान सभे करेला। कई संस्थन से उनके उपाधि पत्र मिलल बाड़ी सँ। उत्तर प्रदेश शासन के साहित्यिक पुरस्कार समिति के ओर से उनके 'समिधा' नामक काव्य-पुस्तक पर १९७३-७४ में पुरस्कृत कइल गइल। आदर्श अध्यापक के रूप में उ० प्र० शासन के शिक्षाविभाग सन् १९७८ में सम्मानित आ पुरस्कृत कइलसि। भोजपुरी के समग्र सेवा करे खातिर उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान के 'राहुल सांकृत्यायन' नामित पुरस्कार से सन् १९८९ में सम्मानित आ पुरस्कृत कइल गइल। मोतीजी चाहें भा ना चाहें, मानें भा ना मानें जेकरा सम्मान करे के बा ऊ उनके सम्मान करबे करी। नीमन के नीमन कहबे करी। उनका सम्बन्ध में हरिवंशराय बच्चन के ई कथन सत्य बा कि—"इसने (लेखन ने) और कुछ किया हो या न किया हो आपको सरल बना दिया है। सरलता बड़ी साधना की देन है। आपको सन्तुष्ट होना चाहिए।" एइसे बढ़िके सम्मान अउर का हो सकेला।

फिल्म के द्वारा भोजपुरी के प्रचार आ प्रसार सबसे पहिले मोती बी० ए० कइलें। सन् १९४८-४९ में 'एक कवय' फिल्म में उनके एगो गीत बा जवना के पहिली कड़ी ह—

काटे ना कटे मोरा दिनवा
गवनवा कब होई

'कब होई' पर गौर कइल जाइ।

इहे नू भोजपुरी ह। ई फिल्म फेल हो गइल। ई गीतियो प्रचारित ना हो पावल। ई बाति केहू नाहीं जानेला। बाकी ओह समय फिलिमस्तान लिमिटेड गोरेगाँव के फिल्म 'नदिया के पार' बनल जवना में नायक रहलें— दिलीप कुमार, नायिका रहली कामिनी कौशल, निर्देशक रहलें किशोर साहू, संगीत निर्देशक रहलें सी० रामचन्द्र आ गीतकार रहलें मोती बी० ए०। एकर एगो गीत ह—

कठवा के नइया, बनइहे रे मलहवा
नदिया के पार दे उतार

फिल्म बहुत लोकप्रिय भइल आ ई गीत भारत तथा भारत के बाहर विदेसन में गूँजि उठल, व्यापि गइल। भोजपुरी के मिठास पर आ एकरे अभिव्यञ्जना शक्ति पर जे केहू सुनल लट्टू हो गइल, आ के ना सूनल?

सत्य के स्वरूप कबो, कवनो दसा में मलीन ना होखे पावेला। भोजपुरी के सत्य दुनिया के सामने जब साक्षात् उतरि गइल त दुनिया भर के लोग मोहासक्त होके ओके अपनावे के फेर में परि गइले। शाहाबादी के 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' के आवरण के जबरदस्त भूमिका 'कठवा के नइया' आ 'मोरे राजा हो ले चलऽ नदिया के पार' तइयार क देले रहे। भोजपुरी के धूमि मचि गइल। ए क्रान्तिकारी परिवर्त्तन के श्रेय मोती बी० ए० के बा। विभिन्न भाषा-भाषी लोगन के समूह में भोजपुरी के प्रतिष्ठा मोतिएजी के करते भइल।

फिल्म संसार में रहि के मोती बी० ए० पचीसन गो फिल्म में गीति लिखलें जइसे—कैसे कहूँ, सुभद्रा, भक्त ध्रुव, रामबाण, सुरेखाहरण, इन्द्रासन, काफिला, राम विवाह, किसी की याद, रिमझिम, साजन, सिन्दूर, नदिया के पार, गजब भइले रामा (भोजपुरी), ठकुराइन (भोजपुरी), चम्पा चमेली (भोजपुरी) वगैरह वगैरह। वृत्तान्त लमहर बा।

मोती बी० ए० के गजल-गीत साजन फिल्म में हिट भइल। ओकर पहिलकी कड़ी रहे—'हमको तुम्हारा ही आसरा तुम हमारे हो न हो।' सन् १९४८ के ई गीत आजु ले बाजेला। अपने समय के ई गीत सर्वश्रेष्ठ रहे आ दुनिया-भर में एकर प्रचार-प्रसार भइल। सी० रामचन्द्र के संगीत आ मु० रफी के स्वर रहे।

मोती बी० ए० अपने किशोरावस्था से देशभक्ति के भावना से भरल रहलें। तकली कातल, चरखा चलावल, झण्डा लहरावल आ आजादी के गीत गावल इनकर नियमित कार्यक्रम रहे। 'झण्डा तिरंगा लहराए चला जाए अपने देस में, हां हां रे अपने देश में' इनके प्रिय गाना रहे। एम० ए० पास कइला के बाद बाबू जयप्रकाश

नारायण के सर्वोदय आन्दोलन से ई जुड़ गइलें आ डाक्टर स्वामीनाथ सिंह अउर त्रिलोचन शास्त्री के साथे गिरफ्तार हो गइलें भारत रक्षा कानून में। १५ दिन ले चेतगञ्ज के हवालात में बन्द रहला के बाद वाराणसी सेन्ट्रल में भेजि दिहल गइलें। कवनो सबूत ना मिलला से एक-डेढ़ महीना बाद मोतीजी जेल से रिहा हो गइलें।

हिन्दी आ भोजपुरी में राष्ट्रीय चेतना उभारेवाला बहुत गीत आ कविता लिखलें। सिद्धांतविहीन पार्टीबाजी के खिल्ली उड़ावत मोतीजी लिखलें—

कइसे चली नाइ, ई त नइए में छेद बा
पछिय कांग्रेसी जे बा पूरूब सोशलिस्ट बा
रहनि जनसंघी बाटे चलन कम्युनिस्ट बा
लाल बा लंगोटा एकर टोपिए सफेद बा
कइसे चली नाइ ई त नइए में छेद बा!

मोतीजी के विचार राष्ट्रीयधारा के साथ-साथ भारतीयता के रंग में रँगि गइल बाटे। उनके कविता अब कैसी लाचारी, गद्दारी, सवारी, बेकारी, मुर्दाबाद, राशन के दूकान, पन्द्रह अगस्त आ छब्बिस जनवरी वगैरह कवितन से, ऊपर जवन बाति कहल गइल बा, स्पष्ट हो जात बा।

फिल्म-क्षेत्र में मोती बी० ए० भोजपुरी में सफल गीत लिख के भोजपुरी के प्रचार-प्रसार जरूर कइलें बाकी सन् १९५३-५४ ले ऊ कवनो साहित्यिक महत्त्व के रचना भोजपुरी में ना कइले रहलें। 'भोजपुरी' मासिक पत्र के सम्पादक बाबू रघुवंश नारायण सिंह आ प्रसिद्ध उपन्यासकार जगदीश ओझा सुन्दर के आग्रह से उनके ध्यान ए दिशा में गइल जवना के फलस्वरूप 'महुआ बारी' आ 'तनी अउरी दउर हिरना पा जइब किनारा,' जइसन बेजोड़ साहित्यिक कविता ऊ लिखलें भोजपुरी में। एह दूनू कवितन के भोजपुरी संसार दिल खोलि के आदर दीहल। मोती बी० ए० के उत्साह भोजपुरी में रचना करे खातिर बढ़ि गइल। उहाँ के कविता पुस्तक 'सेमर के फूल' १९७२ में प्रकाशित भइल जवना के प्रशंसा सर्वत्र भइल। एकरे बाद एक-से-एक भोजपुरी काव्य जइसे भोजपुरी सॉनेट, तुलसी रसायन, बन बन बोलेले कोइलिया, भोजपुरी मेघदूत, अब्राहम लिङ्कन नाटक (अनुवाद) प्रकाशित भइले सँ। भोजपुरी मुक्तक मोतीजी के एतना लोकप्रिय भइल कि आम आदमी के जबान पर ऊ आ गइले सँ। जइसे—

चाहे रोव आ गाव ठठा के हँसऽ
जवन होखे के बा तवन होखबे करी
जिन्दगी चढ़ि गइल बाटे जब दाँव पर
चाहे अइबे करी चाहे जइबे करी!

जवने खूँटा बछरूआ बन्हा गइल बा
हुमचवला से का फरिआए के बा ?
तूरि के फेंकि दिहलसि त का हो गइल
फेनू एही में ओकरा बन्हाए के बा
दालि रोटी आ माठा जो मीलत रही
जबले गमछा में भूजा आ भेली रही
तेल सरिसों के बुकवा जो लागल करी
अपने किस्मत पर झंखत चमेली रही
भोजपुरियन के हे भइया का कहेल
खुलि के आव, अखाड़ा लड़ा दीहे सँ
तोहरे चरखा पढ़वला में का धइल बा
तोहके सगरो पहाड़ा पढ़ा दीहें सँ !

बाबू रघुवंश नारायण सिंहजी के जादू मोतीजी के ऊपर चलि गइल रहे। उहाँ का रघुवंश बाबू के बरहज विद्यालय पर आमंत्रित कइनीं। भोजपुरी के प्रचार आ प्रसार खातिर छात्र आ अध्यापक लोगन के सभा में बाबू रघुवंश नारायणजी के ओजस्वी भाषण होत रहे तवे भोजपुरी के उत्थान के व्रत लीहल गइल। भोजपुरी पत्रिका के ग्राहक बनावल गइल। उनका गइला का बाद बरहज के पूर्णिमा के मेला में मोतीजी अपने साथी श्री सूर्यदेव के संगे-संगे एगो दानपत्र में चन्दा मँगले। पचहत्तर रुपया ले एकट्ठा हो गइल। एगो नारा कविता में ऊ लिखले रहलें। ओही नारा के मेला में ई लोग गावे। ऊ नारा अबहिन ले इयाद बा आ अबहिन ले भोजपुरी के उन्नयन करे खातिर उनके भीतर उत्साह के लहरि मारि देला। मोतीजी ऊ नारा गाके सुनवले आ सन्दर्भ हम अपने पाठक लोग खातिर नीचे लिखत बानी। सुनीं सभें नारा—

जय जय भोजपुरिया माई
तोहरे खातिर गीति गवाई
तोहरे खातिर समर लिआई
केइसन होई भोजपुरिया ऊ
जे ना तोहके माथ नवाई
जय जय जय भोजपुरिया माई
जय जय जय भोजपुरिया माई

———

भोजपुरी के सहज साहित्यकार

आदरणीय सिपाही सिंह 'श्रीमन्त'

मझोला कद, गेहुँआ रंग, गोड़ में जूता, कमर में खादी धोती, देह में खादिए के कुरता आ जाकिट, तनी-तनी तिलकाइल बढ़ल दाढ़ी, जवना से ऋषि परम्परा के याद आवत रहे, अइसने बढ़ल आ तिलकाइल माथा पर के बार बाकिर मूँछ एकदम करिया जवना से भीतरी आत्मबल आ जवानी के उमेदि हो जात रहे। आँख के जोति अइसन जे एह जोत से जो केहू एको बेर प्रकाशित भइल, त ऊ जिनगी भर खातिर हो गइल।

अइसन कलम के सिपाही, सत्यनिष्ठ, ईमानदार, देशभक्त, समाजसेवी, भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी, निर्भीकता के प्रतीक, हिन्दी भोजपुरी के कवि, लेखक आ नाटककार के नाँव रहे सिपाही सिंह 'श्रीमन्त'।

श्रीमन्तजी के जनम ८ मई १९२३ ई०, मंगलवार के सारन जिलान्तर्गत (अब गोपालगंज जिला) गंडक नदी का दखिनी किनार पर मूँजा गाँव में एगो सम्पन्न गृहस्थ राजपूत परिवार में भइल रहे जहाँ गोपालगंज, मुजफ्फरपुर आ चम्पारण जिला के सीमा आपुस में मेल करेला। पिता आदित्यनारायण सिंह आ चाचा सूर्य-नारायण सिंह के बचपने से बड़ा दुलार मिलल। दुलार के कारण रहे सिपाही बाबू के स्वभाव आ दुनू भाई का बीच में एकलौता बेटा। पूरा परिवार में एह प्रिय बालक के बचपन के नाँव रहे शिवजी। शिवजी के प्रारम्भिक शिक्षा गाँवे का प्राइमरी स्कूल में शुरू भइल। आगे चल के अपने बिहार विश्वविद्यालय से एम० ए० कइला का बाद पटना विश्वविद्यालय से एम० एड० कइनीं।

महतारी-बाप के एकलौता बेटा आ सम्पन्न गृहस्थ परिवार भइलो पर परिश्रम से पावल पढ़ाई के सार्थक करे खातिर पहिले त अपने हाई स्कूल में नौकरी शुरू कइनीं, बाद में बिहार सरकार का शिक्षा-विभाग में अवर-निरीक्षक पद पर बहाली भइल। एह पद से उन्नति पावला का बाद अपने अनुमण्डलीय विद्यालय उपनिरीक्षक का पद तक पहुँचल रहनीं। शिक्षा विभाग में नौकरी करत भर में अपने से केहू का बिगाड़ ना भइल, आ इहो ना रहे जे काम ना करेवाला के आदर दिआत होखे। अपने के व्यवहार कुशलता के ई खूबी रहे कि अन्दर काम करेवाला सब कर्मचारी अपना के हरदम तत्पर रखबे करस।

सिपाही बाबू के साहित्यिक प्रतिभा बचपने से आपन रूप देखावत रहे। तबे नूँ एगारहे बरिस का उमिर में एगो भोजपुरी कविता लिखले रहनीं। राजेन्द्र महाविद्यालय छपरा में जब उच्च शिक्षा पावे खातिर गइनीं आ प्रिंसिपल मनोरंजन बाबू, आचार्य शिवपूजन सहाय आउर पण्डित जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' का सम्पर्क में अइनीं त साहित्यिक प्रतिभा अउरी निखर गइल। हिन्दी आ भोजपुरी में जमि के साहित्य लिखाये लागल।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के सेवा में सिपाही बाबू बड़ा निष्ठा से लागि गइनीं। अपने के पहिलका हिन्दी कविता संग्रह १९५० ई० में 'नाश आ निर्माण' नाम से प्रकाशित भइल। दूसरका कविता संग्रह 'भूखी भिखारिन' १९५१ ई० में प्रकाशित भइल। 'द्वापर की क्रान्ति' हिन्दी नाटक) १९५३ ई० में, 'बजी बाँसुरी' (बालोपयोगी हिन्दी संग्रह) १९७५ ई० में। एकरा अलावे हिन्दी पत्र-पत्रिकन में अपने के कविता आ निबन्ध हरदम छपते रहलें सन। अरुणोदय ग्राम्यजीवन आ उदयाचल जइसन साप्ताहिक आ मासिक पत्रन के अपने सम्पादनो करत रहनीं।

संयुक्त सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तीन बरिस तक अपने प्रधान मन्त्री रहनीं। जिला बँटवारा का बादो तक तीनू जिला (सारन, सीवान, गोपालगंज) का हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कर्त्ता-धर्त्ता अपनही रहत रहनीं, भले नाँव रहो चाहे ना। बिहार राज्य प्रगतिशील हिन्दी लेखक संघ के सक्रिय सदस्य रहनीं। अपने का मेहनत से मसरख में एह संघ के अधिवेसन वड़ा धूमधाम से भइल रहे।

भोजपुरी माई के सेवा अपने का जीवन के अंग बनि गइल रहे। ऊपर बतावल गइल बा जे एगारहे बरिस का उमिर में लिखल अपने के भोजपुरी कविता चर्चा के विषय बनि गइल रहे। माई का कोरा में सीखल भोजपुरी अपने का रोम-रोम में रमि गइल रहे। तबे नूँ एकरा सेवा में तन-मन-धन से जीवन का अन्तिम समय तक लागले रहनी हँ। भोजपुरी में प्रकाशित पुस्तकन आ पत्र-पत्रिकन से अपने का भोजपुरी-सेवा के अन्दाज लगावल जा सकता। प्रकाशित-भोजपुरी पुस्तकन के सूची एह तरह से बा—(१) ऊषारानी (कविता संग्रह) १९५० ई०, (२) आँधी (कविता-संग्रह) १९५३ ई०, (३) हीरा-मोती (कविता संग्रह समिलात) १९७२ ई०, (४) जवानी के जगाइले (कविता संग्रह) १९७३ ई०, (५) प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के (समिलात सम्पादन) १९७७ ई०, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित, (६) भोजपुरी निबन्ध निकुंज (समिलात सम्पादन) १९७७ ई०।

एकरा अलावे कइगो भोजपुरी पत्र-पत्रिकन के सम्पादन आ प्रकाशन में अपने के सबल हाथ लागल रहे। भोजपुरी जनपद (मासिक पत्र) अपने का सम्पादन में

निकलत रहे, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलनो के पत्रिका अपनही का जोर लगावला से निकलल। ललकार (जमशेदपुर), माटी के गमक (सीवान), उरेह (पटना) आदि भोजपुरी पत्रिकन में अपने के रचना हरदम छपते रहत रहे।

सिपाही बाबू भोजपुरी के सेवा सचहूँ तन-मन धन से करत रहनीं। भोजपुरी संस्थन के जनम दिहल-दिआवल, चलावल-चलवावल अपने का कार्यक्रम में आ गइल रहे। तबे नूँ भोजपुरी के भगीरथ आचार्य महेन्द्र शास्त्री हरदम याद राखत रहनीं। एइजा एगो जाने लाएक बात बा जे सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के नव गो अधिवेशन बिना नियमावली के शास्त्रीजी का करते होत रहल आ अधिकतर अधिवेशन में नाँव खातिर अपनहीं के मन्त्री पद दिआ जात रहे। अधिवेशन का अवसर पर अपने ओह दायित्व के निबाहते रहनी। बाद में अपनही का अध्यक्षता में एकर दसवाँ अधिवेशन जब महाराजगंज में भइल आ ओह अधिवेशन में एह पाँती का लेखक के जब मन्त्री पद दियाइल तब ओह सत्र में ओकर संविधान बनल। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन—जे आज भोजपुरी के सबसे बड़ संस्था बा—के जनमेकाल से अपने सक्रिय सदस्य रहनीं। बाद में संविधान का अनुसार जब संस्था के गठन भइल त पहिलका साहित्य मन्त्री के पद अपने के दिआइल। ओकरा बाद एह सम्मेलन के तीसरका 'सीवान-अधिवेशन' (१९७७) में अपने के बड़ा आदर से महामन्त्री पद पर बइठावल गइनीं। एह गरिमामय पद पर रहत आ काम करते भर में अपने स्वर्गवासी हो गइनीं।

भोजपुरी के एकमात्र सरकारी संस्था 'भोजपुरी अकादमी' (पटना) के संचालन में अपनहूँ के बड़ा सहयोग रहे। अकादमी का कार्य समिति के अपने सदस्यो रहनीं।

अन्तिमो समय में गोपालगंज जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दूसरका अधिवेशन करावे के चर्चा अपने कइले रहनीं जवन मूँजा गाँव का लगे प्रसिद्ध सन्त कवि लक्ष्मी सखी का मठ पर १८ मई १९८१ के भइल, बाकिर अपने का बिना ऊ अधिवेशन बड़ा फीका लागत रहे।

संयुक्त सारण जिला लोक संस्कृति सम्मेलन के लगातार कई बरिस ले अपने मन्त्री रहनीं आ ओकर काम खूब आगे बढ़वनीं।

सारन जिला का बँटवारा के बाद सीवान-गोपालगंज जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का भोरे (गोपालगंज) अधिवेशन का मंच पर अपने के भोजपुरी सेवा खातिर सम्मानित कइल गइल रहे। एह अवसर पर तिलक लगावे आ चादर भेंट करेवाला कार्यक्रम सम्पादित कइनी विद्वान भोजपुरी साहित्यकार डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी' जी। प्रणयीजी अपने का सम्मान में भाषण देत कहले रहनीं—

'सिपाही बाबू नांवे से ना कामो से हिन्दी-भोजपुरी के आ मानव मूल्य के निर्भीक सिपाही हईं। अब त इहाँ का सिपाही से सेनापति हो गइल बानीं।'

सिपाही बाबू १९६२ ई० का पहिले आपन नांव 'पागल' उपनाम लगाके लिखत रहीं, बाद में 'श्रीमन्त' उपनाम लगा के लिखे लगनीं। कारण पूछला पर मुस्कुरा के रहि जात रहनीं।

श्रीमन्तजी के विचार से हमार विचार बहुत मिलत-जुलत रहे। आ हमरा के उहां का अग्रज के प्यार देत रहनीं। तबे नूँ आपन 'सतहवा' कहानी संग्रह हम उँहे का स्मृति में १९८० में प्रकाशित कइनीं।

अइसन सिपाही बाबू अपना पीछे पिता, माता, पत्नी, पुत्र श्री भारतेश्वर नारायण सिंह, पुत्रवधू, बेटी आ नाती पोता से भरल परिवार छोड़ के १५ जनवरी १९८० के अपना एकलौता बेटा से बतिआवते में हमेशा खातिर सुति गइनीं।

उहां का देहान्त के खबर आकाशवाणी आ अखबारन से चारू ओर तुरते फइल गइल। जगह-जगह शोक सभा होखे लागल आ महिनवन ले अखबारन में समाचार आवत रहल। उहां का मृत्यु से भोजपुरी के जवन क्षति भइल तवन पूरा होखेवाला नइखे।

प्रकाशित—जोखिम, अक्तूबर १९८२, बरिस ३,
अङ्क ३-४ के संशोधित रूप

ग्राम्य जीवन के चतुर चितेरा
डॉ0 विवेकी राय

"रेखांकनीय यह है कि जो कुछ और जितना उन्होंने लिखा है—कहानी, उपन्यास, निबन्ध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि—उस सबकी विषय-वस्तु है—ग्राम और ग्राम-जीवन। उनकी बहुसंख्यक ग्रामभित्तिक रचनाओं में से प्रायः एक दर्जन पुस्तकों के अवलोकन करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। उन सभी की भाषाभिव्यक्ति ने मुझे इतना प्रभावापन्न किया कि मैं सोचने लगा कि हिन्दी जगत् में क्या कोई दूसरा शिल्पी ऐसा मिलेगा, जिसकी हिन्दी आंचलिकता-जनपदीयता के सुविशाल धराक्षेत्र में शुभ्रस्वच्छ अभिव्यक्ति के जनपदीय आभूषणों से अलंकृत, जनपदीय परिवेश के परिधानों में, भारत के खेतों खलिहानों, सीमान्त-सीवानों, बाग-बगीचों, नद-नदी कछारों, सर-सरोवर-कूलों, वन-वीरुथ-फूलों, गली-गलियारों, वसन्त-पतझारों सूखा और अतिवृष्टि की मारों तथा ग्रामों पर कहर गुजारने वाली ईतियों-भीतियों की हुंकारो में भी निर्द्वन्द्व-निष्कम्प छम-छमाछम नाचती-कूदती, फुदकती-कुदकती पूर्वांचलीय जनजीवन के पिछड़े परिवेश की दर्दीली कहानी से भारतीय बौद्धिकता को झकझोर-झकझोर कर रख देती हो?"

× × ×

"वे रेखाचित्र खींचते हैं, रिपोर्ताज रचते हैं, तो अचानक ही उनकी पैनी अनुभूतियाँ, पता नहीं कब और कैसे, किन-किन भाषाओं के शब्दों के घर निमंत्रण दे आती हैं और पलभर में बिम्ब-चित्रों में अपने-अपने रंग भरने और रेखायें उकेरने के लिए पौरी-पौरी, पनघट-पनघट, हाट-बाट-घाट, डगर-डगर से शब्दों की छौड़ और जमघट का एक अभियान-सा छिड़ जाता है।"

× × ×

ई उद्गार हवे डॉ० भगवान सहाय चौधुरी के जवन 'डॉ० विवेकीराय का जनपदीय अवदान' शीर्षक लेख से लिहल गइल बा।

ओही दिन जब अपना भोजपुरी निबन्ध के विषय प्रवेश लिखावे खातिर डॉ० रायजी का सेवा में हाजिर भइनीं आ भोजपुरी निबन्ध के फाइल देखावत एह पर कुछ लिख देबे खातिर प्रार्थना कइनीं त बड़ा सहज ढंग से बिना कवनो हीला-हवाला के शान्त भाव से रायजी कहनीं जे लिखबि त बाकिर हिन्दी में। हम 'जवन इच्छा'

कहके चुपा गइनीं। एकरा बाद रायजी हमरा आ पं० विकास तिवारीजी आयुक्त, भा० प्र० से० लखनऊ जे हमरे साथे गइल रहनीं। दूनू आदमी के आगे दू गो पत्रिका रखत 'हम पाँच मिनट में आवतानी' कहत रायजी भीतर घर में चल गइनीं। शायद चौथे मिनट में आपना हाथे चाय बनाके रायजी ले अइनीं आ बिस्कुट चाय दूनू आदमी के आगे रख देहनीं। हम मन ही मन रायजी का एह बड़प्पन के सराहे लगनीं। फेनू चाय पिअला का बाद विषय प्रवेश लिखे के प्रसंग छिड़ल। हमरा इ पूछला पर कि कबले लिखा जाई उहाँका आठ-दस दिन के समय लिहनीं। काहें कि 'मंगल भवन' उपन्यास लिखे में तन्मय बानीं। हम लिखला का बाद तिवारीजी के फाइल दे देबे खातिर प्रार्थना कइनीं। ठीक पन्द्रहवाँ दिने हमरा डा० रायजी के चिट्ठी मिलल जवना में श्री तिवारीजी के फाइल दे दीहला के सूचना रहे। साथे-साथ अपना अकेले रहला का कारण हमरा के कुछ खिया-पिया ना सकत रहनीं, हमार उचित स्वागत-सम्मान ना कइले रहनीं एकरा खातिर क्षमा प्रार्थना रहे। हम एक बेर फेनू रायजी का विनम्रता आ तत्परता का सामने नत-मस्तक हो गइनीं।

साधारण लोग जव जिनगी के अभावन के अभिशाप माने लागेला त ओ लोग खातिर संघर्ष के प्रेरणा के सोत सुख जाला। आ तब ओ लोग के जीवन खाली निराशा, अन्धकार, कुण्ठा के परयाय बन जाला। तेज आँच के विना सहले सोना खरा कन्चन कइसे बन सकेला ? डॉ० विवेकी रायजी के प्रारम्भिक जीवन लमहर अभावन से भरल रहल बाकिर इहाँ के आस्था एह लंबा अन्तरालो में तनिको डग-मगाइल होखे अइसन त नइखे बुझात। इहाँ का अपना आस-पास के विरोधाभासन आ अभाव आ खालीपन का तितकी से आउर अधिक प्रेरणा लेले वानीं। आ हर बार नया उत्साह का साथे संघर्ष का ओर उन्मुख भइल वानीं।

डॉ० राय के जनम २० नवम्वर १९२७ में वलिया (उत्तर प्रदेश) के भरौली गाँव में भइल। जनम के डेढ़ महीना पहीलहीं वाबूजी सिधार चुकल रहनीं। मामा श्री बसाई राय के देख-रेख में इहाँ के वचपन बितल। मिडिल तकले के प्रारम्भिक शिक्षा सोन वाजार (गाजीपुर) में सन् १९४०-४१ में पूरा भइल। वाकिर मजबूरन इहाँ का गृहस्थी में लौटे के परल। तवहुँ इहाँ आ इ ाँ का गाँव खातिर कवनो कम खुशी के बात ना रहे। काहें से कि इहाँ का अपना गांव के पहिलका आदमी रहनीं कि पहिले पहिल मिडिल पास कइनीं आ उहो प्रथम श्रेणी में।

आगे वढ़ेके कवनो जरिया ना रहे। इहाँ का खेती किसानी में भिड़ गइनीं। "गृहकारज नाना जंजाला" में फँसला का बादो रायजी के स्वाध्याय नियमित रूप से चलत रहल आ इहाँका थोड़ही समय में आसपास के गाँवन के पुस्तकालयन

के समूचा पुस्तक पढ़ डलनीं। सन् १९४२ के स्वतन्त्रता आन्दोलनो में छिपे-छिपे जुड़ल रहनीं। एह तरह से रायजी के जीवन एके साथे किसान, शिक्षानुरागी, शिक्षक तथा गँवई गाँव के साहित्यकार के जीवन ह।

अपने का हिन्दी में विशेष योग्यता प्राप्त करे खातिर १९४३ में विशारद, १९४४ में साहित्यरत्न, सम्मान सहित पास भइनीं। एकरा बाद स्वतन्त्र रूप से १९५३ में मैट्रिक, १९५८ में इण्टर, १९६१ में बी० ए० आ १९६४ में एम० ए० के परीक्षा पास क लेहनीं। एकरा बाद १९६८ में हिन्दुस्तानी टीचर्स के परीक्षा आ देवघर विद्यापीठ से साहित्यालंकार के उपाधि स्वर्णपदक के सहित पवनीं। इहाँ के पी-एच० डी० १९७० में भइल। डॉ० विवेकी राय के लेखन के प्रति रुझान अइसे त स्कुलिए जीवन से लउके लागेला बाकिर इहाँ के साहित्यिक जीवन के शुरूआत १९४५ से माने के चाहीं जब इहाँ के कहानी दैनिक 'आज' (वाराणसी) में छपल। एकरा बाद से रायजी नियमित रूप से लिखल शुरु क देहनीं। सन् १९५७ से १९७० तक ले इहाँ का 'आज' के स्थायी साप्ताहिक स्तम्भ, मनबोध मास्टर के डायरी' लिखनीं आ अपना ललित निबन्धन आ रेखाचित्रन, संस्मरणन में पैनी शैली के चुटिला व्यंग्य खातिर काफी चर्चित रहनीं। इहां का काफी समय तकले 'आज' के प्रतिनिधि सम्वाददाता रहनीं।

इहाँ के पहिलका प्रकाशित पुस्तक 'अगँला' ह, जवन १९५१ में छपल। एकरा बाद अब तक ले जीवन परिधि, नदी कोयल, गूँगी जहाज, कालातीत, बेटे की बिक्री (कहानी संग्रह); बबूल, पुरुष पुराण, लोक गण, श्वेत पत्र, सोना माटी (उपन्यास); किसानों का देश, गांवों की दुनियाँ, जुलूस रुका है, गँवई गन्ध गुलाब, नया गाँव-नामा, मनबोध मास्टर की डायरी (निबन्ध संग्रह); त्रिधारा आधुनिक हिन्दी उपन्यास; उत्तरशती की उपलब्धियाँ, भोजपुरी कथा साहित्य (समीक्षा) तथा स्वतन्त्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम्य जीवन (शोध प्रबन्ध) अबतक ले श्री राय के हिन्दी में प्रकाशित रचना बाड़ी स।

भोजपुरीयो साहित्य में अपने के लगातार रचनाशील बानीं। भोजपुरी में इहाँ के कुछ प्रमुख छपल किताब बाड़ी सन—फिर बैतलबा डार पर (ललित निबन्ध), के कहल चुनरी रंगा ल (ललित निबन्ध) आउर १९८२-८३ में प्रकाशित जनता के पोखरी (कविता) आदि। एकरा अलावे डॉ० राय कइगो पुस्तकन के सम्पादन कके तथा पत्रिकन के सम्पादक मण्डल में रह के साहित्य-सेवा कइनीं। इहाँ का १९७७ में 'कल्पना' के ५५ वर्षीय सर्वेक्षण प्रस्तुत कइनीं। आ एही साले अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'निबन्ध निकुंज' के सम्पादन कइनीं। १९८० में 'वन्देमातरम्' (राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित) के सम्पादक रहनीं।

धर्मयुग, समीक्षा, कथाकार आदि हिन्दी के लगभग सभ प्रसिद्ध पत्रिकन में इहाँ के लेखनि चल रहल बा।

इहाँ के एगो रचना 'गँवई गन्ध गुलाब' पर लखनउ दूरदर्शन केन्द्र एगो वृत-चित्रो बनवलस। इहाँ के तीन गो पुस्तक उत्तर प्रदेश सरकार से पुरस्कृत हो चुकल बाड़ी सन। ६ मार्च ८३ के उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन अपना इटावा अधिवेशन में इहाँ के सम्मानित कइलस। पेसा से प्राध्यापक डा० राय के साहित्यिक व्यक्तित्व एहु से अनुठा बा कि परम्परा आउर आधुनिकता के एगो बहुते आनुपातिक सामंजस्य इनकर सभ रचना में सहजे देखल जा सकेला।

इहाँ के १९७४ में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुनर्गठित हिन्दी समिति के सदस्य भइनीं। १९७८ में बिहार सरकार जवन भोजपुरी आकादमी बनवलस ओकरो इहाँका सदस्य बानीं। १९८१ में इलाहाबाद के परामर्शदात्री समिति के सदस्य भइनीं। १९७७ से लेके अबले अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के विभिन्न पदन के सुशोभित कइले बानीं। भोजपुरी भाषा में इहाँका १९५० से लिखल शुरू कइनीं। तब से लेके आज ले एह भाषा के सभ विधा में आबाध गति से लिख रहल बानीं। इहां के अप्रकाशित रचना बाड़ीं स—'भागीरथी माटी' आउर 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ आदि।

डा० रायजी का भोजपुरी सेवा से प्रभावित होके अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना आठवां (विलासपुर) अधिवेशन के अध्यक्ष बनवलस।

सम्मेलन इहां के अध्यक्षता पा के गौरवान्वित भइल कि सम्मेलन के अध्यक्ष बन के इहां के गौरवान्वित भइनीं इ कहल कठिन बा।

आपना अध्यक्षीय भाषण में भोजपुरी के मान-सम्मान बढ़ावत भोजपुरी पुस्तकन के एगो लहमर सूची विधाक्रम से बतवले बानी आ इ सिद्ध कइले बानीं जे तुलसी-दास के रामचरित मानस, सूरदास के सूरसागर आ जयशंकर प्रसाद के कामायनी जवनि तरे समाज में आदरणीय बा ओही तरह से स्वामी विमलानन्द सरस्वती के भोजपुरी महाकाव्य प्रतिष्ठा पाई।

एह घरी अपने 'मंगल भवन' नांव के उपन्यास लिख रहल बानीं। जवना के दू खण्ड होई।

पहिला खण्ड में चीनी आक्रमण मुख्य कथा बा। इ खण्ड पूरा हो चुकल बा। दूसरका खण्ड में पाकिस्तानी आक्रमण के चर्चा बा। एह दूनू मुख्य कथा का साथे दू-दू गो औपन्यासिक कथा चल रहल बाड़ी सन। एह तरह से एह उपन्यास में एक साथ तीन गो कथा चल तारी स। 'मंगलभवन' भारतवर्ष नू हवे। हमरा विश्वास

बा जे रूसी उपन्यास सम्राट मैक्सिम गोर्की के उपन्यास 'मदर' आ प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' जवन लोकप्रियता पवले बा ओहूले बढ़ के देश-विदेश में 'मंगल भवन' प्रियता पाई।

डा॰ रायजी के हिन्दी कथा साहित्य के मुख्य विषय भारत का गांव गँवई के क्षेत्र हवे। ग्रामीण वातावरण के जवन चित्रण डा॰ राय के कथा साहित्य में पावल जाला तवन प्रेमचन्द के कथा साहित्य से आगे बा।

'सोनामाटी' चाहे अउरी कवनो उपन्यास चाहे हिन्दी भोजपुरी के कौनो कहानी गांव गँवई का गुलाबी गंध से भरल बा।

एने रायजी भोजपुरी में लघुकथा खूब लिख रहल बानीं। लघु कथा के अइसन वातावरण इहां का तैयार क देले बानी जे भोजपुरी में कइ गो लघुकथा लेखक सामने आ गइल बाड़े। एह घरी भारी भरकम उपन्यास लिखे में मस्त बानीं।

भगवान अपने के शतायु करस जे मातृभाषा आ राष्ट्रभाषा के माध्यम से अपन राष्ट्र के सेवा करत रहीं।

भोजपुरी के शास्वत साहित्यकार

डॉ. मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध'

"नये सन्दर्भ में नये जीवन मूल्य बनेंगे, जीवन-संघर्ष के भीतर से ही जीवन मूल्य पैदा होंगे। गाँव की स्थितिशीलता टूट रही है। विभिन्न प्रगतिवाही योजनाओं ने गाँव की जनता में भी चंचल यायावर वृत्ति उत्पन्न कर दी है। परिवार टूट रहे हैं, परम्पराएँ विस्मृत होती जा रही हैं, गांव खाली हो रहे हैं, औद्योगिक शहर आबाद हो रहे हैं। यह प्रक्रिया और बढ़ेगी। सब होगा पर जीवन सुखी होगा या नहीं, कोई नहीं बता सकता। परन्तु पुश्त-दर-पुश्त के अनुभवों का निचोड़, आशा-आकांक्षाओं की वाङ्मय मूर्ति लोकसाहित्य का खो जाना या खो जाने देना क्या वांछनीय है? लोक-साहित्य पीढ़ियों से निखरता आया अनुभव और अनुभूतियों का भण्डार है। वह वर्त्तमान को अतीत से जोड़नेवाला श्रेष्ठ साधन है। इसका संरक्षण पीछे लौटने का प्रयत्न करनेवाली भावुकता से नहीं, बल्कि अनासक्त दृष्टि द्वारा ही सम्भव है। संकलन-कर्त्ताओं में श्रद्धा तो अवश्य होनी चाहिए पर आग्रह या आसक्ति वांछनीय नहीं है।

डा० मुक्तेश्वर की इस पुस्तक का स्वागत करता हूँ। उन्होंने लोकसाहित्य के प्रति प्रेम दिखाया है, आसक्ति नहीं। अनासक्त दृष्टि सौ फीसदी शुद्ध रूप में नहीं मिलती। उसके लिये अधिक-से-अधिक संयम का प्रयत्न ही किया जा सकता है। यह प्रयत्न इस पुस्तक में है। मुझे आशा है कि उनकी पुस्तक सहृदयों को पसन्द आएगी और भावी अध्येताओं को सही दिशा में जाने की प्रेरणा देगी।"[1]

जवना बेसुधजी का सम्बन्ध में आचार्य द्विवेदीजी के ई उद्गार बा तवन बेसुधजी कश्मीरी निवासी नीयर गोर धपधर, मझिली रासी के कद, गठल दोहरा देह, माथ पर करिया अँगुठिया बार, जवना पर टटके ककही घुमावल, चाकर लिलार का नीचे कमान तरे भौंह आ छोटि छोटि आंखि, सुग्गा का ठोर तरे नाक, एगो त अपने लाल ओठ आ पान खइला पर अवरी भभकत, दाढ़ी एकदम साफ जइसे दूनू बेरा बनत होखे, बारहो मास धोती, कुरता आ सदर, गोड़ में फीतादार जूता।

१, बेसुधजी के पुस्तक 'भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहावरें' के भूमिका के अंश— आचार्य हाजारी प्रसाद द्विवेदी।

'विद्या ददाति विनयम्' के साक्षात् आदर्श। बात-बात में हँसी-मजाक, चेहरो पर ओइसने हँसी, जवना से मन के सफाई साफे लउकत रहे। ई साफगोई सबके अपनी ओर खिचि लेत रहे, कहे के मतलब जे डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरी चाचा) का एह व्यक्तित्व के प्रभाव केहू पर अनसोहातो परिए जात रहे।

हमरा से अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का पहिलका अधिवेशन (१९७५ इलाहाबाद) में पहिले पहिल दर्शन मिलल। हम नांव त सुनलही रहनीं जब परिचय पवनीं त हृदय गद्‌गद् हो गइल। बाकी ढेर बात ना हो सकल।

कुछ दिन का बाद सोनपुर रेलवे प्लेटफार्म पर कमरा बिछा के बइठल एगो रईस ढंग के बड़ आदमी लउकल। हम पटना से सीवान आवत रहनीं। रात १० बजत रहे। हम पहिले त तनी भटभटइनीं। खड़ा होके मन पारत रहनीं जे ई के ह, कहाँ देखले बानीं, तबले उहाँ के नजर हमरा ओर घुमल आ मुस्कुरात बोलवनीं 'आईं आईं दीक्षितजी, केने जाये के बाटे' तब हमरो मन परल आ हम दउरके जाके गोड़ छुए के कोशिश कइनीं बाकी उहां का जइसे पहिलही से सचेत रहनीं, हम सफल ना भइनीं आ उहाँ का चट दे उठि के अँकवारी में कसि लिहनीं। हम बतिआवतो रहनीं आ मने मने लजातो रहनी अपना स्मरण-शक्ति पर। करीब १२ बजे उहाँ के गाड़ी आइल तब हमनीं के बतकही खतम भइल। एही क्रम में ई मालूम भइल जे 'बेसुधजी' रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति के अध्यक्ष बानीं आ ओही क्रम में घूम रहल बानी। ऊ दू-ढाई घण्टा के बतकही से हमरा दिल-दिमाग पर बेसुधजी के जवन छाप परल तवन दिने दिन बढ़ते गइल। ओकरा बाद छठे छमासे भेंट होत रहे आ दुख-सुख बतिआवत में साहित्यिक बात जरूरे आ जात रहे।

अइसन बेसुधजी के जनम आशापुर, चितवड़ा गांव, बलिया (उ० प्र०) में सम्वत् १९८४ विक्रम में पं० यदुनन्दन तिवारीजी का जेठ बेटा के रूप में भइल। 'होनिहरगर बिरवा के लुहलुह पातवा' कहावत के सार्थक करेवाला चतुरी चाचा बचपने से आपन कमाल देखावत रहनीं, बचपने से नाटक, एकांकी, लोरिकायन, सोरठी, बिरहा आदि के लेखन आ आयोजन कके अपने समाज में आपन धाक जमा ले ले रहनीं। अपने गावत ना रहनी हँ बाकी लोकगीतन के मधुर राग में बान्हि के दोसरा के गावे के सिखावत रहनी हँ।

सुभाव से मधुर बेसुधजी बिना कवनो लाभ-लोभ के केहू के सहायता खातिर कवो तइयार रहत रहीं। बाकी आत्मगौरव के धनी बेसुधजी कालिदास का एह पाँति के हमेशा इयादि राखत रहीं—'याञ्च्या मोघा वरमधिगुणो नाधमे लब्धकामा' एही मुताबिक जीवनो निबाहत रहनीं। भीतर से अइसन 'वज्रादपि

कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' उक्ति उहाँ में यथार्थ उतरत रहे। समय के एतना पाबन्द जे जवन काम जवना समय में करे के बाटे ऊ काम ओह बेरा होखही के चाहीं। पचीसन वरिस का शिक्षक जीवन में एको बेर ना कालेज जाये में देरी भइल बा ना क्लास में जाये में। अपना सब काम में एकदम चउकस। कबो समय वर्बाद ना करत रहीं, वेकार सुति के समय ना काटत रहीं। अपना एकान्त कोठरी में गद्दी पर बइठि के मसनद लगा के छोट चउकी पर कापी-किताब लिखत-पढ़त रहत रहीं। ना कहीं उधो से लेनी ना माधो से देनी। हँ जब दोसर केहू कवनो काम से आ जाय त सब काम छोड़ि के पहिले ओह आदमी से बतिआवत रहीं आ जवन कइला से ओकरा सन्तोष होत रहे तवन करत रहीं। केहू गरीबो का घरे कवनो सुख-दुख परि जा त बेसुधजी एके गोड़े खाड़। आपन खाके ओकर इज्जत बनावत रहनीं।

जहाँ तक लेखन के बात बा—अपने हास्य व्यंग्य, ललित-निबन्ध, कहानी, कविता रिपोर्ताज, आलोचना आदि सब कुछ बड़ा सशक्त कलमि से लिखले वानीं आ हिन्दी-भोजपुरी के भण्डार भरले वानीं। अपने के लेखन के काम अनेक नाँव से होत रहे कबो 'चतुरी चाचा' त कबो 'सनीचर'। कबो 'समझावन सुकुल' त कबो 'बेसुध बलियाटिक' हास्य कवि आ कहानीकार भइला का नाते ई तरह-तरह के नाँव उजागर होत रहल। डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी त खाली विद्वान व्याख्याता का रूप में दिखात रहनीं।

जवना घरी भोजपुरी अबहीं बोली मानल जात रहे ओही घरी से 'आज' में 'चतुरी चाचा के चटपटी चिट्ठी' भोजपुरी में लगातार पचीस बरिस तक लिखि के बेसुधजी भोजपुरी के भाषा के दर्जा देवे के कोशिश करत रहनीं। आजु ले ई मिसाल नइखे जे कवनो पत्र में लगातार २५ वरिस ले एके आदमी एगो स्तम्भ लिखि के चलवले होखे। एकरा खातिर 'आज' के तत्कालीन सम्पादक श्रीमान् पड़ारकर जी धन्यवाद के पात्र बानीं।

वेसुधजी के भोजपुरी सेवा का सन्दर्भ में दोसरका महत्त्वपूर्ण काम बाटे 'भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहावरे' नाँव के पुस्तक। एह पुस्तक में भोजपुरी कहावत आ मुहावरा के बड़ा विस्तार से अध्ययन कइल गइल बाटे।

'हिमालय ना झुकी कबहूँ' चीनी आक्रमण का विरोध में भोजपुरी भाषा में लिखल काव्य हवे।

'भइंसि के दूध' कहानी-संग्रह में नीचे लिखल चउदहगो कहानी बाड़ीं सँ—(१) भइंसि के दूध, (२) बेटी के बियाह, (३) भागिवाला के भागि,

(४) पेट के पाप, (५) हे भेदभाव, (६) विना डोरी के चंगि, (७) भागि के भरोसा, (८) ठूंठा पीपर, (९) भूत भांवरि, (१०) सपना के सम्पत्ति, (११) सेठजी के सलाह, (१२) दिमागी गुलामी, (१३) लेवी, (१४) स्मगलिंग ।

एह चउदहो कहानी में समाज का कुरीतियन के पर्दाफांश कइल गइल वा ।

"पराधीन भारत में हावा के गारी देवेवाला दरोगा, स्वाधीन भारत के स्वारथ-रत नेता, विकास से कोसो दूर गाँव आ अक्षम नौकरशाही के धरम-धक्का से लेके अलग समस्यन पर आपन कलम चलावेवाला बेसुधजी के संग्रह के पृष्ठभूमि में भोजपुरिये जिनगी साँझ सवेरे झांकत वा । क्षेत्र विशेष के जिनगी, क्षेत्रीय भाषा, मुहाविरा आ उकूति का राहे बड़ा साफ-साफ उभरल बा । स्थानिक प्रयोग भारतीय-भाषा के अउरी धारदार आ विश्वसनीय बनावत वा । पेशकार साहव 'पइसा काढ़ि साहब' हो गइल वाड़न त स्मगलिंग अपना नया नाम आ रूप सुमंगली हो गइल वा । भोजपुरी समाज अपना निस दिन के गिरावट पर ए शब्दन से गहरी चोट क रहल वा । एक बात जरूर बा कि लोक-उकूति के जवन परम्परा पहिलिये लाइन से शुरू भइल वा ओकर लोभ संसार में नइखे आइल आ कहीं-कहीं एके मुहाविरा के दोहरावल खटके लागता जइसे "बिलारि का जानसु कि दही........." आदि । शिल्प के मौलिकता आ भाषा के सरस बहाव सराहे जोग बा । एतने ना, ए रचना के पढ़के ई एहसास आ विसवास होता कि वेसुधजी भोजपुरी साहित्य में नया पहचाने ना बनइहें बलुक नया लीको डाल दीहें ।"[1]

'झमझावन सुकुल' के परिवार कई खण्ड में परिवार नियोजन से सम्बन्ध नाटक-माला बाटे, जवन इलाहाबाद आकाशवाणी से धारावाहिक प्रसारण होत रहल बा ।

'चतुरी चाचा के चटपटी चिट्ठी' (दू भाग में) भोजपुरी में लिखल व्यंग्य प्रधान कथा बाड़ी सन जवन समाज का कुरीतियन पर करारा चोट करतारी सन । फुटकर व्यंग्य कविता भोजपुरी के शान बाड़ी सन । कहल गइल वा जे खाली हास्य प्रधान रचना केवल हँसा भर देली सन बाकी जब हास्य का साथे व्यंग्य मिलि जाला त समाज के कमजोरी दूर करे में ऊ रचना आपन महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाहेले । वेसुधजी भोजपुरी में भाषा, भाव आ शैली खातिर वेजोड़ साहित्यकार वानीं ।

---

१. 'उरेह'—वर्ष ४, अंक ४ में डॉ० शकुन्तला राय के प्रकाशित 'भइंसि के दूध' के समीक्षा से ।

हिन्दी-सेवा का क्रम में अवरी जानकारी करे लायक बात ई बा—

शिक्षा—एम० ए० (हिन्दी), एम० कॉम, साहित्यरत्न, एल० टी० ।

शोध के विषय—'सूफी अध्यात्म दर्शन का मध्यकालीन हिन्दी सन्त साहित्य पर प्रभाव' काशी विद्यापीठ से उपाधि मिलल ।

हिन्दी प्रकाशन—'गुलछर्रे' आ 'मेघमाला' साप्ताहिक 'धर्मयुग' तथा 'हिन्दुस्तान' आदि प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकन में रचनन के प्रकाशन होत रहे ।

आकाशवाणी पटना, इलाहाबाद, वाराणसी आ गोरखपुर से काव्य, वार्ता आ नाटक के प्रसारण होते रहल ।

अइसन वेसुधजी मुए के प्रायः एक बरिस पहिले अकस्मात् आँख का भयङ्कर रोग से पीड़ित हो गइनीं। भोजपुरी संसार में ओही घरी दुख के बादर मँड़राये लागल । एही रोग के दवा करावे खातिर अपने वाराणसी में जाके रहे लगनीं । २४ जुलाई, १९८१ के अकस्मात् दिल के दौरा पड़ल आ वेसुधजी हमेशा खातिर शिव-लोक में आसन जमा लिहनीं ।

अब त वेसुधजी का अभाव में हमेशा सोचि-सोचि रोए के बा आ रो-रो सोचे के बा ।

